“ ”

आखिरकार मुक्त/ आखिरकार अब हैं आज़ाद

सडबरी वैली स्कूल

डेनियल ग्रीनबर्ग

अँग्रेज़ी से अनुवादः पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

1862

स्कूली सीखने में अहस्तक्षेप से क्या तात्पर्य है?.... इसका मतलब है। बच्चों को पूरी आज़ादी देना ताकि वे स्वयं को वह सब सिखा सकें जो उनकी ज़रूरतों को पूरा करती हो और जिसे वह चाहते हों, यह भी केवल उस हद तक जितनी उनकी ज़रूरत और इच्छा हो, और इसका मतलब है जिसकी उन्हें ज़रूरत न हो या जो वे न चाहते हों, उसे सीखने पर उन्हें बाध्य न करना....

“मुझे शंका है कि [जिस प्रकार के स्कूल की मैं चर्चा कर रहा हूँ] वैसे स्कूल आगामी शताब्दी तक आम हो सकेंगे। यह सम्भव नहीं लगता... कि विद्यार्थियों की ***चुयन*** की आज़ादी पर आधारित स्कूल आज से सौ सालों बाद भी स्थापित हो सकेंगे।

काउंट लिओ टॉलस्टॉय “एज्यूकेशन एण्ड कल्चर” (शिक्षा व संस्कृति)

1961

“यह निगम इस उद्देश्य से गठित हुआ है ताकि एक ऐसा स्कूल स्थापित व कायम किया जा सके जिसमें उस समुदाय के सदस्यों को शिक्षा दी जा सके जो इस सिद्धान्त पर बना हो कि श्रेष्ठ सीखा तब ही सबसे अच्छी तरह जा सकता है जब उसे प्रेरणा, आत्म-नियमन तथा आत्मालोचना से ***पोसा*** जाए....”

सडबरी वैली स्कूल के उप-नियम।

अनुक्रम

परिचय

प्राक्कथन

किसी को आवेदन करने की आवश्यकता नहीं है

भाग 1 : ल “अर्निन” (सीखना)

1. और “रिदमैटिक” (गणित)

2. कक्षाएँ

3. आग्रह/***स्थैर्य***

4. जादूगर की प्रशिक्षु

5. शेष “आर”

6. मछली मारना

“ ”

[

7. नोट की नौका

8. रसायनशात्र

9. हम शिकार को जाएँगे

10. विशेष खर्चे

11. नए शौक तथा फैशन

12. स्कूल के ***निगम***

13. विवेक खाता

14. खाना पकाना

15. आयु ***संमिश्रण***

16. खेल

17. पुस्तकालय

18. समय काफी है

19. सीखना

20. मूल्यांकन

21. प्रकाश छड़ी ***प्रज्जवलन छड़ी??***

भाग 2 :

22. स्कूल की बैठक

23. खतरे

24. सम्मान प्रणाली

25. खेल-कूद परिदृश्य

26. कैम्पिंग

27. ***कमीटियाँ*** तथा क्लर्क

28. साफ-सफाई

29. चमत्कारिक वजट

30. शिक्षक समूह

31. नन्हे-मुन्ने बच्चे

32. “अच्छे बच्चे” और “परेशान करने वाले”

33. माता-पिता

34. ***आगंतुक***

“ ”

[

35. सबके लिए आज़ादी और न्याय के साथ
36. विषय का मर्म
उपसंहार
प्रमाण

परिचय

हरेक शिक्षक उन बुनियादी सवालों से जूझा हैं जो इस पेशे के प्रारम्भिक काल से ही लगातार बने रहे ~~है~~ हैं: पढ़ाने या सीखने का सबसे बढ़िया तरीका क्या ~~हैं~~ है? बच्चों को कौन से विषय सीखने चाहिए? बच्चे कितने ~~म्ि~~ ज़िम्मेदार होते हैं? वे जो कुछ करते हैं उसे तय करने में उनकी कितनी चलनी चाहिए? किसी लोकतांत्रिक समाज में स्कूल किस तरह चलाए जाने चाहिए? हम में ~~मे~~से अधिकांश के लिए ये सवाल सैद्धान्तिक ही रह जाते हैं। एक शिक्षा प्रणाली हमें विरासत में मिलती है और हम अपने दिवास्वप्नों की वास्तविक दुनिया में साकार नहीं कर पाते। हमारे पास जो कुछ मौजूद है उसके श्रेष्ठमत को बचाए रखना हमारे लिए ज़रूरी हमें नहीं करनी चाहिए।

यदा-कदा लोगों का एक समूह, जो परम्परा से संकुचित नहीं होता ये प्रश्न पूछता है- और “गर्म घर” की परिस्थिति में उनके नए क्रान्तिकारी उत्तर प्रस्तावित करता है, जिन्हें सब देख सकें। ऐसे प्रयोग स्वीकृत ~~म्तो~~ मतों -नियमों को ताज़ी दृष्टि से देखने और नए नियमों को लागू कर जाँचने में खास तौर से कीमती सिद्ध होते हैं।

1968 में फैमिंग्हम, मैसाच्युसेट्स में एक अनोखा प्रायोगिक स्कूल स्थापित किया गया। सडबरी वैली स्कूल जो 4 से 19 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए खुला है, ने कई बेहद नवाचारी तौर तरीकों को प्रारम्भ किया। उसके काम को व्यापक ख्याति मिली और यह ऐसा पहला स्कूल बना जिसे पूर्ण ***प्रत्यायन*** मिल पाया हो।

सडबरी वैली का सर्वाधिक रोचक पक्ष है सीखने के प्रति उसका नज़रिया। स्कूल उस पूर्ण मान्यता से प्रारम्भ करता है जिसकी घोषणा अरस्तू ने दो हज़ार से भी अधिक वर्ष पूर्व अपनी प्रसिद्ध रचना *मैटाफिज़िक्स* की शुरुआत में की थी। ***“इन्सान नैसर्गिक रूप से जिज्ञासा होता है।”*** इसका निहितार्थ है कि लोग निरन्तर, जीवन के विभिन्न भाग के रूप में, सीखते हैं। इसका अर्थ यह भी है कि बच्चे अपने स्वाभाविक रूझानों का अनुपालन करते हुए पूरे दिन, और प्रत्येक दिन अपने-समय के साथ जैसा वे करना चाहते हैं, करते हुए सीखेंगे। उनकी उम्र चाहे कुछ भी हो, जिस पल से छात्र स्कूल में प्रवेश करते हैं, वे अपने भरोसे हैं, अपनी ज़िम्मेदारी स्वयं उठाने और अपने जीवन की दिशा निर्धारित करने वाले तमाम कठिन निर्णय लेने पर बाध्य हैं। स्कूल, अपने शिक्षक समूह, भौतिक स्वरूप, उपकरण तथा पुस्तकालय के साथ एक संसाधन हैं, जो चाहने-माँगने पर उपलब्ध होता है, पर ऐसा न किया जाए तो निष्क्रिय रहता हैं। यहाँ जो विचार है वह सरल है : अपनी अन्तर्निहित जिज्ञासा, जो मानव स्वभाव का सार-तत्व है, संचालित हो, बच्चे अपने इर्द-गिर्द की दुनिया की छानबीन करने के लिए भारी प्रयास करेंगे।

दरअसल क्या होता है? हरेक बुनियादी चीज़ें सीखता है पर अपनी गति से, अपने समय से और ~~अपनी~~ अपने ही तरीके से। कुछ बच्चे पाँच साल की उम्र में पढ़ना सीखते हैं, तो दूसरे दस की उम्र में। कुछ शिक्षकों या दूसरे छात्रों से सबसे अच्छी तरह सीख पाते हैं। तो दूसरे अपने आप ही ***सबसे अच्छी तरह सीखते हैं। किसी भी एक दिन*** सभी आयु के बच्चों को साथ-साथ सीखते, बातचीत करते, खेलते - बढ़ते देखा जा सकता ~~हैं~~ है। जैसे-जैसे वे बड़े होते हैं उनमें अपनी अस्मिता ~~की~~ और भविष्य के निश्चित लक्ष्यों की एक मज़बूत भावना विकसित होती जाती ~~हैं~~ है। जब वे स्कूल छोड़कर जाते हैं वे विविध प्रकार की गतिविधियों से जुड़ते हैं - देश भर में फैल विभिन्न पेशे, धन्धे, व्यापार, कॉलेजों में पहुँचते हैं यह सब उस शैक्षिक परिदृश्य में होता ~~हैं~~ है, जहाँ छात्र ही न्यायाधीश के रूप में उन्हें क्या करना हैं और कैसे प्रगति करनी है, तय करते हैं।

“ ”

तमाम सम्मोहक नवाचारों में एक है व्यवस्थात्मक ढाँचा। स्कूल एक विशुद्ध लोकतंत्र के रूप में, स्कूल बैठक द्वारा शासित होता है, जिसमें प्रत्येक छात्र तथा शिक्षक सदस्य के पास एक मत (वोट) होता ~~हैं~~ है। स्कूल का हरेक पक्ष, बिना किसी अपवाद के, इसी प्रकार संचालित किया जाता हैः नियम, बजट, प्रशासन, नौकरी देना और बर्खास्त करना, तथा अनुशासन। नतीजा है एक सुसंचालित संस्था जिसमें हरेक का ***दाव*** हो, ऐसा भौतिक संयंत्र जो तोड़फोड़ तथा दीवार पर लिखी इबारतों से मुक्त हो, तथा खुलेपन व परस्पर विश्वास का ऐसा वातावरण जो किसी आकार के स्कूल में आज अनुपलब्ध हो। इस सबके साथ यह स्कूल किसी भी सरकारी या फाउंडेशन सहायता के बिना चलता ~~हैं~~ है। ऐसे शुल्क पर जिसकी राशि सार्वजानिक स्कूलों में प्रति छात्र व्यय से लगभग आधी हो और स्वतंत्र निजी स्कूलों से तो कहीं कम।

इस स्कूल के बारे में समझाने का सबसे आसान तरीका शायद यह समझाना हो कि हम किसी शैक्षणिक संस्था में क्या देखना चाहते थे और उसे हासिल करने के लिए हमने क्या किया। दरअसल हम कई भिन्न-भिन्न चीज़ें चाहते थे और हमने पाया कि वे सभी एक-दूसरे से मिलकर एक ही, समग्र सम्पूर्ण बनाती हैं।

जहाँ तक सीखने और सिखाने का सवाल था, हम यह चाहते थे कि लोग केवल वह सीख सकें। जिसे सीखने को वे आतुर हों - जिसे सीखने की वे स्वयं पहल करें, जिसे सीखने पर वे आमादा हों और जिसके लिए वे मेहनत करने को तैयार हों। हम चाहते थे कि वे अपनी सामग्रियों, और पुस्तकों, और शिक्षकों को चुनने को पूरी तरह स्वतंत्र हों। हमें लगा था कि जीवन में वही सीखना महत्व~~पूर्ण~~ रखता है जिसके लिए सीखने वाला स्वयं को उस विषय में बिना किसी के उकसाए, बिना ~~धूस~~ घूस या दबाव के, झोंक देता ~~हैं~~ है। और इस बात पर हम आश्वस्त थे कि आतुर, संकल्पित व आग्रही छात्रों के साथ काम करने वाले शिक्षक असामान्य सन्तुष्टि अनुभव करेंगे। दरअसल हमने सोचा था कि ऐसा वातावरण विद्यार्थियों और शिक्षकों, दोनों के लिए स्वर्ग ही होगा।

अपने प्रति ईमानदार बने रहने के लिए हमें पाठचर्चा या स्कूल-प्रेरित कार्यक्रम की किसी भी धारणा से दूर होना था। **हमें समस्त प्रेरणा व ऊर्जा छात्रों से आने देनी थी** और स्कूल को उसी की प्रतिक्रिया करने को कटिबद्ध रखना था। हरेक व्यक्ति की गतिविधियों की पूरी ज़िम्मेदारी उसी व्यक्ति के पास ही होनी थी, ना कि किसी ऐसे पर जो सत्ता के पद पर हो। यही कारण था कि हमारे पास किसी भी स्तर के लिए आवश्यक अध्ययन, कभी भी नहीं रहा है ~~हैं~~। हमने यह समझा कि स्कूल में मदद उपलब्ध है, उससे हरेक स्वयं अपने लिए यह ज्ञान लेगा कि जीवन में वह जो पाना चाहता है उसके लिए क्या जानना आवश्यक है और क्या नहीं।

यह उन चारित्रिक गुणों के भी काफी निकट ***थी*** जिन्हें हम पोषित करना चाहते थे। किसी भी अन्य के बदले हम चाहते थे कि लोग ज़िम्मेदारी के समूचे अर्थ का अनुभव करें। हम चाहते थे कि ~~वें~~ वे यह बखूबी जान-लें कि ज़िम्मेदार व्यक्ति होना दरअसल क्या होता है ~~हैं~~। केवल किताबों, या भाषणों, या उपदेशों से नहीं, बल्कि रोज़मर्रा के अनुभवों से।

व्यक्तिगत दायित्व का निहितार्थ सभी लोगों में एक बुनियादी समानता स्वीकारना भी होता है ~~हैं~~। ऐसे में अगर किसी सत्ता **का अस्तित्व हो, तो वह सभी पक्षों की मुक्त सहमति से ही** सम्भव है ~~हैं~~। बेशक यह नई बात नहीं है, हमारा देश भी इसी सिद्धान्त पर गढ़ा गया था। हमारे लिए तो यह सिद्धान्त रोज़मर्रा के कामकाज ~~के~~ को दिशा देने वाला था।

एक ज़िम्मेदार व्यक्ति की परिकल्पना में कई अवधारणाएँ जुड़ी होती हैं। और ये सभी अवधारणाएँ एक मुक्त व स्वतंत्र व्यक्ति बनने की कला सीखने से जुड़ी होती हैं। हमारे मत में जिस स्कूल की परिकल्पना थी, उसकी जड़ में यही विचार था। प्रत्येक की सम्पूर्ण व्यक्तिगत ज़िम्मेदारी और जबावदेही से कम से हमें सन्तुष्टि नहीं होने वाली थी, फिर चाहे उसकी ***नहीं*** या ज्ञान, या उपलब्धि चाहे कुछ भी क्यों न हो। हम जानते थे कि इस प्रकार लोग गलतियाँ करेंगे पर उन्हें यह एहसास भी होगा कि उनके द्वारा की गई गलतियाँ उनकी अपनी हैं। अतः उससे वे सीखें यह सम्भावना भी अधिक होगी। हमें लगता था कि स्वस्थ लोग अपनी असफलताओं से भी फायदा उठाने के उतने ही तरीके तलाश लेंगे जितने अपनी सफलताओं **से।** हमारा विश्वास था कि लोग जो चाहें उसे ~~अ~~ आज़माने देना अच्छा है, चाहे उन्हें सफल होने का भरोसा हो या न हो, ताकि उनकी अनपेक्षित चुनौतियों का सामना करने की, या अनपेक्षित अवसरों को थाम लेने की तैयारी रहे।

हम जिन चारित्रिक गुणों को पोषित करना चाहते थे, वे स्कूल के वातावरण में व्याप्त हों, ऐसी हमारी उम्मीद भी थी।

“ ”

[

हम सबसे अधिक तो एक ऐसा वातावरण बनाना चाहते थे जो खुला, ईमानदार, भरोसा जगाने वाला व भय मुक्त हो। हमारा लक्ष्य था एक ऐसी शाला जहाँ कोई भी भयभीत न हो, कम से कम हमने जो कुछ किया उस कारण तो न हो।

शक्ति और सत्ता के भय को हम स्कूल से उन्मूलन करना चाहते थे। हमारा सरोकार लोगों के पास सत्ता है या नहीं, से नहीं था। सत्ता अपने आप में अच्छी या बुरी, दोनों ही ~~तरह~~ तरह की हो सकती है, यह कई बातों पर निर्भर होती हैं। कुछ परिस्थितियों में ऐसे लोगों की आवश्यकता भी होती है जो सत्तावान हों – जैसे जब कोई प्रशिक्षु सीखने जाता हैं, या किसी धन्धे-व्यवसाय में।

मुख्य प्रश्न यह है कि लोग अपनी सत्ता किस प्रकार पाते हैं, और जब वे उसे पा लेते हैं तो उसे किस प्रकार नियंत्रित किया जाता है ~~हैं~~। आप तब सत्ता के पद पर आसीन लोगों से नहीं डरते, अगर आप यह समझते हों कि वे उस पद पर क्यों हैं, अगर वहाँ पहुँचने में आपका हाथ रहा हो, अगर आप उस में जो कुछ भी करते हों उस पर नज़र रखते हों। आपको जिससे वास्तव में भय लगता है वह है निरँकुश सत्ता, ऐसी सत्ता जो आपकी भागीदारी को बाहर करती हो, ऐसी सत्ता जिस पर आपका कोई नियंत्रण न हो। हम संकल्पित थे कि स्कूल के किसी भी व्यक्ति, चाहे वह विद्यार्थी, या शिक्षक या अभिभावक या मेहमान ही क्यों न हो, स्कूल से सम्बन्धित किसी व्यक्ति ~~की~~ का सत्ता से भयभीत होने का कोई कारण न हो। **किसी भी दूसरी बात से अधिक, यह बात ही किसी को** दूसरे से सीधे आँखों में आँख डालने की हिम्मत देगी फिर चाहे उसकी आयु या लिंग, या पद, या ज्ञान, या पृष्ठभूमि कुछ भी क्यों न हो।

जहाँ तक हमारा सवाल था, अपने मामलों की व्यवस्था को लोकतांत्रिक सरकार के रूप में संचालित करना हमें श्रेष्ठतम तरीका लगता था। यही सबके स्वतंत्र रहने की सर्वाधिक सम्भावना उपलब्ध करवाती है ~~हैं~~। और साथ ही जिन मसलों पर सामूहिक रूप से कदम उठाने की दरकार पड़े, वह सबको निर्णय प्रक्रिया में पूरी भागीदारी भी करने देती है ~~हैं~~। हमें लगा कि न्यू इंग्लैंड की नगर बैठकों में, पिछले तीन सौ सालों से भी अधिक जिस तरह का लोकतंत्र अभ्यास में रहा है सरकार के उस उम्दा स्वरूप से बेहतर, कुछ दूसरा नहीं हो सकता। जिस तरह के स्कूल की परिकल्पना हमारे मन में थी वह इसी नगर बैठक के मॉडल पर ही आधारित होगी। कोई भी बाहर नहीं छूटेगा।

हमने सोचा कि जिस देश में सभी प्रकार की सरकारें व्यवस्थाएँ लोकतांत्रिक हों, एक स्कूल को लोकतांत्रिक विधि से संचालित करना अच्छा विचार है ~~हैं~~। छोटे से छोटे कस्बे से लेकर संघीय स्तर तक, हमारी सभी संस्थाएँ किसी न किसी रूप में लोकतांत्रिक विधि से ही नियंत्रित होती हैं। हमने खुद से पूछा कि फिर स्कूल भी इसी तरह चलाए क्यों नहीं जा सकते? जितना अधिक हमने इस विषय पर सोचा, उतना अधिक हमें लगने लगा कि उन्हें भी ठीक ऐसे ही संचालित किया जाना चाहिए। एक लोकतांत्रिक स्कूल में समुदाय के वयस्क सदस्य नागरिकता के ठीक उन्हीं मानकों को लागू कर सकते हैं, जो वे अपने बाहरी जीवन में करते हैं। और स्कूल के बच्चे उन सिद्धान्तों तथा अभ्यासों में पल सकते हैं जो लोकतांत्रिक जीवनशैली बनाते हैं। ऐसे में जब तक वे वयस्क बनेंगे ज़िम्मेदार सामुदायिक नागरिकता उनके लिए स्वाभाविक बन चुकी होगी, क्योंकि वे उसी के साथ लम्बा अरसा गुज़ार चुके होंगे।

जब हमने उस सबका जायजा लिया जो हम अपने स्कूल में चाहते थे, तो हमने पाया कि वह सब दरअसल एक ही मूल विचार के समान है, जिससे शेष सब स्वाभाविक रूप से निगमित होता है ~~हैं~~।

यह विचार एक ऐसे स्कूल का था जहाँ लोग अपने मामलातों का प्रबन्धन बिना किसी बाहरी हस्तक्षेप के करते हों, और जहाँ वे अपने साझे मसले - अर्थात् स्कूल का कामकाज - एक प्रकार की नगर बैठक के मार्फत् संचालित करते हों ~~हैं~~।

तो बात इतनी सरल थी, और उसमें सीखने का वह विचार भी निहित था, जिसे हम चाहते थे; उससे वे चारित्रिक गुण पुष्ट हो सकते थे जिन्हें हम उभारना चाहते थे, वह वातावरण था जिसकी ~~की~~ परिकल्पना हमने की थी; और जो ढाँचा हमें वाँछनीय लगता था वह भी इसमें मौजूद था।

1968 में स्कूल प्रारम्भ हुआ उसके पूर्व कई लोगों ने कहा कि हम कोरे सपने देखने वाले हैं, कि स्कूल की हमारी परिकल्पना यूरोपियन है। परन्तु अब यह सालों से अस्तित्व में हैं, सबकी नज़रों के मामने।

“ ”

[

सडबरी वैली में आना कैसा महसूस होता है ~~हैं~~? मुख्य भवन पत्थरों का है, जो सौ सालों से भी पूर्व स्थानीय ग्रैनाइट से निर्मित हैं। उसके इर्द-गिर्द दस एकड़ भूमि में लॉन, पेड़, पौधे व फूलों की झाड़ियाँ हैं। परिसर के एक छोर पर एक बड़ा खलिहान और अस्तबल का क्षेत्र है, जिसे स्कूल उपयोग के लिए बदल दिया गया है ~~हैं~~। दूसरे छोर पर पवन चक्की-ताल के सम्मुख ग्रेनाइट का एक पनचक्की-भवन है ~~हैं~~। यह मिट्टी और पत्थरों से बने बाँध के पास हैं, जिसके ऊपर एक पुराना ढका हुआ पुल हैं। परिसर के इर्द-गिर्द, जहाँ तक आँखों से दिखाई देता हैं। सैकड़ों एकड़ में पसरा स्ट्रेट पार्क तथा संरक्षित भूमि, खेत, जंगल, दलदल और उठती गिरती पहाड़ियाँ हैं। ये सभी साल को विभिन्न ऋतुओं के परिवर्तनशील रंगों और वनस्पति को प्रतिविंबिध करते हैं।

यह जगह किसी स्कूल सी दिखती या लगती ही नहीं हैं। मानक “स्कूल संकेतक” गायब हैं। यह घर जैसी ही ज़्यादा लगती है ~~हैं~~, जहाँ कई लोग, विविध गतिविधियों में व्यस्त नज़र आते हैं। वे संकल्पित, पर सहज लगते हैं। यहाँ का फर्नीचर, लोग, माहौल वैसा नहीं है जिसकी उम्मीद हो। आगंतुक अक्सर बौखलाते हैं, वह उन्हें नज़र ही नहीं आता।

यह पुस्तक ऐसा प्रयास है जिससे सभी को सडबरी वैली को “देखने” में मदद मिले। इसमें स्कूल के प्रारम्भिक बीस वर्षों के जीवन के व्यक्तिगत अनुभवों का खज़ाना है ~~हैं~~। यह पुस्तक शिक्षा दर्शन या अभ्यास की पोथी नहीं है, न ही स्कूल का औपचारिक इतिहास है ~~हैं~~। वरन् यह शिक्षा के इतिहास में एक अनूठे प्रयोग की मानवीय कथा है ~~हैं~~।

द सडबरी वैली स्कूल प्रेस

प्राक्कथन

आवेदन करने की किसी को आवश्यकता नहीं है ~~हैं~~।

मुलाकात करने का समय अनुपलब्ध है ~~हैं~~।

दिसम्बर माह तक जो कोई भी कैनैटिकट के मिडलटाउन में स्थित वेसलेयन विश्वविद्यालय में अध्ययन करने की ~~जो भी~~ आशा रखता था, कब का अपना आवेदन भेज चुका था और प्रवेश साक्षात्कार की व्यवस्था भी कर चुका था। आवेदन के लिए तो बहुत ही देर हो चुकी थी।

पर इसने लीसा को रोका नहीं। हर सुबह नौ बजे के कुछ देर वह फोन उठा वेसलेयन प्रवेश कार्यालय का नम्बर घुमाती। सुबह कोई सचिव उसका फोन लेती और कहती, “कोई खाली समय नहीं ~~हैं~~।” जल्दी ही ~~से~~ प्रवेश कार्यालय के सभी लोग उसकी आवाज़ और सतत् आग्रह से परिचित हो गए। वह उनसे गपशप करती, उन्हें मनाती, विनती करती। सप्ताह दर सप्ताह।

उसने समय रहते आवेदन क्यों नहीं किया, वे पूछते। उसने किया था, उसका जवाब रहता - पर वेसलेयन में नहीं। अन्यत्र किए गए आवेदन वह कब के पूरे कर चुकी थी। पर बस अभी भी उसकी एक सहेली और शिक्षक ने उसे कहा था कि उसे वेसलेयन ~~की~~ को भी देख लेना चाहिए, जो उसके लिए बिलकुल सही शाला सिद्ध होगी। वह परिसर देख आई थी, वहाँ उसने लोगों से बातचीत भी की थी, और उसका आवेदन चाहे कितनी भी देर से क्यों न पहुँचा हो, उसने तय कर लिया था कि वेसलेयन भी यह जान ले।

इसके लिए साक्षात्कार अत्यावश्यक था। प्रवेश देने से पूर्व उन्हें सीधे उसका मूल्यांकन करना था, उसकी आँखों में झाँक देखना था कि वह दरअसल क्या और कौन है ~~हैं~~। बेशक उसने वे सब आलेख और उत्तर छपे हुए प्रपत्र में लिखे थे। पर उसका आवेदन एक अर्थ में ***भयावह*** रूप से भिन्न था।

उसमें किसी प्रकार के ग्रेड, प्रतिलेख या लिखित मूल्यांकन नहीं थे। अपने इतने स्कूली वर्षों के लिए एक भी न था।

लीसा सडबरी वैली स्कूल में पढ़ी थी। उसने वहाँ कई चीज़ें सीखी थीं। पर एक बात जो उसने इस सबके अलावा सीखी

थी, वह थी अपने आप अपनी देखभाल करना।

आठवीं जनवरी। हमारे पास एक कैन्सलेशन हैं। क्या आप आगामी मंगलवार को सुबह नौ बजे आ सकती हैं? प्रवेश के डीन स्वयं आपसे मिलेगे। हर्षातिरेक। बेशक वह अगले मंगल को आ सकती है, किसी भी दिन, किसी भी समय आ सकती है ~~हैं~~।

वह वेसलयन कार्यालय में पहुँचती है। सब उसे देखने मुड़ते हैं। तो यह है वह लड़की जिसने कभी फोन करना बन्द नहीं किया, जिसने कभी हार न मानी। वे मुस्कुराते हैं, गर्मजोशी से उसका स्वागत करते हैं। डीन जानते हैं।

वह डीन के कार्यालय में पन्द्रह मिनट की भेंट के लिए घुसती है ~~हैं~~। दूसरे आवेदनकर्ता अपने-अपने समयानुसार मुलाकात करने के लिए इन्तज़ार कर रहे हैं। चौथाई घण्टा गुज़र जाता है ~~हैं~~। लीसा नहीं निकलती। आधा घण्टा। पौना घण्टा। वहाँ आखिर हो क्या रहा है ~~हैं~~? आखिरकार एक घण्टे बाद उसके ~~ससने~~ साथ डीन भी बाहर निकलते हैं, दोनों हँस रहे हैं। वे इन्तज़ार में बैठी लीसा की माता के पास जाते हैं, जहाँ डीन सिर्फ यह कहते हैं, “आशा करता हूँ कि लीसा यहाँ आना तय ~~करेंगी~~ करेगी। मुझे लगता है यह उसके लिए सही जगह है ~~हैं~~।”

आवेदन और साक्षात्कार कारगर सिद्ध होते हैं। बारह वर्ष का स्कूली शिक्षण जो सशक्त सारतत्व में बदला था, उसने वह हासिल कर लिया जिसे करने वह निकला था। उसे प्रवेश के लिए आमंत्रित किया जाता है ~~हैं~~। वह आमंत्रण स्वीकार लेती है ~~हैं~~।

सडबरी वैली का प्रत्येक स्नातक जिसने कॉलेज में प्रवेश लेने की इच्छा की उसके पास भी कुछ ऐसी ही कथा है ~~हैं~~। सभी को स्वीकार किया गया, अधिकांश को अपने प्रथम विकल्प वाले कॉलेज में। कई को आमंत्रित किया गया। किसी के भी पास किसी भी प्रकार की प्रतिलिपि, या मानक मूल्यांकन या अनुमोदन प्रपत्र नहीं थे।

उनके पास कुछ अधिक था। उनके पास उनकी आन्तरिक ताकत थी, अपना आत्मज्ञान था, अपना संकल्प था। और हर बार प्रत्येक कॉलेज कार्यालय में जहाँ उन्होंने आवेदन किया था, लोगों ने सोचा था। “यह भला कैसा स्कूल है ~~हैं~~ जहाँ से ऐसे लोग निकलते हैं? सडबरी वैली भला है क्या?”

यह पुस्तक एक ऐसे स्कूल की कहानी है, जो पहले के किसी भी स्कूल के सामान न हो। इसने कई स्थानों का श्रेष्ठतम लिया, पर उसका नतीजा बहुत भिन्न रहा। वह प्राचीन के साथ आधुनिक, दोनों ही था, और चिर रहस्यमय भी। यह अपरिष्कृत व्यक्तिवाद व्यक्तिगत आज़ादी तथा राजनीतिक लोकतंत्र के गर्मघर की एक झलक है - अमरीकी मूल्यों के गर्मघर की लालन-पालन न्यू इंग्लैंड के एक पुराने कस्बे में हो रहा है ~~हैं~~।

भाग 1

1. लर्निंग (सीखना)

मेरे सामने ***और*** रिदमैटिक दर्जन भर लड़के और लड़कियाँ बैठे थे, उम्र थी नौ से बारह साल की। सप्ताह भर पहले उन्होंने मुझसे कहा था कि मैं उन्हें गणित सिखाऊँ। वे जोड़, बाकी, गुणा, भाग और शेष सब सीखना चाहते थे।

“तुम सच में यह सब करना नहीं चाहते हो,” मैंने तब कहा, जब वे पहले मेरे पास आए थे।

“चाहते हैं, बेशक हम चाहते हैं,” उनका उत्तर था।

“ना, सच में नहीं चाहते, मैं बात पर अड़ा रहा। तुम्हारे मोहल्ले ~~मुझसे~~ के दोस्त, तुम्हारे माता-पिता, तुम्हारे सगे-सम्बन्धी शायद चाहते हैं कि तुम सीखो, पर तुम लोग खुद तो शायद खेलना या कुछ और करना चाहोगे।”

“हमें पता है कि हमें क्या चाहिए और हम गणित सीखना चाहते हैं। हमें सिखाइए और हम सिद्ध कर देंगे। हम सब गृहकार्य करेंगे और भरसक मेहनत करेंगे।”

“ ”

[

मुझे झुकना पड़ा, पर मैं शंकालु था। मैं जानता था कि नियमित स्कूलों में गणित सिखाने में छह साल लगते हैं। और मुझे भरोसा था कि उनकी रुचि चन्द महीनों में ढीली पड़ जाएगी। पर मेरे पास विकल्प नहीं था। उन्होंने खूब ज़ोर डाला था, ~~ओप~~ और मैं घिर चुका था। पर मुझे अचरज होने वाला था।

मेरी सबसे बड़ी समस्या थी एक पाठ्यपुस्तक जिसका मैं मार्गदर्शिका के रूप में उपयोग कर पाता। मैं “न्यू मैथ” को विकसित करने से जुड़ा रहा था और मुझे उससे नफरत हो चुकी थी। उस वक्त जब हम ~~क्म~~ उस पर काम कर रहे थे कैनेडी उत्तर स्पूतनिक युग के युवा अकादमिक - हमारी खास ~~खस~~ शंकाएँ नहीं थीं। हम अमूर्त तार्किकता, सुनिश्चित सिद्धान्त, संख्या सिद्धान्त और उन तमाम विलक्षण खेलों के सौन्दर्य से ओतप्रोत थे जिन्हें ***गणितक्ष/ गणितज्ञ*** हज़ारों सालों से खेलते रहे हैं। सोचता हूँ कि अगर उस वक्त हम किसानों के लिए कोई कृषि पाठ्यक्रम गढ़ रहे होते तो हम जैव रसायन शास्त्र, अनुवांशिकी तथा सूक्ष्म जीवविज्ञान (माइक्रोबायॉलजी) से शुरुआत करते। यह दुनिया के भूखे लोगों का सौभाग्य ही था, कि हमसे ऐसा करने को कहा नहीं गया।

मुझे ‘नव गणित’ के आडम्बर और दुर्ज्ञेयता से नफरत हो गई थी। सौ में से एक शिक्षक और हज़ार में एक छात्र को यह पता न था कि वह सब किस बारे में था। लोगों को गणित की दरकार गणना के लिए होती है, वे यह जानना चाहते हैं कि गणित के उपकरणों का कैसे उपयोग किया जाए। और यही मेरे छात्र जानना चाहते थे।

मुझे हमारे पुस्तकालय में एक किताब मिली जो इस काम के लिए बिलकुल सटीक थी। यह 1898 में लिखी एक गणित प्रवेशिका थी। छोटी और मोटी। उसमें हजारों अभ्यासों की भरमार थी, जिनसे नन्हें मस्तिष्कों को बुनियादी काम सही और तेज़ी से करने के लिए प्रशिक्षत किया जा सके।

कक्षा प्रारम्भ हुई - सही समय पर। यह शर्त का ही हिस्सा था। “तुम लोग कह रहे हो कि तुम गम्भीर हो?” मैंने उन्हें चुनौती देते हुए पूछा था। “तो तुम लोग सही समय पर कक्षा में होगे - ठीक ग्यारह बजे, हर मंगल और गुरुवार को। अगर पाँच मिनट देर से आए, तो कोई कक्षा नहीं होगी। और अगर दो कक्षाओं में गायब रहे - तो आगे पढ़ाना बन्द।” “बात पक्की है,” उन्होंने कहा था, उनकी आँखों में खुशी की झलक थी।

साधारण जोड़ में दो कक्षाओं की ज़रूरत पड़ी। उन्होंने सब कुछ जोड़ना सीखा - लम्बे, संकरे स्तम्भ, छोटे चौड़े स्तम्भ और लम्बे व चौड़े स्तम्भ। उन्होंने दर्जनों अभ्यास करे। घटाना सीखने में दो और कक्षाएँ लगीं। शायद एक से ही काम चल जाता, पर ‘उधार लेना’ सिखाने में कुछ अतिरिक्त स्पष्टीकरण की ज़रूरत पड़ी।

तब हम गुणा और पहाड़ों की ओर बढ़े। सबको पहाड़े रटने थे। हरेक से कक्षा में बार-बार पहाड़े पूछे गए। तब उसके नियम। और तब अभ्यास।

सभी को नशा-सा था। वे बढ़ रहे थे, सभी तकनीकों और कलन विधियों (ऐलॉगरिद्मस्) पर महारत हासिल करते उन्हें एहसास हो रहा था कि सारी सामग्री उनकी हड्डियों में घुसे जा रही है ~~हैं~~। सैकड़ों-सैकड़ों अभ्यास, कक्षा में प्रश्न पहेलियाँ मौखिक परीक्षाएँ, उनके ***खोपड़ों*** पर धमधमाती सामग्री।

वे फिर भी आते रहे, वे सभी। जब ज़रूरत पड़ती तो वे एक-दूसरे की मदद करते, ताकि कक्षा की रफ्तार बनी रहे। बारह साल वाले और नौ साल शेर और मेमने, शान्ति से सामंजस्यपूर्ण सहकार में बैठते - कोई छेड़छाड़ नहीं, कोई शर्मिन्दगी नहीं।

भाग- दीर्घ विभाजन। भिन्न। दशमलव। प्रतिशत। वर्गमूल। वे ठीक ग्यारह बजे आते, आधे घण्टे रुकते और गृहकार्य के साथ चले जाते। वे अगली बार अपना ~~ग्रह~~ गृहकार्य पूरा करने आते। वे सभी।

बीस सप्ताह बाद, बीस सम्पर्क घण्टों के बाद, उन्होंने सब कुछ कर लिया था। छह सालों के बराबर काम। हरेक पूरी सामग्री को पूरी तरह जान चुका था।

हमने कक्षा की समाप्ति ज़ोरदार पार्टी से की। यह न तो पहली, न ही अन्तिम बार था कि मैं हमारे चहेते सिद्धान्तों की सफलता पर चकित हुआ। वे यहाँ कारगर थीं।

“ ”

[

जो हुआ शायद उसकी तैयारी मुझमें होनी चाहिए थी, क्योंकि मुझे तो वह चमत्कार सी ही लगा था। सब खत्म होने के सप्ताह भर बाद मैंने एलन ब व्हाइल से बात की। एलन सालों से सार्वजानिक स्कूलों में प्रारम्भिक गणित का विशेषज्ञ रहा है और वह ताज़ी व श्रेष्ठतम शिक्षण विधियों को जानता है हैं।

मैंने उसे अपनी कक्षा की कहानी सुनाई।

उसे आश्चर्य नहीं हुआ।

“क्यों नहीं?” मैं उसकी प्रतिक्रिया से दंग था। मैं तो अपने “डर्टी डज़न” की गति और उनकी सावधानी से अब तक चकराया हुआ था।

“इसलिए, क्योंकि सभी जानते हैं,” उसने उत्तर दिया, “कि विषयवस्तु अपने आप में कठिन नहीं है हैं। जो कठिन है, वह बल्कि लगभग असम्भव है, वह है हैं उन बच्चों के खोपड़ों में उसे घुसाना जो इसके प्रत्येक कदम से घृणा करते हैं। इसमें सफल होने की क्षीण सम्भावना का एकमात्र तरीका है हर दिन, सालों साल तक थोड़ा-थोड़ा हथौड़ा चलाते जाना। और तब भी यह कारगर नहीं होता। छठी कक्षा के अधिकतर छात्र गणित-असाक्षर होते हैं। मुझे ऐसा बच्चा दो जो सीखना चाहता है हैं - बीस घण्टे, कामोबेश सही लगता है।”

शायद बात सच है। उसके बाद से इससे अधिक समय कभी नहीं लगा।

कक्षाएँ - 2

हमें शब्दों के बारे में सावधानी बरतनी पड़ती है हैं। यह चमत्कार ही है हैं कि उनका अर्थ किसी भी दो लोगों के लिए समान होता है हैं। अक्सर ऐसा नहीं होता। ‘प्रेम’, ‘शान्ति’, ‘विश्वास’, ‘लोकतंत्र’, जैसे शब्द - प्रत्येक इन शब्दों में अपने जीवन भर का अनुभव, एक विश्वदृष्टि जोड़ता है हैं। और हम जानते ही हैं कि वे विरले ही किसी दूसरे के समान होते हैं।

“कक्षा” शब्द को ही लें। मुझे नहीं पता कि जिन संस्कृतियों में स्कूल नहीं होते वहाँ इसका क्या मायना होता होगा। सम्भव है उनके पास यह शब्द ही नहीं हो। जो पाठक यह पढ़ रहे हैं है, उनके मन में यह शब्द कई बिम्ब जगाता है: एक कमरा जिसमें ‘शिक्षक’ और “छात्र” हों ह्ये, विद्यार्थी डेस्क पर बैठे हों और उस शिक्षक से “निर्देश” पा रहे हों, जो उनके सामने बैठा या खड़ा हो। साथ ही यह शब्द अन्य अर्थ भी सम्प्रेषित करता है: “कक्षा-घण्टा,” वह तयशुदा समय जिसमें कक्षा लगती है हैं: गृहकार्य; पाठ्यपुस्तक जो कक्षा के सबके लिए एक समान सुस्पष्ट विषयवस्तु है हैं।

और यह और भी सम्प्रेषित करता है: ऊब, कुंठा, अपमान, उपलब्धि, असफलता, स्पर्धा।

सडबरी वैली में इस शब्द का अर्थ बिलकुल भिन्न है हैं।

सडबरी वैली में एक कक्षा दो पक्षों के बीच एक व्यवस्था है हैं। इसकी शुरुआत किसी एक या कई लोगों द्वारा यह तय करने के साथ होती है कि वे कुछ खास सीखना चाहते हैं - जैसे बीजगणित, या फ्रेंच, या भौतिकशास्त्र या वर्तनी, या कविता। कई बार तो वे खुद ही यह तलाश लेते हैं कि यह सीखना कैसे किया जाए। वे कोई किताब, या कोई कम्प्यूटर प्रोग्राम ढूँढ निकालते हैं, या वे किसी दूसरे को करते देखते हैं। जब ऐसा होता है तो यह कक्षा नहीं होती। यह विशुद्ध सीखना ही है हैं।

पर ऐसे भी समय आते हैं जब उनसे अकेले यह नहीं बन पड़ता। वे मदद के लिए किसी को तलाशते हैं जो उन्हें ठीक वही देने को सहमत हो जाए जो वे चाहते हैं ताकि सीखना सम्भव हो सकें। जब उन्हें ऐसा कोई मिल जाता है तो वे एक सौदा तय करते हैं है: “हम यह और वह करेंगे, और तुम यह और वह करोगे - ठीक है हैं?” अगर दोनों पक्ष को बात ठीक लगे तो उसी क्षण एक कक्षा बन जाती है।

“ ”

जो लोग इस सौदे में पहल करते हैं वे ‘विद्यार्थी’ कहलाते हैं। अगर वे इसकी पहल नहीं करते तो कोई कक्षा नहीं होती। अधिकतर समय स्कूल के बच्चे खुद ही यह समझ लेते हैं कि उन्हें क्या सीखना है ~~हैं~~ और वह सब खुद ~~क~~ ब खुद कैसे सीखना ~~हैं~~। वे कक्षाओं का अधिक उपयोग नहीं करते।

जो व्यक्ति छात्रों के साथ सौदा करता है, वह ‘शिक्षक’ कहलाता है ~~हैं~~। शिक्षक स्कूल के दूसरे विद्यार्थी भी हो सकते हैं। अमूमन ये वे लोग होते हैं जिन्हें इस काम को करने के लिए नियुक्त किया गया हो।

सडबरी वैली में शिक्षकों को सौदों के लिए तैयार रहना पड़ता है ~~हैं~~, ऐसे सौदे जो छात्रों की ज़रूरतों को पूरा करते ~~से~~ हों। ***एक लाइन मिसिंग है।***

शिक्षकों के रूप में काम करना चाहते हैं। कई विस्तार से हमें बताते हैं कि बच्चों को “देने” के लिए उनके पास कितना कुछ है ~~हैं~~। ऐसे लोग स्कूल में खास अच्छा कर नहीं पाते। हमारे लिए ~~जो~~ महत्वपूर्ण वह है जो छात्र पाना चाहते हैं वह नहीं जो शिक्षक देना चाहते हैं। यह बातें कई पेशेवर शिक्षकों को समझ नहीं आती।

कक्षा ~~सौदें~~ सौदे की कई तरह की ~~शर्तें~~ शर्तें होती हैं ~~है~~: विषयवस्तु, समय, प्रत्येक पक्ष के दायित्व। उदाहरण के लिए, एक सौदा करने के लिए शिक्षक को किसी खास समय छात्रों से मिलने के लिए उपलब्ध होना पड़ता है ~~हैं~~। ये तयशुदा घण्टे हो सकते हैं ~~है~~: प्रत्येक मंगलवार सुबह 11 बजे आधे घण्टे। या वे लचीले भी हो सकते हैं ~~है~~: जब भी हमारे सवाल हों ~~से~~, हम सोमवार सुबह 10 बजे उनका समाधान करने के लिए मिलेंगे। अगर सवाल न हों, तो अगले सप्ताह के लिए टाल देंगे। कई बार सन्दर्भ बिन्दु देने के लिए कोई पुस्तक चुन ली जाती है ~~हैं~~। छात्रों के लिए भी सौदे की अपनी शर्तें भी होती हैं। जो उन्हें निभानी पड़ती हैं। उदाहरण के लिए, समय पर आने पर सहमत होना।

कक्षाएँ तब खत्म हो जाती हैं ~~है~~ जब किसी भी पक्ष को लगता है कि काफी हो गया है ~~हैं~~। अगर शिक्षक को लगने लगे कि उनसे बात बन नहीं पा रही, तो वे पीछे हट सकते हैं - और छात्रों को अगर फिर भी कक्षा जारी रखनी हो तो उन्हें ~~न~~ नया शिक्षक तलाशना पड़ता है ~~हैं~~। अगर छात्रों को लगे कि वे कक्षा को आगे जारी नहीं रखना चाहते, तो शिक्षक को उस तयशुदा वक्त में खुद को व्यस्त रखने का कोई दूसरा तरीका तलाशना पड़ता है ~~हैं~~।

स्कूल में एक दूसरी तरह की कक्षा भी समय-समय पर होती है ~~हैं~~। यह तब होता है जब लोगों को लगे कि उनके पास कहने को कुछ नया या अनोखा है ~~हैं~~। जो किताबों में मिल ही नहीं सकता, और उन्हें यह लगे कि दूसरों की भी इसमें रुचि हो सकती है ~~हैं~~। तब वे एक सूचना टाँगते हैं: “जिस किसी की रुचि फलाँ-फलाँ में हो वह मुझसे सेमिनार कक्ष में गुरुवार को 10.30 बजे मिल सकता है ~~हैं~~।” और तब वे इन्तज़ार करते हैं। अगर लोग आते हैं तो वे अपनी बात कहते हैं। अगर आते तो यही जीवन है ~~हैं~~। हो सकता है कि पहली मर्तबा लोग आ जाएँ, और अगर दूसरी बार हो तो वे न आना तय करें।

3.

लगन/आग्रह

शब्दों की समस्या फिर से है ~~हैं~~। मैंने जैसा वर्णन किया उससे सीखना, बिलकुल सहज, ढीला-ढाला और बिना मेहनत का काम लगता है ~~हैं~~। आसानी से आया, आसानी से जाने वाला। ***यादृच्छिक***। अव्यवस्थित।अनुशासनहीन। अक्सर लगता है कि काश यह सच होता।

जब पहले-पहल स्कूल खुला था तेरह वर्षीय रिचर्ड का नामांकन हुआ और उसने खुद को जल्दी ही शास्त्रीय संगीत ~~संग~~ और तुरही में डूबा ~~डूब~~ पाया। रिचर्ड को जल्दी ही लगा कि उसने अपने जीवन की रुचि ***हासिल कर ली*** है। शिक्षक समूह के ***ट्रॉमबोनवादक*** जान की मदद से रिचर्ड ने खुद को अध्ययन में झोंक दिया।

रिचर्ड प्रतिदिन चार घण्टे तुरही का अभ्यास करता। हमें विश्वास ही नहीं होता था। हम दूसरी गतिविधियाँ सुझाते, पर सब सुझाव नाकाम रहे। रिचर्ड जो कुछ भी करता और स्कूल में काफी कुछ करता था - वह हमेशा अभ्यास के लिए चार

“ ”

घण्टे ज़रूर निकालता।

वह बॉस्टन से आता था - जो एक ओर का सवा घण्टे का रास्ता था और तब फ्रैमिंग्हैम बस अड्डे से पैदल आधे घण्टे चलता। पर मुहावरे के डाकिए की तरह वह ‘बरसात ~~ब.....~~ धूप, अंधड़ या हिमवर्षा’ के बावजूद स्कूल और ***कुछ शब्द मिसिंग हैं*** पहुँचता। जल्दी ही तालाब के किनारे स्थित पुराने चक्की भवन के गुण उसे मालूम पड़ गए। ग्रैनाइट से निर्मित, स्लेट से बनी छत वाला यह ठौर परिसर के सुदूर कोने में था। वह पुरानी उपेक्षित इमारत अचानक हमारी नज़रों में सुन्दर बन गई। और रिचर्ड की नज़रों में भी। उसने जल्दी ही उसे एक संगीत कक्ष बना डाला, जहाँ रिचर्ड जी भरकर रियाज़ करता। वह रियाज़ करता था।

प्रतिदिन चार या उससे अधिक घण्टों तक, चार वर्षों तक स्कूल से स्नातक बनने के और एक कंज़र्वेटरी में आगे अध्ययन करने के बाद रिचर्ड एक प्रमुख सिम्फनी वाद्यवृन्द में प्रथम हॉर्न वादक बना।

रिचर्ड के पदचिह्नों पर जल्दी ही फ्रेड चला, जिसको ड्रम्स (ढोल) से प्यार था। सुबह को ड्रम्स, दोपहर को ड्रम्स और रात को भी। आपातकालीन व्यवस्था ज़रूरी बन गई। हमने उसके लिए भूतल में एक ढोल वादन कक्ष बनाया और उसे स्कूल की चाभी भी दे दी ताकि वह ~~व~~ सुबह जल्दी या रात देर से रियाज़ कर सके।

पर हमने पाया कि भूतल का कक्ष भवन के शेष हिस्से से जितना हमने सोचा उतना कटा ~~कस~~ भी नहीं था। ऐसा लगता कि हम सब किसी जंगल गाँव के पास रह रहे हैं, जहाँ पृष्ठभूमि में लगातार ढोल-नगाड़ों की ढमढम सुनाई देती हो।

दो वर्ष बाद, अठारह साल की आयु में फ्रेड स्कूल से निकला। हम उसे प्यार करते थे पर हममें से कई ने राहत की साँस ले उसे खुदाहाफिज़ कहा।

केवल संगीत, ही हम सबके अंतस में पैठे ढीठ आग्रह को नहीं उभारता। प्रत्येक बच्चा जल्दी ही अपने कोई एक, या दो या और ~~ओर~~ अधिक क्षेत्र ढूँढ ~~लूंढ~~ लेता है ~~हैं~~, जिसके पीछे वह ढिठाई से लग जाता है ~~हैं~~।

अक्सर तो उस विषयवस्तु या सामग्री में भी उसे लुत्फ नहीं आता। साल दर साल, बड़े छात्र जो कॉलेज में प्रवेश लेने की ठान लेते हैं, **स्वयं को सैट परीक्षाओं की तैयारी में हाँकते हैं।** सैट, वह कुख्यात “प्रतिभा” परीक्षा बच्चों की सैट परीक्षाएँ दे पाने की क्षमता का आकलन करती है - और सारे के सारे कॉलेज अपने कठिन प्रवेश निर्णय में सहायता पाने के लिए जिन पर निर्भर होते हैं। अमूमन बच्चे किसी वयस्क को ढूँढ लेते हैं ताकि मुश्किलातों को पार कर सकें। पर काम उनका अपना ही होता है ~~हैं~~। मोटी-मोटी समीक्षा पुस्तकें एक से दूसरे कमरे में ढोई ~~ढोई~~ जाती हैं, उन्हें पढ़ा जाता है ~~हैं~~, पन्ने दर पन्ने उन पर काम किया जाता है ~~हैं~~। इसमें शुरुआत से आखिर तक विरले ही चार से पाँच महीने लगते हैं, हालाँकि उनमें से कई पहली बार ही उस सामग्री को देख रहे होते हैं।

ऐसे लेखक भी हैं जो प्रतिदिन घण्टों लिखते हैं। चित्रकार जो चित्र बनाते हैं, कुम्हार जो मृदभाण्ड बनाते हैं, रसोइए हैं जो पकाते हैं और खिलाड़ी हैं जो खेलते हैं।

ऐसे भी छात्र हैं जिनकी साधारण राज़मर्रा की रुचियाँ होती हैं। और ऐसे भी जिनकी रुचि विलक्षण होती है ~~हैं~~।

ल्यूक मृतक संस्कार व्यवस्थापक बनना चाहता था। एक पन्द्रह साल के लड़के लिए यह इच्छा सामान्य बात नहीं थी। पर उसके पास कारण थे। अपने मन की आँखों में वह अपना मृतक संस्कार गृह देख पाता था, जहाँ वह समुदाय की ज़रूरतों की पूर्ति करता हो और शोक संतप्त सम्बन्धियों को दिलासा बँधाता है।

ल्यूक ने पूरे जोश से खुद को अध्ययन में झोंका। विज्ञान, रसायन शास्त्र, जीव विज्ञान, पशु शास्त्र। सोलहवें वर्ष में आते-आते वह गम्भीर काम के लिए तैयार था। हम उसे वास्तविक दुनिया में ले गए। एक प्रादेशिक अस्पताल के मुख्य रोग-विज्ञानी ने इस उत्सुक मेहनती छात्र का अपनी प्रयोगशाला में बखुशी स्वागत किया। ल्यूक ने वहाँ अपने बॉस को प्रसन्न करते, तमाम अन्य प्रक्रियाएँ सीखीं, उन पर महारत हासिल की। साल भर के अन्दर वह अस्पताल में, बिना किसी दूसरे की मदद से शव-परीक्षण (ऑटोप्सी) करने लगा। अस्पताल में यह पहली बार सम्भव हुआ था।

“ ”

[

पाँच साल में ल्यूक मृतक संस्कार व्यवस्थापक बन गया। और अब ~~कुछ~~ वर्षों बाद उसका निजी मृतक संस्कार गृह ~~मह~~ का सपना पूरा हो गया है। उसके बाद बॉब भी आया।

एक दिन बॉब मेरे पास आया और बोला, “क्या आप मुझे भौतिक शास्त्र सिखाएँगे?” शंकालु होने का मेरे पास कोई कारण नहीं था। बॉब पहले ही इतनी सारी चीज़ें इतनी अच्छी तरह कर चुका था कि हम सब जानते थे कि वह कुछ शुरू करने पर उसे खत्म करके ही छोड़ता है हैं। उसने स्कूल की प्रेस चलाई थी। उसे पूरी शोध कर स्कूल की न्यायिक व्यवस्था पर किताब लिखी (प्रकाशित) थी। उसने असंख्य घण्टे पियानो सीखने में लगाए थे।

सौ मैं बखुशी मान गया। हमारा सौदा बड़ा सीधा-सा था। मैंने उसे प्रारम्भिक भौतिकी पर एक कॉलेज पाठ्यपुस्तक दी, जो मोटी और भारी थी। मैं पहले अक्सर उसकी मदद से पढ़ा चुका था, और जब मैं खुद अध्ययन की शुरुआत कर रहा था, उस वक्त पुस्तक के एक पूर्व संस्करण का मैंने स्वयं भी उपयोग किया था। मुझे उसकी सारी बाधाएँ पता थीं। “किताब को पन्ना-दर-पन्ना पढ़ना और उसके सारे के सारे अभ्यास करना,” मैंने बॉब से कहा, “जब जैसे भी छोटी सी भी समस्या आए, फौरन मेरे पास आना। इनको पहले ही सुलझाना ज़रूरी है, इसके पहले कि वे बड़ी अड़चनों में तब्दील हो।” मुझे लगा था कि मैं जानता हूँ कि बॉब पहली ठोकर कहाँ खाएगा।

कई सप्ताह गुज़र गए। महीनों। बॉब नदारद रहा।

यह तो उसके स्वभाव के विपरीत था कि वह किसी चीज़ को शुरू करने के पहले छोड़ दे - या उसे प्रारम्भ करने के बाद। मैं सोचता रहा कि कहीं उसकी रुचि खत्म तो नहीं हो गई। पर मैंने अपना मुँह बन्द रखा और इंतज़ार करता रहा।

शुरुआत करने के पाँच महीने बाद बॉब मुझसे मिला। “पृष्ठ 252 पर एक समस्या है।” मैंने कोशिश की कि मेरा अचरज दिखाई न दे। समस्या, जो गौण निकली, को सुलझाने में पाँच मिनट लगे।

इसके बाद मैं बॉब से भौतिकी के बारे में कभी नहीं मिला। उसने किताब अपने आप खत्म की। बीजगणित और कलन (कैल्कुलस) उसने मेरी मदद चाहे बिना खुद ही पढ़ा। शायद उसे पता हो कि ज़रूरत पड़ने पर मैं सहायता अवश्य करूँगा।

आज बॉब एक गणितज्ञ है हैं।

4.

जादूगर का प्रशिक्षु

जब ल्यूक अस्पताल के रोग-विज्ञानी के साथ काम करने गया, वह सडबरी वैली का पहला बाह्य प्रशिक्षु बना।

यह सम्भव ही नहीं था कि हम परिसर में उसके लिए शव-परीक्षण की व्यवस्था कर पाते। परिसर की प्रयोगशाला व्यवस्थाएँ चाहे कितनी भी विस्तृत क्यों न होती, हम मानव शव की जाँच की व्यवस्था नहीं कर सकते थे।

पन्द्रह वर्ष की उम्र में ल्यूक दो दिशाओं में ही मुड़ सकता था। या तो वह छह-सात साल रुकता, जब तक वह कॉलेज खत्म न कर लेता, और तब अपने चुने हुए क्षेत्र में आगे बढ़ता या फिर वह उस वक्त आगे बढ़ता जब उसकी तैयारी हो चुकी हो, जो उस समय उसकी थी।

हमें उसके रुकने का कोई कारण नज़र नहीं आया। हम स्थानीय चिकित्सकों के पास गए और हमने अपने मामले की पैरवी की, जब तक हमें ऐसा व्यक्ति नहीं मिल गया जो हमारे तरीके से सोचता था। हमने उसके साथ एक व्यवस्था बैठाई, उसी तरह जिस तरह हम स्कूल में अपने पढ़ाई सम्बन्धी सौदे करते हैं। आपको ल्यूक के रूप में एक निःशुल्क सहायक मिलेगा, क्योंकि यह उसकी शिक्षा का ही हिस्सा है, बदले में आप ल्यूक को फलाँ-फलाँ तयशुदा प्रशिक्षण देंगे। इस प्रशिक्षण का विस्तार से खुलासा किया गया था। सभी पक्षों ने शर्तों का अनुमोदन किया और स्कूल का पहला प्रशिक्षु कार्यक्रम चल पड़ा।

“ ”

[

यह विचार सबको आया। जब जिल की नाटक में रुचि जगी और वह जल्दी ही स्कूल के परे निकलने को ~~सी~~ तैयार हुई। उसकी रुचि नाटक की व्यवस्थाओं में थी - मेकअप, वेशभूषा, दृश्य, प्रकाश। वह केम्ब्रिज के लोएब थिएटर में प्रशिक्षु बनी। अधिक समय नहीं गुज़रा था कि उसे देशभर के पेशेवर थिएटरों में मदद के लिए काम मिल गया। उसके इस नए धन्धे ने उसे कॉलेज पढ़ाई का खर्च वहन करने में मदद की। कॉलेज से थिएटर की डिग्री ने उसके कैरिअर को आगे बढ़ाया।

कब परिसर में बने रहना है और कब बाहर निकलना? इस सवाल का जवाब अक्सर कठिन रहा है ~~हैं~~। चौदह साल की उम्र में सॉल फोटोग्राफी में डूब गया। जल्दी ही वह स्कूल के डार्करूम का उपयोग कर छायाचित्र प्रयोगशाला की बारहखड़ी सीखने लगा। जल्दी ही वह स्कूल में उपलब्ध साधनों से असन्तुष्ट हो चला। परन्तु कोई अन्य स्थान तलाशने के बदले उसने जो था उसे सुधारने का निर्णय लिया। धीमे-धीमे, मेहनत-मशक्कत से उसने कार्यशाला में बढ़ईगिरी सीखी। उसने तकनीकी फोटोग्राफी मार्गदर्शिकाओं का अध्ययन किया। साल भर के परिश्रम से उसने फोटो प्रयोगशाला का कार्याकल्प कर डाला, इसके लिए उसने ज़रूरत पड़ने पर काम में लिए गए उपकरण खरीदे। क्योंकि वह स्कूल का चौथा विद्यार्थी था जो फोटोग्राफी के प्रेम में पड़ा और जिसने डार्करूम को पुनर्निमित किया, जब तक उसने अपना काम खत्म किया वह सच में उम्दा नज़र आने लगा था।

पर जब सॉल सोलह साल का हुआ यह भी उसके लिए नाकाफी था। उसे किसी उस्ताद से व्यावहारिक प्रशिक्षण की दरकार थी। सप्ताह दर सप्ताह सॉल बॉस्टन के गली-कूचों में किसी व्यावसायिक फोटोग्राफर की तलाश करता रहा जो उसे प्रशिक्षु बना ले। प्रतिक्रिया उत्साहजनक नहीं थी। “कॉलेज में जाओ,” एक ने कहा। “बड़ी प्रोसेसिंग प्रयोगशाला में काम करो,” दूसरे ने कहा।

जब तक वह जो के पास पहुँचा वह सीख चुका था कि उसे अपनी बात कैसे रखनी है ~~हैं~~। जो की सारी आपत्तियाँ एक के बाद एक दूर की गईं। पर जो किसी किशोर को प्रशिक्षित करने का जोखिम नहीं उठाना चाहता था। “अरे किशोरों से पहले भी मेरा वास्ता पड़ा चुका है ~~हैं~~,” वह बोला, “वे सब निहायत गैर-ज़िम्मेदार होते हैं। वे समय पर नहीं आते, वे गड़बड़ियाँ करते हैं, और कम से जी चुराते हैं।” पर सॉल पीछे पड़ा रहा। स्कूल ने उसको समर्थन दिया और पक्का वादा किया। सप्ताह में दो दिन सॉल बॉस्टन की बस पकड़ता और जो के लिए काम करने जाता।

उसने शुरू से प्रारम्भ किया। साल भर के अन्दर उसकी प्रशिक्षु अवधि पूरी हुई। उसे कहा गया कि वह वहीं, जो की प्रयोगशाला का संचालन कर सकता है ~~हैं~~।

आज सॉल कला फोटोग्राफर है और अपने क्षेत्र के व्यावसायिक पक्ष में दक्ष तकनीकविद् पेशेवर है ~~हैं~~।

अब तक केवल एक ही प्रशिक्षुता असफल रही है ~~हैं~~। यह तब हुआ जब उस्ताद इतना गैर-ज़िम्मेदार सिद्ध हुआ कि उसने सौदे की अपनी शर्तें नहीं निभाईं। कुछ समय बाद छात्र ने हाथ खड़े कर दिए और दूसरी जगह तलाश ली।

एक व्यक्ति ने इतने सालों में किसी भी अन्य की तुलना में अधिक प्रशिक्षुओं को प्रशिक्षण दिया।

एलन व्हाइट एक सामान्य ठेकेदार हैं। जब हमारा स्कूल शुरू हुआ था वे एक सार्वजानिक स्कूल के प्रधानाचार्य थे, जो प्रशासकीय सोपान की दिशा में बढ़ रहे थे। एलन को सफल प्रशासक बनने के आदर्श गुणों का आशीर्वाद प्राप्त हैं। वे खूब बुद्धिमान हैं, पर इसे कभी दर्शाते नहीं। उनका मिजाज़ सन्तुलित है और वे कभी आपा नहीं खोते। वे न्यायपूर्ण, मधुर, समझदार और व्यवस्थित हैं।

जब हमने स्कूल खोला वे समूचे बॉस्टन महानगर क्षेत्र के एकमात्र सार्वजनिक शाला प्रशासक थे जिन्होंने हमारे काम को आकर देखने का आमंत्रण स्वीकारा था। वे जिज्ञासु थे। उनकी जिज्ञासा ने लगभग उनका काम ही तमाम कर दिया। ज़्यादा वक्त न बीता होगा कि एलन, जो एक स्थानीय कस्बे के स्कूलों के निरीक्षक बन चुके थे, स्कूली सुधार में गहराई से जुट गए। सडबरी वैली उनकी रुचि का काम बन चुका था। जितना अधिक वे हमारे स्कूल को देखते, उतनी ही सार्वजनिक स्कूलों में बदलाव लाने की दिशा में वे बढ़ते। फिर चाहे ये परिवर्तन कितने ही कम क्यों न रहे हों ~~सी~~।

जल्दी ही उनका कस्बा एक सघन विवाद से छिन्न-भिन्न हुआ। वैकल्पिक सार्वजानिक शाला का उनका प्रतिमान

“ ”

[

(मॉडल), पन्द्रह वर्षों बाद भी उन तमाम लोगों को सस्नेह याद आता रहा जो वहाँ पढ़े थे या जिन्होंने वहाँ काम किया था, पर जिसे जल्दी ही वापस लौटाने पर बाध्य होना पड़ा था।

एलन ने सार्वजानिक शिक्षा त्यागी। उन्होंने अपनी नौकरी बढ़ते सेवानिवृत्ति लाभ, अपनी तमाम सुविधाएँ त्यागीं। वे अपने पुराने प्यार, सुधारी पर लौटे और जल्दी ही सामान्य ठेकेदार बन गए।

इन तमाम सालों में एलन ने कभी हमारा साथ नहीं छोड़ा। वे हमारी मदद करने, सलाह देने और तसल्ली देने हमेशा मौजूद रहे। पहले वर्ष के बाद वे साल दर साल स्कूल निगम के अध्यक्ष चुने जाते रहे।

और जब कभी स्कूल का कोई व्यक्ति बढ़ईगिरी या निर्माण में रुचि लेने लगता तो वह स्वयं को एलन का प्रशिक्षु पाता। एलन के हाथों चार छात्र गुज़रे, उन्होंने पेशा सीखा और पेशेवरों के रूप में धन्धा किया।

प्रशिक्षु कार्यक्रम में एलन के लिए शब्द के सही अर्थ में शिक्षा से जुड़े रहना सम्भव बनाया। और इस कार्यक्रम ने कई लोगों को उत्साही, ऊर्जावान, युवा शिक्षार्थियों का उस्ताद बनने का रोमांच भी दिया।

5.

शेष आरंस

लगभग दो दशकों में सडबरी वैली में ***वाचनवैकल्य (डिसलैक्सिया)*** का एक भी मामला सामने नहीं आया। ऐसा क्यों हुआ, यह किसी को ठीक पता नहीं है ~~हैं~~। वाचनवैकल्य के कारण, उसकी प्रकृति, एक कार्यात्मक गड़बड़ी के रूप में उसका अस्तित्व तक भारी विवादों का विषय है ~~हैं~~। कुछ विद्वानों का मानना है कि हमारी आबादी का लगभग 20 प्रतिशत इस तथाकथित रोग से ग्रस्त होता है ~~हैं~~।

पर तथ्य यह है कि हमने स्कूल में इसे देखा तक नहीं है ~~हैं~~। शायद कारण यह रहा हो कि हमने किसी को पढ़ना सीखने पर बाध्य ही नहीं किया है ~~हैं~~।

पढ़ना हमारी ज़बरदस्त परीक्षा लेता है ~~हैं~~। पर अन्य चीज़ों की ***तरह हमने*** यहाँ भी पहल बच्चों को ही करने दी है ~~हैं~~। हमारी ओर से उसे कतई उकसाया नहीं जाता। कोई यह नहीं कहता, “अब पढ़ना सीखो।” कोई यह नहीं पूछता, “क्या तुम अब पढ़ना सीखना नहीं चाहोगे?” और कोई भी नकली उत्साह से यह नहीं कहता, “पढ़ना कितना मज़ेदार लगेगा, है ना?” हमारा नारा है : छात्र पहला कदम उठाए, तब तक इन्तज़ार करो।

उस समय अपने विश्वासों के अनुरूप जीना बड़ा आसान होता है जब चीज़ें वही शक्ल लेती जाती हैं जैसे उन्हें सब चाहते थे। मेरे ही परिवार को लें। हमारा सबसे बड़ा बच्चा पाँच साल की उम्र में पढ़ने में रुचि लेने लगा। और अपने आप ही छह साल का होते वह पाठक बन गया। कोई समस्या नहीं हुई। सब कुछ सही “हो” गया।

तब हमारी बिटिया आई जो ढाई साल छोटी थी। स्कूल के अन्य लोगों की ही तरह, हमने इंतज़ार किया कि वह कहे कि उसे पढ़ना सिखाया जाए - या वह खुद को सिखा दे। हमने इंतज़ार किया। और इंतज़ार किया। और इन्तज़ार किया। छह साल की उम्र में उसे पढ़ना नहीं आया, तो कोई मुश्किल नहीं, जहाँ तक हमारा प्रश्न था।

सात साल की उम्र में भी वह पढ़ नहीं पाई, यह लोगों की नज़र में सही नहीं था। दादा-दादी, नाना-नानी, परिचित असहज होने लगे, वे हमें लक्षित कर संकेत देने लगे।

वह आठ साल की आयु में भी पढ़ नहीं पाती यह बात परिवार और मित्रों के लिए एक भारी काण्ड था। हमें गैर-ज़िम्मेदार माता-पिता के रूप में ~~हो~~ देखा जाने लगा। स्कूल खैर, वह स्कूल - सही स्कूल हो ही नहीं सकता, अगर वहाँ आठ साला बच्चे निरक्षर हों और उनके लिए कोई उपचारात्मक कदम उठाया न गया हो।

पर स्कूल में इस तथ्य पर कोई खास ध्यान देता लगा ही नहीं। बिटिया के अधिकांश आठ वर्षीय दोस्त पढ़ पाते थे।

“ ”

[

कुछ नहीं पढ़ पाते थे। उसे खुद को कोई परवाह नहीं थी। स्कूल में उसके दिन बेहद व्यस्त व खुशनुमा थे।

नौ साल की होने पर उसने तय किया कि उसे पढ़ना है। मुझे पता नहीं कि उसने यह निर्णय क्यों लिया, और उसे कुछ याद नहीं। साढ़े नौ की होते-होते वह पूर्ण पाठक बन चुकी थी। वह कुछ भी पढ़ सकती थी। अब वह किसी के लिए समस्या नहीं रही। सच तो यह है ~~हे~~ कि वह कभी समस्या थी ही नहीं।

हमारे निजी अनुभव में लीक से हटकर कुछ भी नहीं था। स्कूल में कुछ बच्चे जल्दी पढ़ने लगते हैं, तो कुछ देर से। सभी तब पढ़ते हैं जब वे इसके लिए तैयार हों, उसके मिनट भर भी पहले नहीं। और सभी अन्ततः अच्छा खासा पढ़ पाते हैं।

देर से पढ़ना शुरू करने वाले कुछ बच्चे किताबी कीड़ा बनते हैं। कुछ बच्चे जो जल्दी पढ़ना सीखते हैं ~~है~~, पहले इस कौशल पर काबिज होने के बाद विरले ~~बिस्ले~~ ही किसी किताब को पूरा पढ़ते हैं।

हमारे स्कूल में एक भी प्रारम्भिक पठन पाठ्यपुस्तक नहीं है ~~हैं~~। न पहली कक्षा की, न दूसरी-तीसरी कक्षा की प्रवेशिकाएँ हैं। अक्सर सोचता हूँ कि पेशेवर शिक्षकों के अलावा कितने वयस्कों ने कभी प्रारम्भिक प्रवेशिकाएँ को देखा भी है ~~हैं~~। वे बेवकूफी की हद तक सरल, उबाऊ और अप्रासंगिक होती हैं। आधुनिक बच्चे जो सड़क-छाप चतुराई से परिचित होते हैं और टीवी. द्वारा पोषित, ये किताबें केवल बेवकूफी भरी ही लग सकती हैं।

मैंने तो किसी बच्चे को ऐसी किताब को उठा मज़ा लेने के लिए पढ़ते नहीं देखा है ~~हैं~~।

सच तो यह है कि स्कूल में कोई भी पढ़ने को लेकर कभी खास चिन्ता नहीं करता। केवल कुछ ही बच्चे, जब पढ़ने का निर्णय लेते हैं तो किसी से मदद माँगने आते हैं। लगता है पढ़ना सीखने का प्रत्येक का अपना तरीका होता है ~~हैं~~। कुछ पढ़ना सुनने के साथ शुरुआत करते हैं, कहानियों को यादकर लेते हैं और तब अन्ततः उन्हें पढ़ने लगते हैं। कुछ सिरियल (कॉर्नफ्लेक्स जैसे नाश्ते) के डिब्बों, तो कुछ खेल के निर्देशों से, तो कुछ सड़क पर लगे चित्रों से पढ़ना सीखते हैं। कुछ खुद को ~~का~~ अक्षरों की ध्वनियाँ सिखाते हैं, तो दूसरे ~~आक्षर~~ अक्षर व मात्रा की संयुक्त ध्वनियाँ, तो कुछ दूसरे पूरे शब्द की। ईमानदारी से कहूँ तो हमें विरले ही यह पता चलता है ~~हैं~~ कि वे पढ़ना सीखते कैसे हैं। और वे भी विरले ही हमें बताते हैं। एक दिन मैंने एक ऐसे बच्चे से जो ताज़ा-ताज़ा पाठक बना था, पूछा, “तुमने पढ़ना भला कैसे सीखा?” उसका जवाब था: बड़ा आसान था। मैंने “इन” (अन्दर) सीखा। तब मैंने “आउट” (बाहर) ***सीखा*** और तब मुझे पढ़ना आ गया।

लगता यह है कि पढ़ना बच्चों के लिए बोलने के ही समान ही समाज बच्चों को बोलने की कक्षाओं में नहीं डालता। (शायद ऐसा इसलिए होता है ~~हैं~~ कि बच्चे लगभग हमेशा ~~स्मेश~~ ही उस वक्त से पहले बोलना सीख जाते हैं, स्कूल उन्हें जकड़ लेता है ~~हैं~~। अनुमान है कि अगर एक साल के बच्चे स्कूल जाने लगें तो बोलने की कक्षाएँ भी शुरू हो जाएँगी जिसके साथ वे सभी ताज़ा खोजे गए “वाचा गड़बड़ियाँ” (स्पीकिंग डिसऑर्डरस्) सम्बन्धी कक्षाएँ भी होंगी। कुछ ही दुर्भाग्यशाली बच्चों की कार्यात्मक वाचा गड़बड़ियाँ होती हैं जिसमें उपचार की आवश्यकता पड़ती है। आश्चर्यजनक रूप से अधिकांश बच्चे किसी तरह, और कोई नहीं जानता ठीक किस तरह - स्वयं को बोलना सिखाते हैं।

बच्चे बोलना क्यों सीखते हैं? सच यह है कि शिशु मानवों की दुनिया से घिरे रहते हैं जो बोलने द्वारा सम्प्रेषण करते हैं। बच्चे दुनिया को काबिज़ करने से अधिक किसी दूसरी चीज़ को नहीं चाहते। आप उन्हें रोकने की कोशिश तो करें। उसके संकल्प और का महानतम उदाहरण है ~~हैं~~ बोलना सीखने का उसका संघर्ष।

और ठीक यही सडबरी वैली में पढ़ने को लेकर होता है ~~हैं~~। जब बच्चों को स्वयं उनके भरोसे छोड़ दिया जाता है ~~हैं~~, वे अन्ततः खुद ब खुद यह देख लेते हैं कि हमारी दुनिया में लिखित शब्द ही ज्ञान की जादुई कुंजी है ~~हैं~~। जब जिज्ञासा उन्हें आखिरकार वह चाभी हासिल करने की इच्छा की ओर ले जाती है ~~हैं~~ तो वे उसके पीछे उसी उत्साह से पढ़ जाते हैं जो वे अपनी दूसरी तलाशों में भी दर्शाते हैं।

और यह उनके लिए बोलना सीखने से कहीं अधिक आसान होता है। अब तक वे बड़े हो चुके होते हैं और नई चीज़ें सीखने में अनुभवी। वे जानते हैं कि भाषा क्या है, वह कैसे काम करती है, शब्द क्या हैं। सो बोलने की तुलना में पढ़ना

“ ”

सीखने में काफी कम समय और प्रयास लगाना पड़ता है ~~हैं~~।

लिखना बिलकुल भिन्न है ~~हैं~~।

कई बच्चे केवल लिखना ही नहीं, बल्कि अच्छी तरह से लिखना चाहते हैं। यह बात सौन्दर्यबोध की है ~~हैं~~। सो वे किसी व्यक्ति के पास जाते हैं। ताकि लेखन की कला को बाकायदा सीख सकें। लिखना चित्रकारी की तरह होता है ~~हैं~~, या कढ़ाई की तरह।

लेखन को एक सौन्दर्य कौशल के रूप में देखना कई बार वास्तविक विषमताओं की ओर ~~औऱ~~ ले जाता है ~~हैं~~। नन्हें बच्चों को घण्टों-घण्टों तक सुन्दर लेखन सीखते देखना असामान्य बात नहीं है ~~हैं~~। पर अजीब यह तब होता है ~~हैं~~ जब उनमें से आधे पढ़ना जानते ही नहीं हैं!

“आप ~~सुलेब~~ सुलेख क्यों सीख रहे हो, अगर तुम पढ़ ही नहीं सकते?” मैंने अक्सर पूछा है ~~हैं~~।

“क्योंकि यह सुन्दर है ~~हैं~~,” जवाब मिलता है ~~हैं~~।

कुछ बच्चे हस्तलेखन को कला के रूप में सीखते हैं, और तब उसे भुला किसी दूसरे काम में लग जाते हैं। कुछ सालों बाद वे पढ़ना सीखते हैं, और तब फिर से लिखना सीखते हैं।

अनुमान है कि यह दोहराए जाने लायक है ~~हैं~~। ***सडबरी वैली में किसी बच्चों पर पढ़ना सीखने के लिए बाध्य, धकेला, उकसाया, फुसलाया या घूस नहीं दी गई हैं।*** हमारे यहाँ वाचनवैकल्य का एक भी मामला नहीं रहा है ~~हैं~~। हमारे स्नातकों में एक भी दरअसल या कार्यात्मक रूप से निरक्षर नहीं रहा है ~~हैं~~। कुछ आठ साल के, कुछ दस साल के और यदा-कदा बारह साल के बच्चे भी निरक्षर रहे हैं। पर जिस समय तक वे स्कूल छोड़ते हैं, उनमें अन्तर नहीं किया जा सकता। कोई भी जो हमारे बड़े बच्चों से मिलता है, यह अनुमान नहीं लगा सकता कि उन्होंने किस उम्र में पढ़ना या लिखना सीखा होगा।

6.

मच्छी मारना

हर साल जून के प्रारम्भ में जॉन स्कूल में अपने बच्चे के विषय में बातचीत करने आता। जॉन कोमल स्वभाव का बुद्धिमान व्यक्ति था जो स्कूल में अध्ययनरत अपने बेटे डैन को समर्थन देता था। पर जॉन चिन्तित भी था। बस ज़रा सा। इतना भर की साल में एक बार स्कूल में आश्वासन के लिए आए।

उसकी बातचीत कुछ इस प्रकार चलती।

जे.एफ.: “मैं स्कूल का दर्शन जानता हूँ, और उसे समझता हूँ। पर मुझे आपसे बात करनी है ~~हैं~~। मैं चिन्तित हूँ।

मैं: “समस्या क्या है?” (बेशक मैं जानता हूँ हम दोनों ही जानते हैं यह एक रिवाज़ भर हैं, क्योंकि हम हर साल वही बातें कहते हैं, पिछले पाँच सालों से लगातार।)

जे. एफ.: “स्कूल ***में*** डैन दिन भर सिर्फ मछली पकड़ता है।”

मैं: तो समस्या क्या है ~~हैं~~?

जे. एफ. : पूरे दिन, हर दिन, पतझड़, सर्दियाँ, बसन्त। वह केवल मछली ही पकड़ता है ~~हैं~~।

मैं उसे देखता हूँ और अगले वाक्य का इन्तज़ार करता हूँ। वह मेरा संकेत होगा।

जे. एफ.: मुझे चिन्ता है कि वह कुछ भी नहीं सीखेगा। वह पाएगा कि वह बड़ा हो चुका है और उसे एक भी चीज़ आती न होगी।

“ ”

इस बिन्दु पर मेरा एक छोटा-सा भाषण आता, जिसे वह सुनने आया था। सब ठीक है हैं, मैं शुरुआत करता। डैन ने बहुत कुछ सीखा है हैं। अव्वल तो वह मच्छी पकड़ने का विशेषज्ञ हो गया है हैं। वह मछलियों के बारे में - उनकी प्रजाति, उनके आवास, अन्य आचरण, उनके जीव विज्ञान, उनकी पसन्दों और नापसन्दों के बारे में किसी भी दूसरे व्यक्ति से, जिसे मैं जानता हूँ, कम से कम उसकी उम्र के किसी दूसरे इंसान से वह कहीं अधिक जानता है। हो सकता है वह एक महान मच्छीमार बने। हो सकता है आगे वह आगामी “सम्पूर्ण मच्छीमार” की रचना करे।

जब मैं अपने उपदेश के इस बिन्दु पर पहुँचता जॉन कुछ असहज हो जाता। वह नकचढ़ा नहीं था। पर उसके पुत्र के मच्छीमारी के प्रमुख विशेषज्ञ की छवि उसे अविश्वसनीय लगती थी। पर मैं विषय में गर्माता आगे बढ़ता था।

ज़्यादातर तो मैं यह कहता। डैन ने दूसरी चीज़ें सीखी हैं। उसने किसी विषय को पकड़ना और तब उसे न छोड़ना सीखा हैं। उसने उस आज़ादी का मूल्य सीखा है हैं जो उसे उसकी वास्तविक रुचि को जिस सघनता से वह चाहे, अनुपालन करना और वह जहाँ भी ले जाए उसे स्वीकारना सीखा है। और उसने खुश रहना सीखा हैं।

सच तो यह है कि डैन स्कूल का सबसे प्रसन्न बच्चा है हैं। ***लाइन मिसिंग है।*** हरेक छोटा और बड़ा, लड़का और लड़की, डैन को प्यार करता था।

अब मेरी वार्ता समापन की ओर आती। “ये चीज़ें उससे कोई छीन नहीं सकता,” मैं कहता, “किसी वर्ष, अगर मछली पकड़ने में उसकी रुचि जाती रहे तो वह ठीक वैसी ही चेष्टा किसी दूसरे विषय में करेगा। फिक्र न करें।”

जॉन उठता, गर्मजोशी से धन्यवाद देता और चला जाता। अगले साल तक के लिए उसकी पत्नी डॉन कभी भी उसके साथ नहीं आती। वह सडबरी वैली से खुश थी क्योंकि उसके पास ऐसा बच्चा था जो आनन्द बिखेरता था।

तब एक साल जॉन हमारी बातचीत के लिए नहीं आया। डैन ने मछलियाँ पकड़ना बन्द कर दिया।

पन्द्रह साल की आयु में वह कम्प्यूटरों के प्रेम में पड़ गया। सोलह साल की उम्र तक वह एक स्थानीय फर्म में सेवा-विशेषज्ञ के रूप में काम करने लगा। सत्रह के आस-पास उसने और उसके दो दोस्तों ने कम्प्यूटर बेचने और सेवा देने की अपनी सफल कम्पनी की स्थापना की। अठारह की आयु में उसने अपना स्कूली अध्ययन पूरा किया और कम्प्यूटर अध्ययन के लिए कॉलेज गया। कॉलेज पढ़ाई के दौरान वह लगातार हनीवैल में एक पसन्दीदा विशेषज्ञ के रूप में काम करता रहा।

डैन ने इतने साल मछलियाँ पकड़ते-पकड़ते जो सीखा था उसे वह कभी नहीं भूला।

कई लोगों ने मछली पकड़ने के विस्मय और सौन्दर्य पर पोथे लिखे हैं। हमने स्कूल में स्वयं इसे देखा है हैं। बच्चों को ऐसा करना बेहद पसन्द है हैं। यह तनाव दूर करता है और चुनौतियाँ पेश करता है हैं। यह गतिविधि बाहर होती - बरसात हो या सूरज चमक रहा हो। स्कूल के चक्की ताल के किनारे खड़े आप सरसराते पेड़ों, धूसर ग्रेनाइट के भवनों और कलकल बहती नहर के पास चक्की बाँध के नीचे खड़े होते हैं। अधिकतर बच्चे जो मछलियाँ पकड़ते हैं इस सौन्दर्य को देखते हैं। सभी उसे महसूस करते हैं।

मछली पकड़ना सामाजिक गतिविधि है हैं। बच्चे दोस्तों के साथ मछली पकड़ते हैं, या अपने से बड़ों से सीखते हैं। हर साल पाँच-छह साल के बच्चों की नई पीढ़ी को इसके गुण सीखने से जूझते देखते हैं।

मछली पकड़ना असामाजिक भी हो सकता है हैं। आप चाहें तो अकेले भी हो सकते हैं। अक्सर कोई दिन भर के लिए **बैसी** और डोरियाँ लिए निकल पड़ता है हैं। सिर्फ अकेले रहने, सोचने, ध्यान मग्न होने के लिए।

एक शान्त तरीके से मछली पकड़ना स्कूली जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। मैं अक्सर सोचता हूँ कि हम कितने सौभाग्यवान हैं कि हमें ऐसा परिसर मिला जिसमें ताल हो।

डैन और जॉन का अनुभव मुझे स्कूल के प्रारम्भिक दिनों में हुआ। इसने मुझे स्कूल और उसका क्या अर्थ हो सकता है, के बारे में सोचने का अवसर दिया। सो मैं इसे लेकर पूरी तरह सहज था। जब मेरे सबसे छोटे बेटे ने पूरे दिन मछलियाँ

“ ”

[

पकड़ना शुरू किया। यह स्मृति विभ्रम ही था।

और मैं जानता था कि वह जानता है कि वह क्या कर रहा है ~~हैं~~।

7.

नोहा की नौका

हमने जब स्कूल भवन खरीदे थे तो हमें यह अतिरिक्त फायदा लगा था कि उसमें अस्तबल और गाड़ी खलिहान हैं। वे सुन्दर थे और उसमें पशुपालन की गतिविधि की सम्भावना थी।

यह शिशुवत ***निश्छलता*** से शुरू हुआ था। मॉली, जो इस क्षेत्र की नामी घुड़सवार थीं, ने जानना चाहा कि क्या वह हमारे अस्तबलों से घुड़सवारी सिखा सकती हैं। हम झिझके नहीं हालाँकि, विवेकपूर्ण शर्तों तक पहुँचने में हमें घण्टों चर्चा करनी पड़ी। जब 1 जुलाई 1968 को स्कूल खुला, हम छोटे से अतिरिक्त शुल्क पर घुड़सवारी सीखने का विकल्प रख ~~सकें~~ सके।

2 जुलाई को हमने पाया कि मॉली स्वयं गाड़ी घर में मय साजो-सामान आ चुकी हैं। उसके पास रहने की दूसरे जगह ही नहीं थी। चूँकि वहाँ न ***नहान*** घर था, न रसोई। ~~की~~ हमारे मन में शंकाएँ उठने लगीं।

घोड़े अस्तबल में रखे गए थे। पर उनकी साफ-सफाई का कोई प्रावधान हुआ नहीं था। दिन-ब-दिन अस्तबल की बाहरी दीवार के पास लीद का पहाड़ बड़ा होने लगा। इस विचार पर केवल यही आपत्ति नहीं थीं। यह स्वास्थ्य व अग्नि अधिनियमों के भी विरूद्ध था।

शुरुआती दिनों में यह हमारी समस्याओं में सबसे गौण चिन्ता थी। शुक्र था कि ज़्यादातर बच्चे घोड़े और जलहस्ति **दरियाई घोड़ा?** तक का फर्क नहीं जानते थे। मॉली का गुज़ारा नहीं चला, और वह जल्दी ही भाग गई।

पर उसकी विरासत ज़िन्दा रही।

“हम अस्तबल और खलिहान में बकरियाँ पालना चाहेंगे,” विल्सन बच्चों ने कहा। वे स्कूल बैठक, जहाँ निर्णय लिए जाते हैं, के दौरान अपनी बात बलपूर्वक रख रहे थे। हमने वे सारी सम्भव आपत्तियों सोच कर रखने की चेष्टा की।

“सप्ताह के अन्त में और छुट्टियों के दौरान भी तुम्हें उनकी देखभाल करनी पड़ेगी,” हमने कहा।

“कोई समस्या नहीं है,” उनका जवाब था। वे चार थे - तीन लड़के और एक लड़की, और वे काम आपस में ~~बांट~~ बाँट लेंगे।

“बकरियाँ पालने के बारे में तुम जानते ही नहीं हो,” हमने तर्क किया।

“यह सच नहीं हैं। हमने खूब पढ़ा है और दूसरों की बकरियाँ पालने में मदद की है ~~हैं~~। अब हमें अपनी बकरियाँ पालना सीखना है ~~हैं~~। हमारी माँ मदद करेगी।” उनकी माँ स्कूल में ही शिक्षिका थी।

ओह, ठीक है, हमने सोचा। यह भी एक जायज़ शैक्षिक अनुरोध है ~~हैं~~।

इसमें शक नहीं कि सीखना हुआ। पर साथ ही बहुत कुछ और भी। अव्वल तो हमारे सुन्दर मैदानों का उपयोग उतना सुखदाई न रहा, क्योंकि बकरियाँ हर जगह हगती रहीं। लगता था कि जब भी विल्सन बच्चे-या उनसे जुड़े अनेक उत्साहित सहायकों में से कोई - बकरियों को टहलाने ले जाता, उनके नन्हें प्रियतम एक दृश्य सुराग छोड़ते चलते। बदबू नहीं आती, ध्यान रहे। पर आप दोस्ताना गपशप के लिए कहीं बैठना नहीं चाह सकते थे।

और फिर उनका भाग छूटना भी था। बकरियाँ जीवन्त, लचीली और संकल्पवान होती हैं। वे किसी न किसी तरह सप्ताह में करीब एक बार तो छूट ही लेती थीं। अब पलटकर सोचने पर मुझे पक्का भरोसा नहीं कि यह केवल संयोग ही होता

था। उनके भाग छूटने पर स्कूल में मज़ेदार हड़कम्प मचता था। सभी उन्हें पकड़ने, या किसी को पकड़ते देखने दौड़ जाते। शोरगुल, भागदौड़ और चीख-पुकार के साथ यह कार्य सम्पन्न होता। कभी-कभार पड़ोसी की सम्पत्ति में घुसने का मामला भी जुड़ जाता। हमारी सार्वजानिक छवि में सुधार तो इससे नहीं होता था।

क्रमशः विल्सन बच्चे अपनी बकरियों से ऊबने लगे। पर हम सबके कहीं बाद।

और तब खरगोश आए।

“हम व्यावसायिक रूप से खरगोश पालन सीखना चाहते हैं।” इस बार तीन विल्सन लड़के और उनका दोस्त एण्डी था। कोई फायदा नहीं हुआ। हमें शिकस्त मिली।

वे यह सिद्ध कर चुके थे कि वे जानवरों की देखभाल कर सकते हैं। खरगोश पिंजरे में रहने वाले थे - भागने का मौका नहीं मिलेगा। हम जानते थे कि वे भागेंगे नहीं, क्योंकि खरगोश वापस पकड़ाई में विरले ही आते हैं।

खलिहान, खरगोश कारखाने में तब्दील हो गया। जब तक विल्सन मण्डली उनसे उकता न गई।

छात्रों की पशु भक्ति कई बार महा-रोमांचक अनुभवों की दिशा में ले गई। जैसे सन् 75 के बर्फीले तूफान के ~~दिनों~~ दिन सड़कों पर यातायात बन्द था, स्कूल व धन्धे ठप्प थे, मार्ज किसी हाल में क्रिस और एमी को पशुओं की देखभाल के लिए अस्तबल तक पहुँचा नहीं सकती थी।

“माँ प्लीज,” उन्होंने चिरौरी की, “बकरियों को चारा पानी की ज़रूरत ~~हैं~~ है।”

“मैं किसी हाल में ले नहीं जा सकती,” उसने कहा। “गाड़ियों को सड़क पर उतारने की पाबन्दी हैं।”

आगे कहा-सुनी के बदले वे दोनों तूफान में सात मील लम्बे रास्ते पर स्कूल के लिए निकल पड़े। बकरियों को प्यार से चारा पानी दिया गया और 6 घण्टे बाद, एमी और क्रिस अपनी माँ के पास लौट आए।

तब से खलिहान नवीनीकरण हो चुका है ~~हैं~~। पशुओं के दड़बे हटाए जा चुके हैं। पर अस्तबल अब भी मौजूद है ~~हैं~~। स्कूल में घोड़े पाला जाना सम्भव है, और बीच-बीच में कुछ छात्र निश्चित रूप से इसमें अपना हाथ आज़माएँगे। जब तक कि बच्चों के लिए पशुओं का चलन बिलकुल समाप्त न हो जाए।

8.

रसायनशास्त्र

वैसे चीज़ों का चलन खत्म होता भी है ~~हैं~~।

जब मैं छोटा था उस वक्त मुहल्ले के “जीनियस” हमेशा रसायनशास्त्री हुआ करते थे। घरों के भू-तल में उनकी प्रयोगशालाएँ होती थीं, जहाँ वे अपना अधिकांश समय बिताते थे। कुछ-कुछ अन्तराल पर इन युवा पागल वैज्ञानिकों के गलत मिश्रण बनाने से आग लगने की वारदातें या धमाके भी होते थे।

छठे दशक के आखिर तक, इस प्रकार की चीज़ें आगे या केन्द्र में नहीं रहीं। हालाँकि स्कूल में हान्ना, एक अनुभवी रसायनविद् स्कूल में पढ़ाती थी, इसकी कोई माँग नहीं थी।

हमने स्कूल बिना एक रसायन प्रयोगशाला के खोला। और सालों तक यही स्थिति रही।

तब अचानक कई छात्रों को रसायनशास्त्र का कीड़ा लगा। कुछ करने की ज़रूरत आ पड़ी।

उस समय किसी भी काम के लिए पैसा था ही नहीं। 70 के दशक की शुरुआत में हम कड़ा संघर्ष कर रहे थे। प्रयोगशाला के उपकरणों पर लगे कीमतों के पुरज़े हमारी आँखों से ओझल थे। अगर हम वह करने की कोशिश करते जो हरेक स्कूल करता था, तो हम उतना खर्च करते जितना हमने स्कूल प्रारम्भ होने से अब तक सभी चीज़ों पर किया होगा।

“ ”

स्कूल से जुड़ने से पूर्व हान्ना एम.आई.टी. में जीव रसायनशास्त्री के रूप में काम कर चुकी थी। वहाँ और अन्य विश्वविद्यालयों में उसके तमाम दोस्त थे। उसे याद था कि उसके पुराने अड्डों में काम किस तरह किया जाता था। हर साल लोग नई परियोजनाओं पर अपना काम चमचमाते नए उपकरणों के साथ प्रारम्भ करते थे। हर साल टनों पुराने उपकरण और फर्नीचर को कबाड़ करार दिया जाता था।

उसने तय किया कि वह “कबाड़”, जो वैसे नए-सा ही बढ़िया होता था, जुटाएगी। बड़े धीरज से, अपनी सूची हाथ में थाम, हान्ना ने कई रसायन व जीवशास्त्र विभागों से सम्पर्क साधा। चन्द सप्ताहों में ही उसके पास सूची की हरेक सामग्री जुट गई।

ये वे शैक्षिक प्रतिकृतियाँ नहीं थी, जो स्कूल बाज़ार के लिए बनाई जाती हैं। हरेक उपकरण पेशेवर गुणवत्ता का थाः प्रयोगशाला की मेज़ें, एक सिंक, कांच का समान, सूक्ष्मदर्शी, कुर्सियाँ, सब कुछ। हमें जो खरीदना पड़ा वह था एक अग्निशमन यंत्र, एक फायर ब्लैंकेट, कुछ लकड़ी, एक पंखा और एक अंधड़ खिड़की ताकि हम एक हुड (छज्जा) बना सकें। ऐसा नहीं था कि हमें हुड भी नहीं मिल सकता था, दरअसल सभी उपलब्ध हुड हमारे कमरे के लिए बहुत बड़े थे।

प्रयोगशाला को व्यवस्थित करने में कई महीने लगाए गए। जब स्थानीय निरीक्षक ने उसे आशीर्वाद दे दिया तो वह उपयोग के लिए तैयार थी।

सभी रासायनिक प्रयोग हमेशा प्रयोगशाला में ही नहीं किए जाते थे।

एक में प्रवेश करते ही मुझे कुछ अजीब-सी गन्ध आई। मुझे ठीक समझ नहीं आया। क्योंकि ऐसी गन्ध से मेरा पहले कभी सामना ही नहीं हुआ था। गन्ध बिलकुल हल्की-सी थी और भू-तल से आती लगती थी।

मैंने पूछताछ की। क्या किसी और को भी कोई अजीब गन्ध आ रही है हैं? ना, किसी को नहीं। पर कई लोग असहज लगे। मैं रसोई घर में घुसा तो विल्सन मण्डली वहीं थी, वे छत की ओर ताक अपनी मुस्कानें छिपाने की कोशिश करने लगे।

मुझे पर्याप्त सुराग मिल गया। कोई नई खुराफात पक रही है, मैंने सोचा। और सच में बात पकने की ही निकली।

भू-तल के पिछवाड़े, सबकी नज़रों से दूर उन्होंने एक मीथेन संयंत्र बनाया था।

समय सातवें दशक के मध्य का था। देश, दुनिया एक भयावह ऊर्जा संकट से गुज़र रहे थे। चारों ओर वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों की चर्चा थीः जल ऊर्जा, सौर्य ऊर्जा, ज्वार-भाटे की ऊर्जा और कबाड़ से ऊर्जा। और कोई भी चीज़ें ज्वनलशील गैस बनाने में उतनी प्रभावशाली नहीं थी जितनी पशु-मल।

मैं हमेशा यह सोचा करता था कि विल्सन मण्डली अपने खरगोश पालन में उनके मल से क्या करते होंगे। अब मुझे पता चला। उन्होंने बड़े धैर्य से टुकड़ों-टुकड़ों में गैस संयंत्र बनाया था। उसे जोड़ने में उन्हें कुछ सप्ताह लगे थे। खरगोशों का मल खमीरण टंकी में पकता और उससे निकली मीथेन गैस टंकियों में इकट्ठी की जाती। सब कुछ बिलकुल सरल था। यह सब महीनों तक चलता, बशर्ते खरगोश खाद की हल्की गन्ध स्कूल मैं फैलने न लगी होती।

ऐसा नहीं था कि विल्सन मण्डली ने अपनी खुराफात किसी से छुपाई हो। उन्होंने डेविड से अनुमति ली थी। डेविड स्थानीय ***निरीक्षणों*** तथा स्कूल के सम्बन्धों का प्रभारी था। डेविड रसायनशास्त्री नहीं था। उन्होंने बड़ी सावधानी से उसे ठीक वही कहा था जो वे उसे बताना चाहते थे। हम डेविड को दोष नहीं दे सकते थे। क्या यह महज संयोग था कि एक भी वैज्ञानिक प्रशिक्षण पाए हुए शिक्षक से परामर्श नहीं ली गई थी?

मीथेन संयंत्र हटाया गया, इससे पहले कि हम यह जानने का मौका पाते कि वह ऊर्जा का कितना सशक्त स्रोत हो सकता है।

हम शिकार को जाएँगे

मीथेन संयंत्र की सामग्री सडबरी कस्बे के कबाड़ स्थल (डम्प) से आई थी। ठीक उसी तरह जैसे वहाँ से चार घास-कटाई मशीनों की सामग्री सालों से आती रही थी। वहीं से साइकिलें, गाड़ियाँ, गॉल्फ बग्घियाँ, शेष अटरम-शटरम सामान आता रहा था, जो ***उधमी*** लड़के जोड़-जोड़ कर बनाते थे। हर सप्ताह हान्ना को विल्सन मण्डली और उनके दोस्तों को कबाड़ स्थल तक ले जाया जाता ताकि वे नई आई सामग्री को जाँच-परख लें।

मीथेन संयंत्र का विचार अतिवादी था पर उसकी जड़ें सडबरी वैली परम्परा में था। हमें यह कभी समझ ही नहीं आया कि स्कूल नई सामग्रियों पर इतना खर्च क्यों करते हैं, जब इतनी अच्छी काम में ली गई चीज़ें, सस्ते में, या मुफ्त में उपलब्ध हैं।

स्कूल प्रारम्भ करने से पहले हमें अपने भवनों को साजो-सामान से लैस करना था। हमें सबसे अधिक ज़रूरत फर्नीचर की थीः मेज़, कुर्सियाँ, सोफा, ***लैम्पों/लैम्प***, कालीन। हमारे पास सीमित राशि थी, सो हम इलाके के सारे फर्नीचर दुकानों में घूमे।

कई हताशाओं के बाद, एक दिन हम दक्षिण फार्मिंगहैम स्थित लू की दुकान पहुँचें। हमने उसे बताया कि हम कौन हैं और हमें क्या चाहिए।

"मुझे विश्वास नहीं हो रहा," वह बोला। आपने वह मकान खरीदा, उसके सिर्फ ~~छह~~ छह महीने पहले उसका पूर्व मालिक मेरे पास आया और कहा कि मैं ढेर सा सुन्दर पुराना फर्नीचर खरीद लूँ जो खलिहान में लगभग पूरा भरा हुआ था। वह कौड़ियों के मोल गया। वह दस साल तक आपके भवन को लैस कर देता। लू को हम पर रहम आया। हम दुखी थे। उस दिन से वह हमारा मुख्य आपूरक बन गया। उसके गोदाम में जब भी कोई छुटपुट सामान आता, वह साल दर साल हम तक उसे पहुँचाता।

हमने जो कुछ इकट्ठा किया, उसमें अधिकांश हमें मुफ्त में मिला। अभिभावकों ने हमें इस्तेमाल किए सोफा व कालीन तब दिए, जब वे नया सामान खरीद सज्जा बदल रहे थे। एक दिन एलन व्हाइट अपने निर्माण काम से आया, जहाँ वह एक अपार्टमेंट गृह की लॉबी को पुनर्निर्मित कर रहा था। उसके पास एक कालीन था जो उसने उस परिसर से तभी हटाया था। वह बढ़िया हालत में था। हमारे सबसे बड़े कमरे ~~की~~ का फर्श जल्दी ही दीवार से दीवार कालीन से सज गया।

हमारी चीज़ों के रंग हमेशा एक-दूसरे से मेल नहीं खाते थे, पर हम कोशिश करते थे। सौन्दर्यबोध को बेहतर बनाने के लिए चीज़ें इधर-उधर हटाते-धरते थे। सच तो यह है कि सालों तक हमारे सबसे बड़े विवाद सौन्दर्यीकरण के बारे में ही रहे। छात्र और शिक्षक घण्टों तक रंग संयोजन या फर्नीचर के स्थान के फायदे-नुकसान पर बहसबाज़ी करते। यह आदान-प्रदान गर्म भी हो सकता था; आखिर मामला सौन्दर्यबोध के सिद्धान्तों का था ना।

इस दौर में इन विवादों को सीमित करने के लिए हमने एक समिति बनाई जो इनसे निपटे। उसमें कोई भी जुड़ सकता था। पहले पहल इसका नामकरण हुआ "रंगने और टाँगने वाली समिति", जो इन गतिविधियों को समेटती थी। बाद में, समिति ने अधिक निरपेक्ष नाम अपनाया, "सौन्दर्यबोध समिति।" इस समिति में जो निश्चित रूप से सुन्दर नहीं है वह है, इसकी ***गर्मागर्मी*** और बहसों के दौरान होने वाली आवाज़।

बहुत कुछ मुफ्त में आया था। उदाहरण के लिए रासायनिक प्रयोगशाला। वह सुन्दर फिसलपट्टी और झूले का सैट जो हमारे एक परिवार ने पिता की मृत्यु पर दान दिया। वह मृतक इंजीनियर था जिसने यह सैट अपने उन बच्चों के लिए डिज़ाइन किया और बनाया था, जो अब बड़े हो चुके थे। हमारे डार्करूम का अधिकतर सामान दान में मिला था, और पुस्तकालय की अधिकांश किताबें भी, और वह सच में उम्दा हैं। हमें कभी रेफ्रिजरेटर खरीदना नहीं पड़ा। हमारे शिविर यात्राओं के लिए कुछ अच्छे टैंट भी हमें मिले।

एक क्रिसमस की पूर्व संध्या को स्कूल में कोई घुसा और हमारे दो आई.बी.एम. बिजली टाइपराइटर चोरी हो गए - ये ही दो चीज़ें वास्तव में कीमती थीं। दो बच्चों की साइकिलें और गिटार भी गए। और स्टीरियो यंत्र भी गया। स्कूल के

“ ”

[

लिए वे छुट्टियाँ उदासी भरी थीं।

जनवरी की शुरुआत में एक अभिभावक ने अपना पुराना काम में लिया हुआ विद्युत रैमिंग्टन, जो काम करता था, दे दिया था। जब मैं स्थानीय टाइपराइटर दुकान पर इस्तेमालशुदा टाइपराइटरों की पूछताछ करने गया, तो हम बात करने लगे। बात खत्म हुई तब तक दुकान मालिक ने हमें दूसरा रैमिंग्टन करूणावश दान कर दिया! साल भर के अन्दर, जब तक दोनों पुराने रैमिंग्टन अन्धाधुन्ध उपयोग के चलते मृत्युप्रायः हुए, हमें एक और आई.बी.एम. विद्युत व एक अधिक बड़ा ***टैमिंग्टन*** दान में मिल गया।

अक्सर हमें अपनी माँग से अधिक ही मिलता। जब हमने पहले पहल किताबें स्वीकारना प्रारम्भ किया, हम सब कुछ रख लेते थे। जल्दी ही हमारा भू-तल और ***परछत्ती*** ऐसी विलक्षण पुस्तकों से भर गए जो किसी ***आइवी*** लोग स्कूल के योग्य हों! सौभाग्य से उनकी ढुलाई का खर्च हमें वहन नहीं करना पड़ा। एक विरल पुस्तक विक्रेता उन्हें उठा ले गया, और कुछ पैसे भी दे गया।

और एक समय वह भी था जब हमारा स्कूल एक प्रयुक्त उपकरणों की दुकान-सा लगता था, क्योंकि कई फालतू ***रैफ्रिजरेटरों*** की एक कतार लगी हुई थी।

या उस दिन जब हमें छह बड़ी व्यावसायिक बुनाई मशीनें देने का प्रस्ताव दिया गया। वे काम करती थीं, पर उनका चलन खत्म हो चुका था। दानदाता एक बड़े बुनाई कारखाने के न्यासी थे। उन्हें पूरा विश्वास था कि हम उन मशीनों का उपयोग बुनाई सिखाने और स्वेटर उत्पादन करने के लिए कर सकेंगे, ताकि स्कूल को वित्तीय मदद मिल सकें। वे हमारी आधी मंजिल भर देतीं। कुछ मुश्किल से हम इस प्रस्ताव को मना कर सके, पर मुझे पक्का पता नहीं कि वे सज्जन इस भावना से कभी उबर सके या नहीं कि हम नकचढ़ापन दिखा रहे हैं।

एक ~~बंसल~~ बसन्त को जोएन, बदहवास-सी घुसी। “मुझे मार्ज को लेकर ठीक इसी पल बाहर जाना है ~~हैं~~,” उसने अत्यावश्यकता दर्शाते कहा।

दस मिनट बाद वे गर्व से फूली लौटीं। स्कूल आते समय जोएन ने चार बेंत की कुर्सियाँ एक कूड़े के ढेर पर रखी देखीं थी, जो कोई मालिक सड़क पर छोड़ गया था। ***ताकी सुबह उठा ली जाएँ।*** सफाई ट्रक चन्द मिनटों में आने वाला था, और जोएन उसके विरूद्ध काम कर रही थी। मुझे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। “ये तो कबाड़-सी लगती हैं,” मैंने कहा, “हमारे स्तर से भी।” “रूको और देखो।” जोएन और मार्ज ने जवाब दिया।

मैं रूका - और तब देखा। उनकी दक्ष आँखों ने चार बढ़िया कुर्सियाँ देख ली थीं, जिन्हें बस थोड़ी-सी सफाई और छोटी-मोटी मरम्मत की दरकार थी। दो घण्टे बाद, स्कूल में लगभग नई सी चमचमाती कुर्सियाँ का सैट था, जो हमारे पुनर्निर्मित संगीत कक्ष की शोभा बढ़ा रहा था।

यह रोज़मर्रा के काम का हिस्सा है ~~हैं~~।

बेशक, सब कुछ मुफ्त नहीं है ~~हैं~~। या काम में लिया हुआ और सस्ता।

स्कूल भवन एक ऐसे चूल्हे के साथ मिला जो सत्यापित एन्टीक-सा लगता था। हमने उसे जस का तस छोड़ दिया ताकि अगर कोई पकाना सीखना चाहे तो वह सम्भव हो।

परन्तु भाग्य के चलते, यह कि साल-दर-साल पाककला में रुचि रखने वाले ढेरों बच्चे दाखिल होते। और हमारे शिक्षकों में एक बेहद उम्दा पाकशास्त्री थी और, कई उतने अच्छे तो नहीं, पर फिर भी अच्छे रसोइए थे। दूसरे शब्दों में, सडबरी वैली में पाककला हमेशा महत्वपूर्ण रही। दरअसल स्कूल में चन्द साल बिताने के बाद मार्गरेट पार्रा हमारी ***आवसी*** “मास्टर

“ ”

शेफ” ने एक ~~कुक~~ कुकबुक प्रकाशित की जिसने उसका प्रयोग करने वाले हज़ारों लोगों को आनन्दित किया है ~~हैं~~। हमारे कई स्नातक प्रशिक्षु बन या उच्चतर स्कूलों में जा स्वयं मास्टर शेफ बने हैं।

यह सब मुझे चूल्हे पर वापस लाता है ~~हैं~~। हमें यह समझने में बहुत समय नहीं लगा कि यह स्थिति चल नहीं सकेगी। चूल्हा केवल पुराना नहीं था। वह बिलकुल बेकार था। और इस्तेमाल किए गए चूल्हे का विचार किसी को पसन्द नहीं आया। आखिर हमारे पास वैसा एक चूल्हा था ही।

जिस चीज़ की ज़रूरत साफ थी - वह “विशेष व्यय” था, जैसा ऐसा खर्चा कहलाता है ~~हैं~~। दो बड़े, चार ***मुँह*** और एक अवन रेंज खरीदना काफी था। मुश्किल सिर्फ यह थी कि हमारे नियमित बजट में ऐसा कोई प्रावधान रखा नहीं गया था और उसे इधर-उधर से कटौती कर निकालने का कोई उपाय नहीं था।

विशेष खर्च के लिए विशेष उपाय ज़रूरी बन गया। सो सभी शिक्षकों और पाक कला में रुचि रखने वाले बच्चों ने ‘बेक सेल्स’ की ृंखला आयोजित की ताकि नए चूल्हों के लिए पैसा इकट्ठा किया जा ~~सकें~~ सके।

गर्माने के रूप में शुरुआत थैक्सगिविंग बेक सेल के आयोजन से किया गया। सभी अभिभावकों को सूचना भेजी गई जिसमें दर सूची और ऑर्डर प्रपत्र थे। प्रतिक्रिया अच्छी थी और **जो लोग काम से जुड़े थे, उन्होंने बड़ी मात्रा में** उत्पादन कैसे किया जाए यह सीखा।

तब क्रिसमस अवकाश बेक सेल आया, जो स्थानीय सुधार मार्केट में आयोजित किया गया, जिसने हमें हमारे महान काम के लिए जगह उपलब्ध करवाई। छात्रों के एक समूह ने पूरी रात मेरे घर बिताई और - डबलरोटियाँ, केक, कुकीज़, रोल्स, टार्टस्, मफिन्स, बिस्किट आदि ढेरों लज़ीज पकवान बनाए। सुबह हम में से कुछ स्वयं को घसीटकर बाज़ार पहुँचे और अपनी दुकान सजा दी। दोपहर 1 बजे तक सब कुछ बिक चुका था।

पूरे साल भर छोटे-छोटे बेक-सेल, जो छात्रों और शिक्षकों को लक्षित थे, के माध्यम से थोड़ी-बहुत नियमित आय होती ~~हो~~ रही। कभी-कभार सैंडविच, सलाद या गरमागरम भोजन की सेल भी की गई।

हमारा अन्तिम प्रयास ईस्टर में किया गया, एक बार फिर अभिभावकों के लिए। वह खत्म हुआ तो हमारे पास चूल्हों के लिए ज़रूरी पैसे जुट गए थे। और हमारे पास विशेष व्यय के लिए सडबरी वैली परम्परा भी स्थापित हो गई।

और यही व्यवस्था तब से रही है ~~हैं~~। जब भी कोई स्कूल बैठक में विशेष वित्त की माँग रखता है ~~हैं~~, प्रतिक्रिया यह होती हैः अगर खर्च में इसकी ज़रूरत है, तो पैसे जुगाड़ने में मदद करनी होगी। कभी स्कूल बैठक का आग्रह रहता है ~~हैं~~ कि पूरी राशि आवेदनकर्ता उगाहें; कभी केवल प्रतीक राशि चाही जाती है ~~हैं~~; पर अधिकतर समय स्कूल प्रतीक राशि बाँटना स्वीकार लेता है ~~हैं~~।

ऐसी व्यवस्था ने स्कूल के आसपास के लोगों को बढ़िया भोजन खाद्य-सामग्री उपलब्ध करवाई है ~~हैं~~। क्योंकि खाने-पीने की सामग्री की बिक्री तब ही सफल होती है ~~हैं~~ जब पकाया गया खाना स्वादिष्ट हो ~~हों~~। अन्य चीज़ों के साथ खेल गतिविधियों के उपकरण, डार्करूम, चमड़े की कार्यशाला, कई स्टीरियो सिस्टम आदि इसी विधि से उगाही गई राशियों से खरीदे गए हैं। कभी पैसा उगाहने के लिए दूसरी गतिविधियाँ भी आयोजित की जाती हैं। एक बार चार छात्रों ने स्कूल के मैदानों की घास-कटाई की ताकि लकड़ी से काम करने की कार्यशाला बन सके।

धन एकत्रण का यह केन्द्रित तरीका इतना सफल रहा कि पूर्व छात्रों ने भी इससे जुड़ना तय किया। हर साल वे पूछते ~~है~~ हैं कि स्कूल की कौन सी विशेष आवश्यकता है, जो सामान्य बजट के बाहर है ~~हैं~~। ऐसी पहली आवश्यकता एक कम्प्यूटर की थी। बाद में एक प्रिन्टर की, पुस्तकालय में अल्मारियों की भी आई। तब एक बड़ा कालीन, फर्नीचर और खलिहान की मरम्मत और नवीनीकरण, आदि की ज़रूरत पड़ी।

इन चीज़ों के खर्च के लिए पूर्व छात्रों ने फ्रेमिंग्हैम में यार्ड-सेल जैसा ~~जैसी~~ आयोजन किया। पर जो बड़े मज़ेदार आयोजन रहे वे स्कूल नीलामी के थे, जिसमें छात्र, अभिभावक और पूर्व छात्रों को आमंत्रित किया जाता, जिसमें काउंटर के दोनों और वे ही रहते थे। इसमें वस्तुओं और सेवाओं की नीलामी होती और आमंत्रित बोलियाँ लगाते। बहरहाल, यह हमेशा ही

“ ”

[

एक उम्दा सामाजिक आयोजन होता है हैं।

नीलामी में जो सेवाएँ प्रस्तावित होती हैं वे बिलकुल असामान्य होती हैं, जो विविध स्थानीय प्रतिभा को दर्शाती हैं। कोई वकील वसीयतनामा बनाने की नीलामी करता है; भवन निर्माता नए मकान या नवीनीकरण की; नौका मालिक परिवार को समुद्र की सैर करवाने का प्रस्ताव रखता है हैं। छात्र बाग-बगीचों की देखभाल या बेबी सिटिंग का प्रस्ताव रखते हैं।

और स्कूल के विशेष व्यय का खर्च निकल आता है हैं।

यह तरीका उद्यमिता का है - और छूत के रोग की तरह संक्रामक। एक दिन तीन दस वर्षीय लड़के जो मछली पकड़ने के शौकीन थे, ने तय किया कि उन्हें एक नाव चाहिए। मामला बड़ी राशि का था, और स्कूल में होने वाले बेक-सेल पैसा इकट्ठा करने की कारगर विधि सिद्ध हो चुके थे।

पर समस्या यह थी कि यह स्कूली व्यय नहीं था, निजी खर्च था भी।

तिगड़ी ने इस पर खूब सोच-विचार किया और स्कूल बैठक में अन्ततः यह सौदा रखाः “आप हमें निजी बेक-सेल की छूट निश्चित शर्तों पर दें और हम स्कूल को लाभ का 10 प्रतिशत देंगे।”

यों स्कूल में निजी छूट का जन्म हुआ। बेशक, हमारे लिए यह बड़ा धन्धा नहीं था, पर उद्यमियों के दिलों के बेहद करीब था। उन्होंने नाव के पैसे इकट्ठे किए। और एक ट्रेलर के लिए। और एक मोटर के लिए।

और स्कूल में एकत्रण की रंगीन परम्पराओं में एक और परम्परा आ जुड़ी।

11.

नए शौक तथा फैशन

सडबरी वैली एक “कूल” (मस्त) स्कूल है।

यहाँ के तयशुदा कोर्स (पाठ्यक्रम) या विभाग नहीं हैं। सब कुछ छात्रों की रुचियों से प्रारम्भ और समाप्त होता है हैं। इसका तात्पर्य यह है कि हम समय के साथ चल सकते हैं। आखिर तक।

सातवें दशक के मध्य में चमड़े के काम का भूत, देश के एक से दूसरे छोर तक सवार था। जल्दी ही किशोर भी इसमें घुसे। उन्हें प्रारम्भिक सहायता लकड़ी कार्यशाला के विशेषज्ञ शिक्षक, जिम नैश से मिली, जो इत्तफाक से चमड़े के कारीगर भी थे।

जल्दी ही बच्चे और जिम स्कूल बैठक से यह अनुमति लेने आए कि वे हमारे सामान्य उपयोग के कमरों में से एक में चर्म कार्यशाला बनाना चाहते हैं। वे सदल-बल आए थे और अपने मामले की पैरवी की। इसके व्यावहारिक पक्ष की देखभाल के लिए चमड़े में रुचि रखने वालों का एक अधिकारिक समूह बनाया गया।

चीज़ें व्यवस्थित रूप से की जाएँ, कहाँ से सबसे अच्छी दरों में सामग्री मिलेगी, आदि पर खूब शोध किया गया। कुछ ही समय में स्कूल बैठक और कुछ वित्त उगाहने की गतिविधियों की मदद से, एक पूरी तरह लैस चमड़ा कार्यशाला बनी और काम करने लगी।

रोज़मर्रा के खर्चों के लिए हमने एक नया पेंच विकसित किया, जो बाद में बारम्बार उपयोगी रहा। मौजूद खर्चों के लिए चमड़ा कार्यशाला एक छोटे धन्धे की तरह चलाई गई। बीज राशि स्कूल बैठक से ऋण के रूप में दी गई। इससे रोज़ की आवश्यकता की सामग्रियों, जो मुख्यतः तरह-तरह का चमड़ा था, पर साथ ही बकल्स, खटके, बटन जैसी तमाम चीज़ों के लिए पूँजी उपलब्ध हुई। सामग्री थोक के भाव बड़ी मात्रा में खरीदी जाती और तब उपयोग करने वालों को थोड़ी-सी अतिरिक्त राशि पर बेची जाती। यह सब साख पर चलता था। अधिक समय गुज़रा नहीं होगा कि लोग भारी मात्राओं में बेल्ट, वॉलेट, मॉकैसिन्स वेस्ट, ब्रेसलेट, एंकलेट, पैंट आदि बनाने लगे। चमड़ा उद्यम अपना कर्ज़ चुका पाया और उसे किसी

“ ”

[

दूसरी गतिविधि के बीज राशि की तरह उपयोग में लिया जा सका। बल्कि कुछ राशि बच भी गई, जिससे कभी कोई नया गुह्य उपकरण खरीदा जा सके।

अपने शिखर पर चर्म कार्यशाला स्कूल के मुख्य केन्द्रों में एक थी। वहाँ लगभग हर दिन एक दर्जन या उससे भी अधिक लोग घण्टों अपनी परियोजनाओं पर काम करते नज़र आते थे। क्रिसमस के पहले तो वहाँ सिर्फ खड़े रहने भर की जगह मिल पाती, क्योंकि लोग हड़बड़ी में अपने दोस्तों और रिश्तेदारों के लिए उपहार बनाते होते थे।

और तब जैसे यह लहर उठी थी, वैसे ही लुप्त भी हो गई। यह शौक पहले शिखर पर चढ़ा और तब कुछ सालों की गहमागहमी के बाद कार्यशाला मौन हो गई। कमरे का उपयोग लगभग ठप्प हो गया।

कुछ ही समय बाद उपकरण डिब्बों में बन्द हो गए। बची सामग्रियाँ बेच डाली गईं और कक्ष पुनः सामान्य उपयोग कक्ष में बदल गया। इस प्रक्रिया में कोई शोर तमाशा नहीं हुआ। समझ गए थे कि मानव रुचि केन्द्र के वृत्त के साथ कैसे पलटा जाए।

चर्मकार्य की कहानी कई तरह के कामों में दोहराई गई है ~~हैं~~। कभी तो इसके केन्द्र में ऐसे शौक/प्रचलन रहे जो देश भर में लोकप्रिय थे। शेष लोगों की तरह हमें भी विडियो खेलों, हैकी सेक, आइस स्केटिंग, प्राच्य धर्मों तथा जिमनास्टिक का शौक चर्राया। जब कम्प्यूटर आगे बढ़ दुनिया भर में ***केन्द्रीय*** बने, हमने भी एक खरीदा। इसकी राशि नीलामी से एकत्रित की गई। साल-दर-साल इसने ***कम्प्यूटर बाजीगरों के इस माध्यम के तमाम गुर सिखाए***। पाँच साल एक एपल के बाद हमने एक बेहतर कम्प्यूटर खरीदा जो हमारा दफ्तर चलाता है और विशेषज्ञों के खेलने के लिए एक अधिक परिष्कृत उपकरण भी उपलब्ध करवाता है ~~हैं~~।

कभी-कभार समसामयिक घटनाएँ समूचे स्कूल समुदाय का ध्यान आकर्षित कर लेती ~~है~~ हैं। जिस समय वाटरगेट सुनवाई, जिससे अन्ततः राष्ट्रपति निक्सन को त्यागपत्र देना पड़ा, दिन-रात टेलीविज़न पर दिखाई जाने लगीं, हर ओर लोग घण्टों उसे ही देखते। कोई भी दूरदर्शन नाट्य कथा इसे सुनवाई जितनी मोहक नहीं थी। बड़े छात्रों ने एक पुराना श्वेत-श्याम 19 इंच का टीवी. लाकर सबसे बड़े उपलब्ध कमरे में रखा और उसे देखने लगे। छोटे विद्यार्थी जल्दी ही वहाँ आ जुड़े और यदाकदा शिक्षक भी। सप्ताह दर सप्ताह से सुनवाइयाँ राजनीति शास्त्र अमरीकी इतिहास और समसामयिक घटनाओं के उच्चतर कोर्स के रूप में काम करती रहीं। छात्रों से रुचि के इससे अधिक ऊँचे स्तर की अधिक ग्रहण शक्ति की कामना कोई रख ही नहीं सकता था।

याद है कि मुझे उस समय लगा थाः ऐसा और कहाँ हो सकता था? जिस समय देश भर के स्कूल और कॉलेज छात्र अपनी पाठ्यपुस्तकों और तयशुदा पाठ्यक्रम सामग्री से **बंधे** थे, हम खुद को बनते हुए इतिहास में आसानी से डुबा सके थे। सडबरी वैली में यह ज़रूरत नहीं थी कि हम तीन-चार साल इन्तज़ार करें कि यह सामग्री छन कर पाठ्यपुस्तकों में और छात्रों की रुचि के केन्द्र से बाहर पहुँचे।

जब सुनवाइयाँ समाप्त हुई, जीवन अपने ढर्रे पर लौटा। टीवी. सेट का क्या हो यह किसी को समझ ही नहीं आया। वह साल दो साल बेकार पड़ा रहा। एक दिन उसने काम करना ही बन्द कर दिया। हमें दूसरे को तब तक नहीं तलाशना पड़ा जब तक ईरानी अपहृतों का संकट न घटा।

12.

स्कूल के निगम

जब सामान रुचि रखने वाले साथ मिलते तो अक्सर स्वयं को संगठित करने के उपायों पर सोच-विचार करते। अपने रोज़मर्रा की कार्रवाई को निरन्तरता और स्थायित्व देने के लिए उन्हें किसी तरह की ढाँचे की ज़रूरत थी। हमने इस आवश्यकता की पूर्ति का एक सरल उपाय तलाशा।

“ ”

शेष स्कूलों में विशेष रुचियाँ विभागों या क्लबों के मार्फत होती थीं। हम जानते थे कि यह व्यवस्था हमें नहीं चाहिए। न जाने क्यूँ लगभग शाश्वत विभागों की छवि, जिनके साम्राज्यों की ईर्ष्यापूर्ण सुरक्षा की जाती हो, हमें आकर्षक नहीं लगते थे। यह परिकल्पना सडबरी वैली में सीखने और सिखाने प्रवाह से मेल नहीं खाती थी। साठ के दशक की शुरुआत में मैंने सेवन सिस्टर कॉलेज में से एक के भौतिकशास्त्र विभाग में पढ़ाया था। पचास साल पहले वह विभाग सम्भवतः कॉलेज का महत्वपूर्ण हिस्सा रहा होगा। एक चार मंजिला भवन में भौतिकशास्त्र विभाग एक मंजिल के समूचे आधे भाग में पसरा था! जब तक मैं वहाँ पहुँचा, कॉलेज के 1000 से कहीं अधिक छात्रों में पाँच भौतिकशास्त्र मेजर छात्र थे। और वे सभी सड़क पार स्थित सम्बद्ध कॉलेज में अध्ययन करते थे। इसके बावजूद विभाग एक मंजिल के अधिकांश भाग पर काबिज़ था, जिसके कमरे खाली पड़े थे। और तो और स्थान का इतना अभाव था कि कई नए भवन बनाए जा रहे थे। इसी तरह की विषमताः मैंने अनेकों बार दूसरी जगहों पर भी देखी।

ना, धन्यवाद, हमें विभाग नहीं चाहिए थे। तो क्या किया जाए? हमें एक नई रचना का विचार सूझा, स्कूल निगम। निगम का गठन स्कूल बैठक की अनुमति द्वारा, किसी परिभाषित उद्देश्य के लिए बनाया जाता था। निगम को स्वयं ही उसके लक्ष्यों की देखभाल करने का जनादेश दिया गया। वह स्कूल बैठक में तब ही लौटता अगर उसे पैसे या सुविधाओं की आवश्यकता पड़ती। रुचि रखने वाला कोई भी व्यक्ति निगम से जुड़ सकता था। निगम स्वयं को चलाता और प्रशासन सम्हालने के लिए एक कार्यकारी निदेशक को चुनता।

स्कूल निगम “विभागीय कामकाज” करने का औपचारिक वाहन बना। इसकी कई नवीन विशेषताएँ थींः यह सबके लिए खुला था; उसका संचालन लोकतांत्रिक तरीके से होता था; और जब उसका मिशन अनावश्यक बन जाता, तो वह सौम्यता से विस्मृति में लुप्त हो सकता था।

जब स्कूल निगम का विचार पहले-पहल जन्मा और स्कूल बैठक द्वारा अनुमादित हुआ, अचानक गहभागहमी बढ़ गई। सभी प्रकार के समूहों ने जो अब तक रुचि क्षेत्रों को सम्भालते रहे थे, तय किया कि उन्हें भी अधिकारिक दर्जा पाना है ~~हैं~~। कुछ ही महीनों में कला और कला सम्बन्धी आपूर्तियों का एक निगम बना, एक मूर्तिशिल्प तथा कुम्हारी का, एक संगीत का, एक गायन का, और दूसरे चर्मकार्य, कैम्पिंग, हाईकिंग, रसायनशास्त्र, कक्षा गतिविधियों, बढ़ईगिरी, दृश्यश्रव्य गतिविधियों, छायाचित्रकारी आदि, आदि के लिए बने। और हम अपने पथ पर बढ़ चले!

शुरुआत में लोगों ने सोचा कि निगम होने से अपनी पसन्दीदा परियोजनाओं के लिए वित्त पाने की सहूलियत होगी। जब लोग व्यक्तिगत स्तर पर पैसे की माँग करते तो स्कूल बैठक उनसे कड़ी पूछताछ करती और अक्सर उन्हें नाजायज़ मान खारिज कर देती। सो कई लोगों को लगा कि स्कूल निगम जैसे धाँसू सुनाई देने वाले निगम के द्वारा रखा गया अनुरोध अधिक वज़नदार रहेगा। यह धारणा जल्दी ही निरस्त हुई। वित्त के प्रारम्भिक अनुरोधों को वही कड़ा बरताव मिला और अधिकतर असफल रहीं।

कुछ समय में स्थिति व्यवस्थित हो गई और लोगों को निगमों में काम करने की आदत भी पड़ी। कई निगमों की राह विगत वर्षों में काफी उतार-चढ़ाव की रही। दृश्य-श्रव्य निगम का जब पहले-पहल जन्म हुआ, तो उसके बाद कुछ समय तक काफी कुछ सक्रियता रही; कई बच्चों की रुचि फिल्मों में, ध्वनि उपकरणों में, और खास तौर से स्कूल को अनुदानित सचल टीवी. कैमरा में थी। पर अन्ततः रुचि घटती गई। वर्षों तक निगम में एक ही सदस्य रहा, जो स्वयं कार्यकारी निदेशक चुन लेता था। इसमें कोई गड़बड़ी नहीं थी क्योंकि निगम में न्यूनतम आवश्यक सदस्यों की संख्या का कोई नियम नहीं था। पर जन दृश्य-श्रव्य निगम ने स्कूल बैठक में कोई अनुरोध रखा, तो हम सबको अपनी हँसी रोकने में काफी श्रम करना पड़ा, क्योंकि अकेला सदस्य खुद वो एक से अधिक तो बना ही नहीं सकता था। लम्बे अरसे तक चले इस सूखे के बाद लोगों की रुचि स्टीरियो उपकरणों में नमी, और तब जाकर नियम पुनः सक्रिय बना।

कुछ निगमों में कई ऊर्जावान सदस्य होते ~~है~~ हैं, तो दूसरों केवल एक। चर्मकार निगम के अच्छे दिनों में उसके तकरीबन पन्द्रह सक्रिय सदस्य थे, बढ़ईगिरी में हमेशा आधे दर्जन या कुछ अधिक सक्रिय सदस्य रहते हैं। छायाचित्र निगम में उतार-चढ़ाव होता ~~हैं~~ है, वह रुचि से लेकर उपेक्षा तक की लहरों पर सवार होता है ~~हैं~~। पाक निगम में हमेशा एक बड़ा सक्रिय

[

समूह मौजूद रहता ~~हैं~~ है।

कुछ निगमों ~~को~~ की प्रशासनिक ज़िम्मेदारियाँ होती हैं। संसाधन निगम आवश्यकता पड़ने पर बाहरी निर्देशकों की व्यवस्था करता है ताकि शिक्षकों के रिक्त स्थान भरे जा सकें। कभी-कभार इस तरीके से स्कूल से जुड़ने वाला व्यक्ति ~~रू~~ रुकता है और स्कूल का नियमित शिक्षक सदस्य बन जाता है ~~हैं~~। पुस्तकालय निगम स्कूल के पुस्तकालय को सम्भालता है, प्रेस निगम स्कूल प्रकाशनों को छापता और वितरित करता है ~~हैं~~।

निर्वाचन क्षेत्र घटने के कारण कई निगमों की मौत हुई है और उन्हें दफना दिया गया है ~~हैं~~। चर्मकारी का सबसे पहले अवसान हुआ। खेलकक्ष निगम कुछ सालों चला और तब विघटित हुआ। कालकोब्टी और ड्रैगन निगम स्कूल के सबसे बड़े प्रचलन की लहर पर सवार होने के बाद अपनी आवृत्ति पूरी कर समाप्त हुआ। विभिन्न कला सम्बन्धी निगम अन्ततः एक कला एवं शिल्प निगम में समा गए।

और एक खेलकूद निगम है, जो बीच-बीच में भर जाता है, पर फिर से अपनी राख से निकल आता है ~~हैं~~। इसकी शुरुआत उत्साही एथलीटों के एक बड़े समूह ने की थी, जिन्हें जल्दी ही समझ आ गया कि किसी खेल को खेलना, उसके उपकरणों की देखभाल करने, उनको खरीदने, उनकी फेहरिस्त बनाने आदि-इत्यादि की तुलना में कहीं अधिक आसान है। खेलकूद निगम खत्म हुआ। तब एक नई पीढ़ी आई, जिसने स्कूल बैठक से वादा किया वे सब कुछ सही तरीके से करेंगे। निगम का यह नया अवतार साल भर चला। तब खेलकूद निगम II समाप्त हुआ। कुछ सालों बाद एक नया समूह आया जो निश्चित रूप से, पूरी तरह से और सकारात्मक रूप से व्यवस्थित होने और खेलकूद अपकरणों की पूरी ज़िम्मेदारी वहन करने को प्रस्तुत था। स्कूल बैठक ने नई सामग्रियों के लिए कुछ राशि दाँव पर लगाई। साल भर बाद वे भी अपने पूर्वजों के रास्ते बढ़ चले। ***फिलवक्त/ फिलहाल*** हम खेलकूद निगम V पर काम कर रहे हैं। आशा शाश्वत होती है ~~हैं~~। सम्भव है कि बाह्य विस्तार में ही कुछ ऐसा हो जो व्यवस्था और संगठन को मखौल में तब्दील कर देता हो।

13.

विवेक का खाता

सभी खर्चे सूमहों के लिए नहीं होते। अक्सर लोगों को कुछ चीज़ें स्वयं के लिए भी खरीदनी पड़ती हैं। जब कोई कुछ पकाता है, या चमड़े की कोई वस्तु बनाता है ~~हैं~~, या फिल्म को डेवलप करता है, या चक्के पर कुछ भाँड गढ़ता है, तो उन्हें इस्तेमाल की गई सामग्री का पैसा चुकाना पड़ता है ~~हैं~~।

शुरुआत रसोईघर से हुई। पहले सभी अपना-अपना सामान लेकर आते। जल्दी ही समझ आया कि यह बेवकूफी है ~~हैं~~। न केवल ***समय*** काम बढ़ता, बल्कि लोग कुछ सामग्रियाँ लाना भूल भी जाते। सो हर बार एक व्यक्ति सबके लिए खरीददारी करने लगा।

यह व्यवस्था सामग्रियों के लिए कारगर थी। पर समस्या अब पैसों की होने लगी। चीज़ें लाना भूलने के बदले, बच्चे पैसे लाना भूल जाते। और जब वे लाते तो हमें लगता कि काश वे भूल गए होते, क्योंकि हमें नोटों और सिक्कों का हिसाब करना पड़ता और काफी राशि ढोनी पड़ती।

हमें नए विचार की ज़रूरत थी।

विचार प्रत्येक सत्र और ..... "व्यक्तिगत विवेक खाते" के रूप में आया। हमने एक सूक्ष्म बैंक बनना तय किया। हरेक का अपना खाता खुला जिसमें वह पैसे जमा करवा सकता था - जैसे एक बार में 10 डॉलर।

तब हमने एक ***आपूरक*** को तलाशा जो सस्ती रसीदें बेचता था, जो बिलकुल चैक सरीखी लगती थीं। और लो। व्यक्तिगत खाते चैक खाते बन गए। उनसे पैसे चैक देकर निकाले जा सकते थे। सप्ताह में एक बार कोई इन आन्तरिक चैकों की छँटनी करता और सभी खातों की बची राशि का हिसाब ***माँड*** देता। स्कूल में नकदी की ज़रूरत अब न रही।

दरअसल इस दिशा में हमारी पहली चेष्टा थोड़ी भिन्न थी। हमने व्यवस्था की शुरुआत हर साल, प्रत्येक व्यक्ति के खाते

“ ”

में 10 डॉलर जमा करने से की। हमने कहा, “यह पैसा स्कूल में खरीदी जाने वाली शैक्षणिक सामग्री के लिए है ~~हैं~~। क्योंकि हम बहुत निःशुल्क सामग्री नहीं देते, हम आपकी फीस में से 10 डॉलर हर छात्र के व्यक्तिगत खाते में डाल रहे हैं जिसका उपयोग उन सामग्रियों को खरीदने के लिए होगा जिसकी ज़रूरत उन्हें साल के दौरान पड़ेगी। अगर उन्हें अधिक पैसों की ज़रूरत पड़े तो उन्हें शेष राशि स्वयं जमा करवानी होगी।”

यह सब बड़ा तर्कसंगत सुनाई दिया था। पर समस्या यह थी कि वह कारगर नहीं रहा। जल्दी ही हमें “मुफ्तखोरी” के मनोविज्ञान का पाठ पढ़ना पड़ा।

जैसे ही सबको पता चला कि उनके पास जेब से निकाले बिना खर्चने के 10 डॉलर हैं, के उसे खर्चने के तरीके सोचने लगे। जिन बच्चों ने पहले जेब से धेला भी नहीं खर्चा था उनकी रुचि भी अचानक ऐसी चीज़ों में हो गई जिनकी कीमत लगती थी। पैसा महज इसलिए अछूता पड़ा रह जाए क्योंकि उसे किसी चीज़ खर्चने का तरीका आपको सूझा न हो, बेवकूफी माना जाने लगा।

अपने दर्शन के प्रति वफादारी के चलते हमने इन खर्चों के अनुमोदन की कोई व्यवस्था नहीं की थी। “अगर पैसा निजी विवेक के अनुसार खर्चा जाना था, तो वह वैसे ही खर्चा जाए।” और “इसे तय करने में लोगों को अपने सिर्फ अपने ही फैसले का उपयोग करना है ~~हैं~~।” बेशक हम यह गौर करने से बच नहीं सके कि लोग खरीद क्या रहे हैं। स्कूल के बही-खाते व फाइलें सबके लिए खुली थीं।

लगता है लोग उस समय शंकालु होने लगे जब पैसा रॉक संगीत के रिकॉर्ड खरीदने पर खर्चा जाने लगा। हम में से कई लोगों को लगने लगा कि यह शैक्षणिक आवश्यकताओं के विचार के साथ कुछ ज़्यादा ही खींचतान है ~~हैं~~। कुछ ही समय बाद हमने ध्यान दिया कि स्कूली सामग्री में एक नई अवधारणा नियमित रूप से खरीद हिसाब में आ रही हैः पित्ज़ा। लगता है ~~हैं~~ कि इससे धीरज टूट गया। स्कूल बैठक सदस्यों में अधिकांश ने तय किया नहीं होना चाहिए। 10 डॉलर के अप्रत्याशित लाभ को वापस ले लिया गया।

विवेक खाते सुचारू रूप से काम करते हैं। स्कूल निगम अक्सर सामग्रियाँ सदस्यों के निजी उपयोग के लिए थोक में खरीदते हैं। इनका भुगतान आन्तरिक चैकों से होता है ~~हैं~~। इससे हमें न केवल ~~हमें~~ चीज़ें अच्छी दरों पर मिलती हैं, बल्कि यह भरोसा भी रहता है कि ज़रूरत की पूरी सामग्री उपलब्ध होगी।

और हाँ, हमारे यहाँ भी ऐसे खाते हैं, जिनमें जमा से अधिक राशि निकाली गई हो! और बीच-बीच में चैक बेरंग लौटता है ~~हैं~~। उसी तरह जैसे बाहरी दुनिया में।

14.

पाक कला

तन्दूर में ताज़ी पकी ब्रेड की गन्ध स्कूल में पैठ रही थी। लोग धीमे-धीमे रसोईघर में आ, ब्रेड के तन्दूर से निकलने का इन्तज़ार करने लगे। चन्द मिनटों बाद मार्गरेट पार्रा सभी आगन्तुकों को मोटे गर्म टुकड़े काट कर बेचने लगी। आय पाक निगम को जानी थी। मक्खन कीमत में शामिल था।

विगत सालों में यह दृश्य अक्सर दोहराया गया। एक ब्रेड, पित्ज़ा केक, पाई, कुकीज़, बिस्किट व उन दूसरे व्यंजनों के साथ जो मार्गरेट के पिटारे से निकल हमारे प्रशंसक हमारे पेटों तक पहुँचते।

पर सभी पाने वाले नहीं होते थे। सहायकों की एक छोटी सेना हमेशा काम करने में मदद करती थी। कभी-कभार वे उससे उनके लिए कुछ खास पकाने को कहते, तो कभी वह खुद ही एक सूचना टाँग देती कि आगामी मंगलवार को फलाँ-फलाँ पकाने वाली हैं, और लोग उस पर हस्ताक्षर कर जुड़ते।

क्या दृश्य होता था! किसी दिन सात, आठ या नौ साल के छुटके जमा होते। तो किसी दूसरे दिन किशोरों की भीड़

“ ”

लगती। पर अधिकतर हर आयु के बच्चे साथ-साथ काम करते। वहाँ “कूल” बच्चों के साथ “पढ़ाकू” भी होते, कुशल हस्त बच्चों के साथ अनगढ़ काम करने वाले, जानकार और नौसिखिया। सबके मन में एक ही विचार होता, पकाना-बनाना सीखना और साथ ही कुछ और भी पाना। अगर वे सामग्री के पैसे चुका देते तो वे अपने श्रम के नतीजे को घर ले जा सकते थे - उदाहरण के लिए पारिवारिक रात्रि भोजन के लिए लसाग्ना, या कोई बढ़िया मिष्ठान्न। अन्यथा शेष स्कूल खाने का काम करता और पाक निगम का खाता कुछ और मुटाता।

मार्गरेट स्कूल के प्रथम सोलह वर्षों तक उसकी एक अनूठी संस्था रही, और तब सक्रिय जीवन से सेवानिवृत्त हुईं। उम्दा रसोइया और श्रेष्ठ शिक्षिका मार्गरेट की विशेषता थी उसकी समझदारी। एक मध्यपश्चिमी फार्म में जन्मी और पली मार्गरेट अमरीकी नौसेना अधिकारी की पत्नी थी। तीसरे और चौथे दशक में वह दुनिया भर में रही। और यह उसे स्वयं अपने बूते करना पड़ा, क्योंकि उन दिनों नौसेना परिवार को एक से दूसरे स्थान पहुँचाने में मदद नहीं देती थी। नौसेना के तमाम किस्सों, और नौसेना की भाषा की विशेषज्ञता के साथ मार्गरेट ने लोगों की गहन समझ भी अर्जित की थी।

बच्चों को उसका साथ हमेशा नाकाफी लगता। सभी मार्गरेट को चाहते थे। सबसे कठोर किशोर भी उसे मित्र मान दिल के करीब रखते थे। वह धुं धूम्रपान करती थी और उनकी बराबरी में घण्टों धुँआ उगलती थी। जब भी मार्गरेट को लगता कि वे हद पार कर रहे हैं, वह उन्हें डपटने से नहीं झिझकती थी। पर वह हमेशा उनका और उनके अन्तरों का सम्मान करती थी। छह साल के नन्हों को भी ठीक वैसा आचरण मिलता जितना युवा वयस्कों को। अगर उनमें से कोई सफाई में आलस करता तो उसे जल्दी ही मार्गरेट की ज़ोरदार आवाज़ में कोई फटकार सुनाई देती जो फौरन उसका होश दुरूस्त कर डालता।

मार्गरेट के लिए मिठाई का प्रमाण उसे खाने में ही था, फिर चाहे वह जीवन की बात हो या पाककला की। और खाना भी कैसा! उसके बनाए अनूठे व्यंजनों का कोई अन्त ही न था। स्कूल में हर मौसम, हर साल पाककला के केन्द्रीय गतिविधि बने रहने का कारण यह था कि उसके मार्गदर्शन में श्रेष्ठता, कड़ी मेहनत और दोस्ताना व्यवहार की एक परम्परा स्थापित हो सकी थी।

काम के दौरान मार्गरेट कोई बकवास नहीं सहती थी। हरेक को चाहे उनकी उम्र कुछ भी क्यों न हो, अपना भार खुद उठाना पड़ता था। सभी को सेव छीलने पड़ते, सामग्रियों को मिलाना पड़ता, तन्दूर को देखना पड़ता और बरतन-भाँडे और मेज़ साफ करने पड़ते। सभी चीज़ें निकालने और बाद में उन्हें यथास्थान रखने में मदद कर सकते थे। काम बेदाग रसोई में शुरू होता और उसके निरीक्षण में उसी हालत में समाप्त किया जाता।

मार्गरेट को आदर्श मान, अन्य लोगों ने भी पाक गतिविधियाँ सिखाई और आयोजित की हैं। जिन बच्चों को पाक निगम अकेले काम करने के लिए प्रमाणित कर देता है, वे अक्सर अकेले या समूह में अपना काम करते हैं। अच्छा पकाने वाले शिक्षक भी अपने सहायकों के साथ वहाँ जुटते हैं। कई बार सम्बन्धित पाक कक्षाओं की ृंखला साल भर में आयोजित की जाती हैः ब्रेड बनाना, चीनी भोजन, बुनियादी पाकशास्त्र इनमें से कुछ हैं।

कभी-कभार विदेशी स्वादों से परिचित शिक्षक भी अपना हाथ आज़माते हैं। कई बार तो बिलकुल ही विलक्षण। उदाहरण के लिए बारबरा को ही लें। वह एक समग्र पोषणविद् है हैं जो प्राकृतिक खाद्य - बेहद, बेहद प्राकृतिक - की शौकीन हैं। उसका शौक बाग किस्म का स्वस्थ भोजन है हैं। और मेरा मतलब यह नहीं कि खाने में कभी-कभार कप भर साबुत गेहूँ का आटा काम में लिया जाए या एक चम्मच शहद डाल खाने को “स्वस्थ” कह दिया जाए। बारबरा अतिरिक्त चीनी में विश्वास नहीं करती (या बिरले ही उसका उपयोग करती है), साबुत अन्न, ताज़ा फल, सब्जी, और आँच पर कम से कम पकाने में उसकी आस्था है हैं। उदाहण के लिए मैं कभी किसी दूसरे ऐसे इन्सान से नहीं मिला हूँ जो बिना चीनी डाले, जई के आटे से गाजर का केक बनाने की कल्पना तक करे।

बारबरा की दूसरों के साथ अच्छी बनती है। सो, जब बारबरा सूचना लगाती है कि वह किसी दिन कुछ पकाने वाली है तो बच्चे नाम लिखते हैं। उन्हें उसके साथ होना पसन्द आता है। कभी वे पाते हैं कि पकाने का पक्ष बेहद वास्तविक चुनौती है। एक दिन उसके सहायकों ने कुछ ऐसा बनाया जो देखने में चॉकलेट चिप कुकी सरीखा लगता था, पर वह

“ ”

जई/ओट/ सूरजमुखी के बीज/ सोया आटे से बनी कार्बो चिप कुकीज़ निकली, जिसमें न बेकिंग पाउडर था, न चीनी, न शहद, और स्वाद में कतई चॉकलेट चिप कुकी-सा नहीं लगता था।

हर साल जून के महीने में पुरानी विधि से हाथ से घुमाई जाने वाली मशीनों से आइसक्रीम बनाने का एक खास दिन होता है ~~हैं~~। बेशक, यह परम्परा मार्गरेट ने डाली थी, जिसने ***नन्हीं लड़की रूप में*** फार्म पर ~~इस~~ इसे बनाना सीखा था। जैसे ही उसकी सामग्री - शुद्ध क्रीम, बर्फ, सैंधा नमक - उतारा जाता है, उत्तेजना तेज़ी से फैलती है ~~हैं~~। बच्चे बारी-बारी मशीन को घण्टों-घण्टों घुमाते हैं, बड़े बच्चे बाद में जुटते हैं जब उसका हत्था घुमाना कठिन बन जाता है ~~हैं~~। तब जाकर आइसक्रीम जमती है, और ढाई बजे तक रसोई से लेकर भवन के आर-पार लम्बी कतार लग जाती है ~~हैं~~। कम ही चीज़ें होगीं जो एक गमी के दिन “इतनी मेहनत” से बनाई गई ताज़ा आइसक्रीम का मज़ा लेने के समतुल्य हों। रसोई को बाद में साफ करने की ज़रूरत भी इसका मज़ा कम नहीं करती।

15.

आयु मिश्रण

आयु को मिलाना सडबरी वैली का खुफिया अस्त्र है ~~हैं~~। मुझे आयु ***विभाज*** का सिर-पैर कभी समझ नहीं आया। असली दुनिया में लोग अपना जीवन साल दर साल आयु के अनुसार पृथक हो नहीं बिताते। सभी बच्चों की किसी खास आयु में एक सी रुचियाँ या क्षमताएँ भी नहीं होतीं।

बहरहाल, हमने जल्दी ही यह जान भी लिया कि बच्चे मिलते कैसे हैं जब हमने उन्हें उनको उनके ही उपायों पर छोड़ा। वे मिल जाते हैं। उसी तरह जैसे असली लोग।

जब मैंने अपना सैंडविच बनाने का सेमिनार किया तो मेरे पास बारह साल और अठारह साल के बच्चे थे, और साथ सभी दरमियाना आयु के भी। पाककला सभी सीमाएँ आसानी से पार देती है। सालों बाद जब मैंने आधुनिक इतिहास पढ़ाया तो मेरे पास दस वर्षीय एड्रियन था जो सत्रह साल तक के लड़के-लड़कियों के साथ बैठा था।

सिद्धान्त हमेशा एक ही होता हैः अगर किसी को कुछ करना होता है तो वे उसे करते हैं। रुचि ही महत्वपूर्ण है ~~हैं~~। अगर गतिविधि का स्तर ऊँचा हो, तो कौशल भी महत्वपूर्ण होता है ~~हैं~~। कई छोटे बच्चे कई चीज़ों में बड़ों से अधिक कुशल होते हैं।

जब कौशल और सीखने की गति/दर समान स्तर की न हों तब मज़ा शुरू होता है ~~हैं~~। बच्चे एक-दूसरे की मदद करते हैं। उन्हें यह करना ही पड़ता है, क्योंकि अन्यथा पूरा समूह ही पिछड़ ~~जा~~ सकता है ~~हैं~~। वे ऐसा करना भी चाहते हैं क्योंकि वे अंकों या सुनहरे सितारों के लिए स्पर्धा नहीं कर रहे होते। उन्हें मदद करना पसन्द आता है क्योंकि किसी दूसरे की मदद करना और उसमें सफल रहना बेहद सन्तोषप्रद होता है।

और यह देखना भी बेहद सुखदाई होता है ~~हैं~~। स्कूल में जहाँ कहीं मुड़ो, आपका सामना आयु मिश्रण से होता है ~~हैं~~।

और इसका एक भावनात्मक पक्ष भी है ~~हैं~~। किसी सोलह वर्षीय किशोरी/किशोर की मातृत्व या भ्रातृत्व की वास्तविक आवश्यकता की पूर्ति तब होती है जब वह देर-दोपहर एक काउच पर किसी छह साल के सटे बैठे बच्चे के साथ, शान्ति से पढ़ रहा हो। और यह उस छह वर्षीय बच्चे में सुकून और सुरक्षा की गहन भावना उस दुनिया में जगाता है ~~हैं~~ जहाँ वह हमेशा बड़े लोगों से घिरा रहता हो। जब बारह वर्षीय लड़की धैर्य से किसी सोलह वर्षीय नौसिखाए को कम्प्यूटर के बारे में सिखाती है तो उसमें आत्मगौरव पुष्ट होता है ~~हैं~~।

इसका एक सामाजिक पक्ष भी है ~~हैं~~। जब बच्चों ने पहले स्कूल-नृत्य का आयोजन किया तो मेरे मन में एक ऐसे कक्ष की छवि थी, जिसके चारों ओर भयभीत दीवार-फूल बने बच्चे खड़े हों। इस प्रक्षेपण कहते हैं। जूनियर हाई स्कूल में पहला स्कूल नृत्य ऐसा ही था, क्या सबका ही ऐसा न था? शिक्षक लड़कों को कमरे के एक ओर लड़कियों को दूसरी ओर खड़ा

“ ”

कर देते, और तब स्थितियाँ बद से बदतर होती जातीं।

पर बच्चों ने हम सबको अचरज में डाल दिया। सभी आए और सभी साथ-साथ नाचे। दस साल के अन्तर वाले जोड़े थे तो एक साल के अन्तर वाले भी। एक सात वर्षीय लड़का एक पन्द्रह साल की लड़की के साथ नाचा और जोड़े ने प्रथम पुरस्कार जीता। सबके लिए यह आनन्द का समय रहा। साल गुज़रते गए और सबसे छोटे बच्चे सबसे बड़ों में तब्दील हुए, पर यह रूख बरकारर रहा।

बड़े बच्चे अनुकरणीय आदर्श प्रस्तुत करते हैं। ऐसे आदर्श जो छोटों के लिए खुदा समान होते हैं। और ठीक उसी तरह विलोम-आदर्श भी। “मुझे खुशी है ~~हैं~~ कि जब मैं सात साल का था, तो मैं किशोरों की सोहबत में रहता था ~~हैं~~,” हमारे बेटे माइकल ने हमें अठारह साल की उम्र में एक बार कहा। “मैंने साक्षात् देखकर यह सीखा कि मैं क्या नहीं करना चाहता, सो मुझे अपने स्वास्थ्य और जीवन के साल बरबाद कर वे सारे प्रयोग नहीं करने पड़े।”

छोटे बच्चे बड़ों के लिए परिवार का आदर्श रखते हैं - छोटे भाई बहन या बच्चों की भूमिका में। जब शैरॉन पहले पहल स्कूल में चार वर्ष की आयु में आई, वह कुछ ही समय पूर्व अपने माता-पिता को खो चुकी थी। अपने प्रथम वर्ष में वह सबकी “बच्ची” बनी रही, उसे सभी पढ़कर सुनाते, उसके साथ खेलते, बातचीत करते, उसे गले लगा दुलारते। जब पूर्व छात्र अपने शिशुओं, या घुटनों रेंगने वाले नन्हों के साथ मिलने आते हैं, अक्सर किशोर छात्र-छात्राएँ उनके शिशुओं के साथ घण्टों खेलते देखे जा सकते हैं।

और सीखने का पक्ष भी है ~~हैं~~। बच्चों को दूसरे बच्चों से सीखना बेहद अच्छा लगता है ~~हैं~~। अव्वल तो अक्सर यह अधिक आसान होता है; बाल शिक्षक छात्रों की कठिनाइयों के वयस्कों से अधिक करीब होता है ~~हैं~~, क्योंकि हाल ही पहले वह इनसे गुज़रा होता है ~~हैं~~, उनके स्पष्टीकरण अमूमन अधिक सरल, बेहतर होते हैं। दबाव और फैसला कम होता है ~~हैं~~। और अपने पथप्रदर्शक के स्तर तक जल्द से जल्द पहुँचने का ज़बरदस्त प्रोत्साहन भी रहता है ~~हैं~~।

बच्चों को एक-दूसरे को सिखाना बहुत अच्छा लगता है ~~हैं~~। यह उनमें मूल्य वृद्धि और उपलब्धि का भाव भी जगाता है ~~हैं~~। और भी महत्वपूर्ण बात इससे वे जो पढ़ा रहे होते हैं, उसकी समझ भी बढ़ती हैं। उन्हें पहले बात को ठीक से छाँटकर समझनी पड़ती है ~~हैं~~। सो वे सामग्री से तब तक जूझते हैं जब तक वह उनके दिमाग में बिलकुल साफ न हो जाए, ***आगे की लाइन मिसिंग है।***

एक गुप्त हथियार के रूप में आयु मिश्रण अमोघ है ~~हैं~~। यह स्कूल में सीखने की शक्ति और सिखाने की शक्ति में भारी इज़ाफा करता है ~~हैं~~। यह ऐसा मानवीय वातावरण निर्मित करता है जो जीवन्त और वास्तविक हो। स्कूल की तुलना अक्सर एक गाँव से की जाती है ~~हैं~~, जहाँ सब मिलते-जुलते हैं, सब सीखते और सिखाते हैं, एक-दूसरे के लिए आदर्श पेश करते हैं, मदद करते हैं और डाँट-डपट लगाते हैं - और जीवन में साझेदारी करते हैं। मुझे लगता है कि यह बिम्ब अच्छा है ~~हैं~~।

वयस्क भी बच्चों से बहुत कुछ सीख सकते हैं। मैंने हान्ना ग्रीनबर्ग के “द बीच ट्री” के वर्णन से बेहतर कुछ नहीं देखा है ~~हैं~~। उनका आलेख यह रहाः

सफेदा का वृक्ष

इस पतझड़ की एक भव्य सुबह मैंने पहली बार सफेदा का पेड़ “देखा”। यह कथन उस व्यक्ति के मुँह से आश्चर्यजनक लग सकता है जो सडबरी वैली स्कूल में अठारह सालों से हो, पर यह सच है ~~हैं~~। सभी दूसरों की तरह मैंने भी इस वृक्ष को पतझड़ के मौसम में देखा है जब इसकी पत्तियाँ लाल हो जाती हैं और तब झड़ जाती हैं, ताकि उसकी शाखाएँ सर्दी भर ~~का~~ अपनी भव्य संरचना को दिखा सकें। मैंने ~~च~~ बसन्त में उसे फिर से पनपते भी देखा है जब प्रस्फुटित कोंपले पेड़ पर गुलाबी आभामण्डल बनाती हैं और धीमे-धीमें गहरी हरी होती जाती हैं। साथ ही मैंने छोटे बच्चों की अनेक पीढ़ियों को इस विशाल पेड़ पर चढ़ना सीखते और अधिकाधिक ऊँचे चढ़ते भी देखा है जो यदाकदा उसके शीर्ष तक पहुँच जाते हैं और घण्टों वहाँ बैठे रहते हैं। पर बस पिछले सप्ताह है मैंने उसे असल में “देखा” और सच में समझा है ~~हैं~~। एक वयस्क

“ ”

होने के कारण मैं पेड़ को वास्तव में अनुभव करना तब तक नहीं जानता था, जब एक नन्हीं बालिका ने मुझे यह सिखा न दिया।

एक दिन, शैरन ने दमकते चेहरे के साथ घोषणा की (जैसे कई अन्य नन्हें उसके पहले भी कर चुके थे।) कि उसने आखिरकार अकेले ही सफेदा के पेड़ पर चढ़ना सीख लिया है ~~हैं~~। उसने कहा कि जॉयस ने उसे यह सिखाया, और अब वह मुझे सिखाएगी। मैं उसके साथ गया क्योंकि मैं उसकी खुशी साझा करना चाहता था, और इसलिए भी कि वह बेहद खूबसूरत सुबह थी जिसमें जीवन्त रंग थे और आरामदेह धूप लाल और पीली पत्तियों की ओस पर झिलमिला रही थी।

शैरन ने मुझे दिखाया कि वह कैसे चढ़ जाती है और तब नीचे उतर आती है ~~हैं~~। और तब उसने मुझे ठीक यही करने को कहा। मैं पहले दर्जनों बच्चों को पेड़ पर चढ़ने में और उनसे भी ज़्यादा बच्चों की अटक जाने पर नीचे उतरने में मदद कर चुका था। पर खुद पेड़ पर चढ़ने की कोशिश मैंने कभी की ही नहीं थी।

शैरन आसानी से “ना” नहीं स्वीकारती, और मैं जानता था कि अगर मुझे अपने प्रति उसके सम्मान को बनाए रखना है ~~हैं~~। तो मुझे उसके लिए प्रदर्शन करना ही होगा। उसने बड़े धीरज से और साफ-साफ, मुझे एक-एक कदम द्वारा पेड़ पर चढ़ना और उतरना सिखाया, और मैंने पहली बार ऐसा किया।

जब मैं पहले स्तर तक पहुँचा तो मैं उस मचान तक पहुँचा। मैं उसके सौन्दर्य से दंग रह गया। मैं उन विशाल शाखाओं, उस आरामदेह जगह और उस विस्मय की भावना का वर्णन तक नहीं कर सकता जिसने मुझे दंग कर दिया। इतना कहना ही पर्याप्त है कि मुझे लगा कि मैंने पेड़ को पहली बार “देखा” है ~~हैं~~। हम वयस्क खुद को बड़ा ज्ञानी मानते हैं और सोचते हैं ~~है~~ कि बच्चों की सीखने और सिखाए जाने की ज़रूरत है ~~हैं~~। पर इस मामले में मैं शर्त बद सकता हूँ कि एस.वी.एस. को कोई भी बच्चा भव्यता के प्रति हमारे अज्ञान और असंवेदनशीलता से हैरान हो जाएगा जो हमारे इर्द-गिर्द फैली है ~~हैं~~। और जिसकी हम उपेक्षा करते हैं। शैरन अच्छी शिक्षिका थी और मैं हमेशा जो सिखाया उसके प्रति आभारी रहूँगा।

16.

खेलकूद

दिन ब दिन, माह दर माह, हमारी आँखों के समक्ष क्रमशः एक गाँव आकार ले रहा था। कला कक्ष से हथियाई गई बड़ी मेज़ पर प्लास्टिसीन के नमूने लगभग असली लगते थे।

अक्सर, छह या अधिक बच्चे मेज़ के गिर्द घण्टों झुके रहते, लगातार बोलते, चहकते वे आप जिन भी, वस्तुओं की कल्पना कर सकते हैं उनकी लघु प्रतिकृतियाँ बनाते होते। घोड़े, पेड़, मोटर गाड़ियाँ, ट्रक, पशु, बाड़े, लोग - सब कुछ। उदाहरण के लिए एक कार के हटाए जा सकने वाले हुड के नीचे एक सम्पूर्ण “मोटर” था। और सब कुछ इतना छोटा कि मेरी हथेली पर रखा जा सके। उँगली भर लम्बे लोगों के कपड़े और नाक-नक्शा भी। घरों की छतों पर टाइलें थीं, दीवारों पर दरवाज़े, और कमरों के अन्दर मेज़-कुर्सियाँ।

सब कुछ प्लास्टिसीन का बना हुआ था, उसे गूँथ और बेल कर आकार देकर। यह बड़ा खेल था। यह खेल दो सालों तक चला।

किसी ने, उदाहरण के लिए, दूर-दूर तक यह नहीं सुझाया कि ये आठ से चौदह साल के बच्चे (अधिकांश लड़के) कला “कर” रहे हैं। यह विचार ही उन्हें नाराज कर देता। किसी शिक्षक मदद नहीं चाही गई, न दी गई। *सम्भागियों* के लिए यह खेल था। गम्भीर, तन्मय, खेल, सीमाहीन आनन्द।

स्कूल की प्रत्येक पीढ़ी के अपने गम्भीर “क्लब” होते हैं। इसकी शुरुआत अमूमन नौ या दस साल के बच्चों, और उनके साथ लटके सहे जाने वाले कुछ छुटकों के साथ होती है और प्रत्येक नए समूह के लिए साल-दो साल जारी रहती है ~~हैं~~। क्लब होता है ~~हैं~~। और बेशक उसके साथ क्लब हाउस भी। पहले यह जंगल में एक टूटी-फूटी झोंपड़ी थी, जब तक वह

“ ”

धराशायी न हो गई। उसके बाद क्लब हाउस अस्तबल के एक कमरे में रहा। तब मुख्य भवन की एक बड़ी कोठरी में। उसके भी बाद, जब अग्निशमन नियमों के कारण वह वर्जित हुआ क्लब हाउस किसी भी “गुप्त” मैं में बन जाता ज़रूरत पड़ने पर वह काल्पनिक दीवारों और छत से घेर दिया जाता। उसके लिए फर्नीचर लुकछिप कर लाना पड़ता - शायद कोई पुरानी दरी या कालीन, एक कुर्सी, एक मेज़ उसके कर्मचारियों ईजाद करने पड़ते, योजनाएँ बनाई जातीं, जासूस भेजे जाते, चौकीदार तैनात किए जाते। साज़िशों की दुनिया रची जाती, जिसमें पेचीदगियों की भरमार हो। इससे जुड़े बच्चे हमेशा व्यस्त रहते, हमेशा दत्तचित्त रहते।

स्कूल में खेलकूद गम्भीर मामला है हैं। मुझे लगता है कि खेलना बच्चों के साथ उन वयस्कों के लिए भी गम्भीर मामला है जो खेलना भूले नहीं हैं। पेशेवर शिक्षक अक्सर खेल से काफी परेशान होते हैं, ज़्यादातर इसलिए क्योंकि बच्चे स्कूली काम में जितनी ऊर्जा और बुद्धिमानी लगाते हैं, उससे कहीं अधिक खेलकूद में। कभी-कभार स्थिति को अधिक स्वीकार्य बनाने के लिए शैक्षिक मनौवैज्ञानिक “सीखने” में खेलकूद के मूल्य पर कुछ लिखते हैं। उदाहरण के लिए कि इनसे संचालन कौशल, या रचनात्मक रूप से समस्या समाधान या कुछ दूसरे जायज़ सुनाई देने ठप्पे के साथ सीखा जा सकता है।

सच तो यह है कि सडबरी वैली के जीवन का बड़ा हिस्सा खेल ही है हैं। और यह यहाँ सीखने के प्रमुख घटकों में एक है हैं। पर जो सीखा जाता है हैं वह पाठ आप जो सोच सकते हैं है उससे भिन्न होता है हैं। जो सीखा जाता है हैं वह है हैं हाथ में उठाए गए काम पर अपनी सीमाओं की उपेक्षा कर एकाग्रता और ध्यान केन्द्रित करने की क्षमता। कोई थकान नहीं, कोई जल्दबाज़ी नहीं, किसी गरमागरम विचार को कुछ दूसरा करने की विवशता में, बीच में छोड़ देने की दरकार नहीं। यह “पाठ” आजीवन बना रहता है।

स्कूल के अधिकांश बच्चे, खासकर छोटे बच्चे, खेल में इतने मगन रहते हैं कि वे दिन भर खाना-पीना या आराम करना तक भूल जाते हैं। दोपहर ढलने तक वे ढेर सा खाने और रात को गहरी नींद के लिए तैयार होते हैं। वे देर तक मेहनत-मशक्कत जो कर चुके होते हैं।

जितना विस्तृत खेल और उसके लिए आवश्यक साजो-सामान होता है हैं उसके हिसाब से वह, कम करके कहें तो, सस्ता ही होता है हैं।

जब हम स्कूल खोलने की तैयारी कर रहे थे, उस समय हमने घण्टों तक अपने छोटे से बजट को हर तरह के आवश्यक खेल उपकरणों, खासकर छोटे बच्चों के खेल उपकरणों के लिए आवंटित करने पर सोच-विचार किया। हमारे पास प्रारम्भ में वे वही सब था जो आप नर्सरियों, किंडरगार्टन और मनोरंजन केन्द्रों में अमूमन पाते हैं।

जब प्रथम वर्ष गुज़रने लगे, हम अविश्वास से भरे देखते रहे। वे उपकरण लगभग अप्रयुक्त पड़े रहे। जो कुछ काम में लिया भी जाता उसका उपयोग भी उसके प्रयोजन से बिलकुल भिन्न प्रयोजन के लिए।

बच्चे जिन मुख्य उपकरणों का प्रयोग करते हैं, वे हैं कुर्सियाँ, मेज़ें, कमरे, अल्मारियाँ और खुला स्थान, जहाँ जंगल, झाड़ियाँ, चट्टाने और गुप्त कोने हैं। और उनका प्रमुख औज़ार होता है कल्पना।

बारह वर्ष यों ही पड़े रहने और बीच-बीच में दान से बढ़ने के बाद, हमारे खेल-खिलौनों का तीन चौथाई हिस्सा डिब्बों में रखकर दुछत्ती पर चढ़ा दिया गया। वह सब अब वहीं धरा है। दुछत्ती सूखी जगह है अतः शायद वह सब लम्बे अर्से तक वहाँ बचा रहेगा।

कुछ अपवाद भी हैं। बड़े बच्चे बोर्ड खेल खेलते हैं जिन्हें वे घर से लाते हैंः “मोनोपोली” वे दिनों-दिन खेलते हैं। “रिस्क” का चलन चार वर्षों तक रहा और उसने खिलाड़ियों को भूगोलविद और सैन्य रणनीतिज्ञ बनाया। “डन्जन्स एण्ड ड्रैगन” हरेक खिलाड़ी के सहायक सामग्री के भण्डार के साथ जिन्हें सावधानी से बनाया जाता था, निजी सम्पत्ति थी। लगता है कि “डी एण्ड डी” बाहरी लोगों को अधिक सह्य लगता था क्योंकि इसमें लोग “सीखते” थे - उदाहरण के लिए मध्ययुगीन जीवन के बारे में।

यहाँ हम खेल को गम्भीरता से लेते हैं। उसमें हस्तक्षेप की बात हम सपने तक में नहीं सोच सकते। सो यह हर आयु

में पनपता है हैं। और जो स्नातक स्कूल छोड़ बाहरी दुनिया में कूच करते हैं वे यह जानते हैं कि वे जो कुछ कर रहे हैं। उसे अपना सर्वस्व कैसे दिया जाए और उन्हें याद रहता है कि कैसे हँसी और जीवन को कैसे गले लगाया जाए।

17.

पुस्तकालय

मुझे लगा कि पीली टेप पर हाथापाई की नौबत आ जाएगी। स्कूल पुस्तकालय को व्यवस्थित करने की लम्बी-लम्बी बैठकों की कड़ी की यह एक और बैठक थी। पॉला, जो हमारी पुस्तकालय प्रभारी भी थी, अपने पक्ष को गर्मजोशी से रख रही थी।

"छोटे बच्चों की किताबों को चिह्नित होना होगा। उन पर पीली टेप लगी होनी चाहिए ताकि आसानी से पहचानी जा सकें।" पॉला अनुभवी सार्वजानिक स्कूल पुस्तकालय अध्यक्ष रह चुकी थी और सोच रही थी कि उसे हमारे साथ कुछ नया करना चाहिए। पर पुरानी आदतों से पिण्ड छुड़ाना काठिन होता है हैं।

"हमें उसकी क्या ज़रूरत है?" मैं पूछता रहा। क्या हमें यह लगता है कि बच्चे गलती से वयस्कों की कोई किताब उठा लेंगे।

बहस चलती रही। पॉला को डर था कि बच्चे अगर संयोग से कोई ऐसी किताब उठा लेंगे जो उन्हें कठिन लगे तो हतोत्साहित हो जाएँगे। उसकी नज़र में वयस्कों की दुनिया छोटों के लिए डरावनी जगह है, और स्कूल को उन्हें उससे सामना-सामना होने से अपनी कुंठा और कष्ट से बचाना चाहिए।

हममें से अधिकांश के लिए पीली टेप बच्चों को अपनी महत्ता दर्शाने का एक और प्रतीक था। इस बात का एक और उदाहरण कि हम वयस्क वास्तविक दुनिया पर काबिज होने और उससे जीत लेने की बच्चों की दृढ़ इच्छा शक्ति को कितना गलत पढ़ लेते हैं।

महीनों की गुरु-गम्भीर बहसबाजी के बाद आखिरकार मत संग्रह किया गया। पीला बिल्ला हारा। पॉला ने इसके फौरन बाद स्कूल खुलने के पहले ही त्यागपत्र दे दिया। उसने पुस्तकालय को क्रियाशील कभी देखा ही नहीं।

खैर, दरअसल "क्रियाशील" नहीं। बल्कि कहें "निष्क्रियाशील"। हमारे लिए पुस्तकालय का विचार सरल थाः वह एक उम्दा निष्क्रिय संसाधन है हैं, ज्ञान का ऐसा सागर जहाँ सभी ज्ञान पिपासु डुबकी लगा सकते हैं। (इस मामले में मानक मुहावरे पूरी तरह लागू होते हैं।)

हमने जो स्कूली पुस्तकालय देखे थे उनका सबसे दुखद पक्ष था उनकी अनुर्वरकता। अव्वल तो हम यह नहीं चाहते थे कि सभी किताबें एक अलग कक्ष या हिस्से में हों जिसे "पुस्तकालय" कहा जाए। उसमें मुर्दाघर की ध्वनि थीः एक ऐसी अलग-थलग जगह जिसमें सबको बिना हिलेडुले बैठना और फुसफुसाना पड़ता है हैं। जहाँ लोग सावधानी से चलते हैं और पुस्तकालय प्रभारी की पैनी नज़र से भयभीत रहते हैं। हम चाहते थे कि किताबें हर जगह हों, आरामदेह, सुखद, सुलभ, जिन्हें उलटा-पढ़ा जा सके, न कि सिर्फ अपने नाम "ले जाया" जा सके।

हम चाहते थे कि बच्चे किताबों को खुद आलों से निकालें। ढेरों किताबों को। हमें यह डर नहीं था कि पुस्तकालय अस्तव्यस्त हो जाएगा।

पर हमारी प्रमुख इच्छा यह थी कि हमारे पास ढेरों अच्छी किताबें हों। ऐसी जिन्हें लोग पसन्द करें और जिनकी उन्हें परवाह हो।

इसके लिए हमें एक नई तरह की अधिग्रहण नीति बनानी पड़ी। सामान्य तरीका हमें सही नहीं लगा। हमें इस बात पर कभी पूरा विश्वास नहीं हुआ कि जिस व्यक्ति की पुस्तकों में रुचि हो वह ज्ञान के प्रत्येक क्षेत्र की सच में रोचक पुस्तकों को खुद ब खुद तलाश लेगा। हम चाहते थे कि प्रत्येक क्षेत्र से प्रेम करने वाले उसके नायाब नगीना को पा सकें।

“ ”

पुस्तकालय पुस्तकालय

सो ऐसी व्यवस्था ही की गई। यह बड़ा आसान और सस्ता रहा। हमने लोगों से अनुरोध किया कि वे व्यक्तिगत पुस्तकालयों का कुछ भाग हमें दान दें। ये वे किताबें थी जिन्हें लोगों ने खुद सालों में चुना था, जिन्हें वे इसलिए पसन्द करते थे क्योंकि वे रोचक व उपयोगी व विशिष्ट थीं। सडबरी वैली का पुस्तकालय “विशेषज्ञों” की फौज की मदद से गढ़ा गया और अब भी गढ़ा जाता है ~~हैं~~।

बेशक, सभी किताबें अच्छी नहीं हैं। क्या किसी भी पुस्तकालय में होती हैं? किसी भी किताब को उठा लें, और जल्द ही आप उसकी अच्छाईयों पर उतनी ही गरमागरम बहस छेड़ सकते हैं जितनी पीली टेप को लेकर हमने की थी। परन्तु कम से कम हमारी किताबें किसी के द्वारा पढ़ी तो गई थीं, और जिन्होंने उन्हें चुना था, उनके लिए वे मूल्यवान तो थीं।

जल्दी ही स्कूल भवन किताबों से भर गया। साल दर साल कक्ष दर कक्ष हमारे नए अधिग्रहण को रखने के लिए नए आले जुड़ते रहे।

दरअसल तो यदाकदा हम किताबों के सागर में लगभग डूब ही जाते हैं। तब हम किताबों की बिक्री आयोजित करते हैं।

कभी-कभार हमें कुछ ज़्यादा ही दान मिल जाता है ~~हैं~~, ऐसी पुस्तकें मिलती हैं जो कुछ अधिक ही रहस्यमय होती हैं। जैसे मैसाच्यूसेट्स सामान्य कानूनों की पूरी ृंखला, जिसके साथ विस्तृत टीकाएँ भी हों। पीली टेप सहित या उसके बिना भी यह हमारे लिए उलटन-पलटने की सामग्री नहीं थी। (ना ही गम्भीर पठन सामग्री।) या फिर कई बेहद उम्दा तकनीकी वैज्ञानिक पत्रिकाएँ भी हमारे लिए उपयुक्त न थीं। हमें ऐसी पुस्तकों के निपटारे की व्यवस्था या तो बेच कर या फिर उन्हें किसी को देकर करनी थी। पर हम जो कुछ पाते हैं उसका अधिकांश हिस्सा आलों में रखते हैं। और बच्चे उन्हें उलटते-पलटते रहते हैं।

बेशक, जब किसी को ऐसी किताबों की ज़रूरत पड़ती है जो हमारे पास न हों, तो हम उन्हें खरीदते भी हैं। ऐसे में वे विशेष व्यय बन जाते हैं।

सातवें दशक के मध्य में हमें डाक से राज्य शिक्षा विभाग का एक पत्र मिला। उसमें एक चैक था। हुआ योंकि अंकल सैम ने शिक्षा की मदद की अपनी कई उदार चेष्टाओं में से एक में देश भर के स्कूलों को किताबें खरीदने के लिए वित्त देने का निर्णय लिया। अनुमान है कि कांग्रेस (अमरीकी संसद की राज्य सभा) ने हिसाब लगाया होगा कि किताबें अच्छी होती हैं और अगर स्कूलों की अल्मारियों में अधिक किताबें हो तो वे बेहतर हो सकेंगे। मुझे लगता है कि प्रकाशकों ने इसकी शर्तिया विरोध नहीं किया होगा।

बहरहाल स्वर्ग से हमारे लिए यह अमृत था, फिर चाहे हमें उसकी ज़रूरत थी या नहीं। हमारी पहली प्रतिक्रिया थी कि चैक वापस लौटा दिया जाए, पर यह समझदारी तो न थी। “उपहार में मिले घोड़े के...” सो हमने इस राशि को स्कूल बैठक में आने वाले पुस्तकों के विशेष व्यय वाले अनुरोधों के लिए किया।

राष्ट्रपति आते और जाते हैं। राजनीति बाएँ से दाएँ, आगे-पीछे डोलती है ~~हैं~~। पर चैक आते रहते हैं।

और पीली टेप का क्या हुआ?

हमने आखिरकार कुछ छूटों का उपयोग किया। जो बच्चे स्वयं को स्पष्टतः नन्हे-मुन्नों के लिए होने की घोषणा करती थीं, उन्हें ऊपरी आलों या सबसे दूरस्थ कक्षों में नहीं रखा जाता। आखिर उन्हें छोटे बच्चों की पहुँच में होना था, ताकि सीढ़ी की मदद से उन तक पहुँचने की ज़रूरत न हो।

पर टेप नहीं लगाई गई। ऐसी सम्भावना नहीं थी कि कोई वयस्क किसी नन्हें को बिना टेप लगी किताब पढ़ते देख कहे, “इसके साथ क्या कर रहे हो श्रीमान।”

और यह सम्भावना भी नहीं रही कि कोई बड़ा छात्र “बच्चों की किताब” को चोरी-छिपे देख रहा हो, उसे किताब पर चिपके टेप के कारण शर्मिन्दा होना पड़े।

“ ”

18.

पर्याप्त समय

सडबरी वैली में घण्टा नहीं बजता। कोई “कालांश” नहीं होते।

किसी भी गतिविधि में लगाया गया समय भागीदारों के बीच से ही उभरता है ~~हैं~~। यह हमेशा उतना होता है ~~हैं~~ जितने की उसे इच्छा और आवश्यकता हो। यह हमेशा समय की सही मात्रा होती है।

स्कूल सुबह 8.30 खुलता है और शाम 5 बजे ~~बंद~~ बन्द होता है ~~हैं~~ यह असामान्य नहीं कि आप किसी को सुबह 9 बजे डार्करूम में घुसते देखें, और उसे समय का ध्यान ही ~~नहीं~~ न रहे और वह काम पूरा कर 4 बजे बाहर निकले।

जेकब चाक के सामने बैठता है ~~हैं~~। वह तेरह साल का है ~~हैं~~। सुबह 10.30 का समय है ~~हैं~~ वह तैयारी करता है और भाँड बनाने लगता है। एक घण्टा गुज़रता है ~~हैं~~। दो घण्टे। उसके चारों ओर गतिविधि चलती रहती हैं। उसके दोस्त उसके बिना ही सॉकर खेलना शुरू कर देते हैं। तीन घण्टे। 2.15 पर वह चाक से उठता है। आज उसके पास अपने श्रम को दर्शाने के लिए कुछ भी नहीं है। एक भी पात्र उसके मन-माफिक नहीं बन पाया है।

अगले दिन वह फिर से कोशिश करता है। इस बार वह 1 बजे उठता है, जब वह तीन ऐसे नमूने बना चुकता है जो उसे पसन्द आते हैं।

थॉमस और नेथन, दोनों ग्यारह साल के, कालकोठरी और ड्रेगन का खेल सुबह 9 बजे शुरू करते हैं। शाम 5 बजे तक भी उनका खेल समाप्त नहीं होता। ना ही अगले दिन शाम पाँच बजे तक। तीसरे दिन दोपहर 2 बजे जाकर वे खेल खत्म करते हैं।

नौ वर्षीय शर्लो एक कुर्सी में गुड़मुड़ी बन एक किताब पढ़ना शुरू करती है। घर पर भी वह पढ़ना ज़ारी रखती है। और अगले तीन दिनों तक, जब तक वह उसे खत्म नहीं कर देती।

डैन एक पतझड़ की सुबह पहली बार अपना काँटा तालाब में डालता है ~~हैं~~। तीन साल गुज़र जाते हैं, वह अब भी मछली ही पकड़ना जारी रखे है ~~हैं~~।

सडबरी वैली में समय कोई वस्तु नहीं है ~~हैं~~। उसका बुरा या अच्छा “उपयोग” नहीं होता। उसे “बरबाद” या “बचाया” नहीं जाता।

यहाँ समय जीवन की आन्तरिक लय का नाप है, मय अपनी पेचीदगियों के साथ। जैसे-जैसे प्रत्येक घटना लड़ उभरती है हैं, उस लड़ के लिए उपयुक्त समय उसके समय उसके साथ बीत जाता है ~~हैं~~।

खाने का कोई समय नहीं होता। या कहें सब समय खाने का समय है ~~हैं~~। साढ़े दस, बारह, ढाई, पाँच। *विनी द पूह* के पास एक दीवार घड़ी थी जो जाने कब से ग्यारह बजे पर अटक कर रूक गई थी। उसके लिए, जो हमेशा भूखा रहता था, ग्यारह बजे का समय हमेशा ही “कुछ थोड़ा बहुत” खाने का होता था, और किसी समय ग्यारह बज सकते थे।

साल दर साल स्कूल में मैंने प्रत्येक बच्चे के विकास को समय की उसकी निजी समझ से खुलते-प्रस्फुटित होते देखा है ~~हैं~~। मैंने बच्चों को आगे कूदते, और तब अनन्त लगने वाली देर तक ठीक उसी स्थान पर जमे देखा है ~~हैं~~। मैंने लोगों को स्वप्न देखते और तब धीमे-धीमे धरती पर वापस लौटते देखा है ~~हैं~~।

अगर छात्रों को अधिक समय की दरकार होती है तो हम उसे वह देते हैं। उन्हें स्कूल की चाभियाँ दे दी जाती हैं। कुछ सुबह जल्दी आते हैं ~~है~~, तो कुछ देर से जाते हैं, कुछ छुट्टियों और सप्ताहान्त में भी आते हैं।

स्कूल व्यक्तिगत लय के प्रति जो सम्मान दर्शाता है उसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता। यह **गारन्टी/** गारंटी देता है कि प्रत्येक छात्र “देर-सबेर” अपने अन्दरूनी स्व से सम्पर्क स्थापित कर लेगा। छात्र निजी समय के इस सम्मान के प्रति

“ ”

सचेत हैं। वे इस पर भरोसा करने लगते हैं, इसे कीमती मानते हैं। ना जाने कितनी बार मैंने बड़े किशोरों को यह कहते सुना है कि, “कुछ और से अधिक स्कूल ने मुझे स्वयं को तलाशने का समय दिया।”

अगर गहनता से ध्यान केन्द्रित हो समय का एहसास पूरी तरह विस्तृत हो जाता है ~~हैं~~। जब मैंने पहले-पहल रॉन्टजैन के उस आचरण के विषय में पढ़ा जो वह उस वक्त कर रहा था जब उसने बेधने वाली किरणों को आकस्मिक रूप से खोजा, जिन्हें बाद में “एक्स-रे” का नाम दिया गया तो मुझे उससे विस्मय हुआ। उत्तेजना और आवेगपूर्ण जिज्ञासा से भर इस नीरस और सामान्य भौतिकशास्त्री ने खुद को अपनी प्रयोगशाला में बन्द कर लिया अपना भोजन दरवाज़े के बाहर रखवाने लगा और सात दिन गुज़र जाने के बाद अपनी धरती हिला देने वाली रिपोर्ट के साथ ही बाहर निकला।

एक रचनात्मक जीनियस की छवि हमारी कहानियों और आख्यानों में पूर्ण एकाग्रता और समय के प्रति लापरवाही की छवि से जुड़ी होती है ~~हैं~~। “यह तो महान प्रतिभाओं के लिए है,” हम प्रशंसा के भाव से कहते हैं। हम सब अपनी-अपनी तरह से रचनात्मक प्रतिभाएँ हैं। हम सब में आवेगपूर्ण जुड़ाव की सम्भावना होती है ~~हैं~~, बाहरी दुनिया की घड़ियों की अनदेखी कर अपनी आँखें अपनी अन्दरूनी घड़ी पर गड़ा लेनी की आवश्यकता होती है।

स्कूल में सार्वजानिक समय की अनुपालना उतनी ही कठोर है, जितना ढीलापन निजी समय के लिए। यह सम्मान का मसला है ~~हैं~~। जब कई लोग किसी तयशुदा स्थान और समय पर मिलना तय करते हैं तब शिष्टाचार यह माँग करता है कि वे इस दायित्व को निभाएँ। उन्हें एक-दूसरे के समय का ध्यान रख समूह के लिए साझा समय निकालना पड़ता है ~~हैं~~।

स्कूल बैठक हर गुरुवार ठीक 1.00 बजे प्रारम्भ होती है ~~हैं~~। वहाँ मौजूद न रहना हो तो आने की ज़रूरत नहीं है, पर आना है तो समय से आओ। सभी कक्षाएँ निर्धारित समय पर होती हैं, अन्यथा होती ही नहीं। क्षेत्र भ्रमण तयशुदा समय पर शुरू हो जाते हैं, अन्यथा वे स्कूल में ही रह जाते हैं। जो देर से आता है वह छूट जाता है। जब दूसरों के साथ कोई सौदा तय हो जाता है तो निजी लय के लिए कोई स्थान नहीं होता।

स्कूल में समयहीनता का एहसास ही वह मुख्य कारण है जिसके चलते विभिन्न आयु के ~~लो~~ लोग इतनी सहजता से घुलमिल जाते हैं। यह चिन्ता कतई अप्रासंगिक लगती है कि जब व्यक्ति पैदा हुआ उसके बाद से कितने दिन या साल गुज़र गए हैं। छह साल के नन्हें, किशोर, स्नातक, शिक्षक, अभिभावक एक-दूसरे के सार तत्व से जो आयु को कुछ धारता ही नहीं, पूरी आज़ादी व खुलेपन से जुड़ते हैं। वे उस विलक्षण वैज्ञानिक नइल्स बोहर के किस्से कहते हैं जो दस साल बाद अपने सहकर्मी से मिलने पर, उसी वार्तालाप को जारी रख सकता था, जिस पर वह दस वर्ष पूर्व चर्चा कर रहे थे। सडबरी वैली में यह आख्यान सामान्य वास्तविकता है ~~हैं~~।

सडबरी वैली में सबके पास समय होता है ~~हैं~~।

19.

सीखना

सडबरी वैली हमें दूसरों से अधिक एक बात सिखाती है: विनम्रता। हर दिन हम अपने अज्ञान का सामना करते हैं ~~है~~, उससे जूझते हैं ~~है~~, और अपना सम्मान समर्पित करते हैं।

इस सबकी शुरुआत सीखने के बारे में सीखने से हुई थी। सालों पहले जब हम पहले-पहल क्षेत्र के क्षेत्र में प्रविष्ट हुए थे, हम सोचते थे कि हम लोग कैसे सीखते हैं, के बारे में कुछ जानते हैं।

कॉलेज में अध्यापन का प्रारम्भिक अनुभव मुझे स्पष्ट याद है ~~हैं~~। मैं अपना विषय जानता था और मैंने शिक्षाशास्त्र, मनोविज्ञान तथा विकास पर पोथियाँ पढ़ी थीं। मैं दुनिया के शीर्ष पर बैठा था - इतना “ज्ञानी,” छात्रों को कितना कुछ देने में सक्षम...

“ ”

वास्तविकता छोटी खुराकों में आई। अव्वल, तो मैंने पाया कि मेरे सामने बैठे वे आतुर, प्रसन्न नज़र आने वाले चेहरे भारी ऊब और उपेक्षा को छिपाने के मुखौटे हैं। तब मुझे पता लगा कि मैं जो कुछ कह रहा था उसका अधिकांश उनके पल्ले पड़ता ही नहीं था। “महत्वपूर्ण बिन्दु यह है,” मैं मैंने गुरु-गम्भीर बल दे कहा, “और यह ऐसी अर्न्तदृष्टि देता है जो पाठ्यपुस्तकें नहीं देतीं।” पर हाय, कोई फर्क न पड़ता। जब परीक्षा पुस्तिकाएँ वापस मिलतीं, तो पाठ्यपुस्तकों का सावधानी से रटा-रटाया पाठान्तर ही हमेशा मुझे मिलता।

मैंने और मेहनत की, और ज़्यादा पढ़ाः पर भाग्य सुधरा नहीं। मैंने पाया कि मेरे सहकर्मी भी जिस हद तक वे परवाह करते हैं उस हद तक इसी समस्या से जूझ रहे हैं। धीमे-धीमे मुझे समझ आया कि छात्र वह सब कतई नहीं सीखते, जो वे सीखना चाहते ही न हो, चाहे मैं उनके समक्ष कितना ही विनोद, कितना ही फुसलाने या धमकाने की चेष्टा क्यों न करूँ।

तब मैंने उस भयंकर सत्य को खोज लिया, कि दरअसल हम यह जानते ही नहीं कि लोग सीखते कैसे हैं, और जो वे सीख रहे हैं उसमें उनकी रुचि है भी या नहीं।

कई बार मुझे लगता है हमारे इर्द-गिर्द जो स्कूल हैं वे सम्राट और उसके नए वस्त्रों की कथा के दुनिया के सर्वश्रेष्ठ उदाहरण हैं। साल दर साल, वे स्वयं को ज्ञान का आपूरक, शिक्षा प्रदाता घोषित करते जाते हैं। और जब सारी युक्तियाँ असफल हो जाती हैं, घावों पर पैसों का प्लास्तर चढ़ाया जाता है ~~हैं~~।

पर इससे भी कोई फर्क नहीं पड़ता। बच्चे वह सीखते हैं जो वे सीखना चाहें, जब सीखना चाहें और जैसे सीखना चाहें बावजूद हमारे श्रेष्ठतम प्रयासों के।

सडबरी वैली में इस सच्चाई को हर समय काम करता देखता हूँ। उस रहस्य का ~~मैं~~ खुलासा मैं अब तक नहीं कर पाया हूँ कि वे यह दरअसल कैसे करते हैं।

स्कूल में हम यह ढोंग नहीं करते कि हम वह जानते हैं जो हम दरअसल जानते नहीं। हमारी भूमिका बच्चों के साथ उस समय खड़े रहने की है ~~हैं~~, जब प्रत्येक और हरेक बच्चा अपना भिन्न पथ चुनता है ~~हैं~~। हम उनकी मदद तब करते हैं जब वह मदद माँगता है ~~हैं~~। जब हमसे वह चाही नहीं जाती, हम उसे रास्ते से हट जाते हैं।

और उनके खूबसूरत मस्तिष्कों में हमें कैसी विविधता मिलती है हैं। पियाजे, अपने दिल को नोचो? सीखने के विभिन्न चरण? बोध के सार्विक चरण? ज्ञान अधिकरण के सामान्य पैटर्न? बकवास!

कोई भी दो बच्चे कभी भी एक-सा पथ नहीं पकड़ते। और कुछ भी दूर-दूर तक समान नहीं होते। प्रत्येक बालक इतना अनूठा, इस कदर असाधारण होता है ~~हैं~~, हम आश्चर्य से देखते हैं और हमारा मान भंग होता है ~~हैं~~।

सभी बच्चे सीखते हैं, हर समय। जीवन उनका सबसे बड़ा शिक्षक होता है ~~हैं~~। शिक्षक मण्डल के बी.ए, एम.ए, और पीएचडी धारी गौण अभिनेता।

बच्चे दूसरे बच्चों, पुस्तकों, उपकरणों तथा वयस्कों को अपनी समझ से उपयोग करते हैं। उनका मुख्य औज़ार है उनकी जिज्ञासा, जो उन्हें जानने, काबू पाने और समझने को प्रेरित करता है ~~हैं~~।

वे दुनिया को देखना सीखते हैं, क्योंकि उसे वे देखते हैं और उसमें ही होते हैं। वे पूरे दिन कमरों में डिब्बाबन्द बैठे नहीं रहते। वे लोगों से सम्बन्ध स्थापित करना सीखते हैं, क्योंकि वे दिन भर हर उम्र के लोगों के साथ होते हैं।

वे समस्याओं का समाधान करना सीखते हैं, क्योंकि उन्हें ऐसा करना ही पड़ता है ~~हैं~~। राष्ट्रपति ट्रमैन की मेज़ पर एक इबारत थी “द बक स्टॉप्स हियर।” और यह “हियर” प्रत्येक छात्र का निजी स्थान है ~~हैं~~। उनकी ज़िम्मेदारी उठाने को कोई दूसरा है ही नहीं।

बच्चों को देखना मुझे प्रतिदिन कुछ नया सिखाता है ~~हैं~~। उदाहरण के लिए ज़रा इस पर विचार करें। लोग कहते हैं, बच्चों को अपनी गतिविधियाँ चुनने की आज़ादी दें, और वे हमेशा ऐसा रास्ता चुनेंगे जिसमें सबसे कम अवरोध हों। वे कठिनाइयों का सामना करने वाला चरित्र कभी विकसित नहीं कर पाएँगे। जब लोग मुझसे यह कहते हैं, मैं हमेशा खुद

से (और यदाकदा ज़ोर से उनसे) कहता हूँ, "आपने हाल में किन बच्चों को देखा है ~~हैं~~?"

जो जीवन्त नमूने हैं उनमें तो ऐसा कतई नहीं होता। ज़्यादातर मौकों पर वे सर्वाधिक कठिनाइयों भरा ~~मग्~~ पथ चुनते हैं। जी नहीं, यह टंकण की भूल नहीं है ~~हैं~~। मैंने लिखा, "सर्वाधिक कठिनाइयों भरा पथ," और यही आशय भी मेरा था।

मैं सच में नहीं जानता कि ऐसा क्यों होता है ~~हैं~~, पर मैं इसे हर समय होता देखता हूँ। ऐसा लगता है मानो बच्चे अपने कमज़ोर बिन्दुओं को ऐसी चुनौती के रूप में देखते हैं, जिसका सामना करने पर वे विवश हों।

सो, अदक्ष बच्चा दिन भर खेल खेलता है। गणित के भय से त्रस्त बच्चा दिन भर गणित और बीजगणित पढ़ता है ~~हैं~~। एकान्तप्रिय बच्चा मिलने-जुलने की कोशिश करता है; मिलनसार बच्चा अकेले रहना सीखता हैं। हरेक कहानी महा संघर्ष और लौह संकल्प की गाथा है ~~हैं~~।

और तब बहुआयामी/ सम्पूर्ण होने का मसला भी है ~~हैं~~। "आपको उन्हें कई चीज़ों के बारे में थोड़ा-थोड़ा सीखने पर बाध्य करना पड़ता है ~~हैं~~। बच्चों को स्कूल में सबके विषय में जानकारी देना आवश्यक है ~~हैं~~। अगर आप उन्हें उनके हाल पर छोड़ दें, तो वे बेहद संकीर्ण बन सकते हैं।"

इस शिकायत का एक भी पक्ष मुझे कभी समझ नहीं आया है ~~हैं~~। अव्वल तो इसमें अहंकार है ~~हैं~~, मानो आप या मैं या विशेषज्ञों का कोई समूह मानवीय ज्ञान के अथाह सागर में से बून्दों का कोई आदर्श मिश्रण चुन सकते हैं, जिसे सबको पीने की ज़रूरत हो। तब इसका बचकानापन है।

मानो, आज के इस देश के बच्चे, जो मल्टी मीडिया के हमले के युग के हैं, वे दिन-रात उस सबकी अधिक जानकारी पाते न हों, जिसकी हम कल्पना तक कर सकते हों। जो लोग संकीर्णता की शिकायत करते हैं, ठीक वे ~~मे~~ ही अगले दिन अत्यधिक जानकारी, आवश्यकता से अधिक उद्दीपन की शिकायत करते मिलते हैं। और अन्त में यह धारणा भी है कि संकीर्ण जानकारी वाला होना बुरा है ~~हैं~~। किसके लिए बुरा है ~~हैं~~? मोत्ज़ार्ट के लिए? आइंस्टाइन के लिए? विल्बर तथा ~~ऑर्स~~ ऑरबिल राइट के लिए? हमारे महानतम राष्ट्रीय नायकों का गुणगान उनके किसी न किसी मुद्दे पर उनके एकनिष्ठ समर्पण के कारण ही किया जाता है ~~हैं~~? क्या यह सम्पूर्ण बहुआयामी होना है ~~हैं~~?

बात लौटकर विनय/विनम्रता पर आती है। हममें से सबसे चतुर, हमें से सबसे अहमक से कुछ ही कम बेवकूफ होते हैं। वे जितना सीखना हो उतना सीखते हैं और उससे अधिक भी, बशर्ते हम उनमे हस्तक्षेप न करें, जब तक वे इसकी याचना हमसे न करें।

20.

मूल्यांकन

एक दिन मैं एक छह वर्षीय बच्चे के साथ गेंद फेंकने-पकड़ने का खेल कर रहा था। हर बार जब वह गेंद फेंकता, और हर बार जब वह मेरी फेकीं गेंद पकड़ने की कोशिश करता, मैं कहता, "बढ़िया फेंकी," "वाह, क्या कोशिश है ~~हैं~~।" अचानक उसने गेंद गुस्से से मेरी ओर फेंकी और चीखा, "मैं आपके साथ अब नहीं खेलूँगा, आप झूठ बोलते हैं। मैंने खराब गेंद फेंकी, बिलकुल बढ़िया नहीं थी, और आप बड़े झूठे हो।"

बेशक वह सच कह रहा था। स्कूल में यह मेरे लिए एक और महत्वपूर्ण पाठ था।

सडबरी वैली में अंक (ग्रेडस) नहीं दिए जाते। छात्र अपनी प्रगति नापने के पैमाने खुद तय करते हैं। बाहरी दुनिया के श्रेष्ठतम आदर्शों से अपनी तुलना कर।

गणित के छात्र जानते हैं ~~है~~ कि वे गुणा और भाग, और शेष गणितीय संक्रियताओं पर कब काबिज हो गए हैं ~~है~~ः या तो वे सवालों के ~~सच्ची~~ सही हल तक पहुँचते हैं या नहीं। अगर उन्हें कुछ समझ नहीं आता तो वे या तो खुद ब खुद उस गुत्थी को सुलझा लेते हैं या मदद माँगते हैं, तब तक, जब तक उन्हें यह पता न चल जाए कि वे समझ गए हैं। मोटरगाड़ियों

की मरम्मत करना सीखने वाला बच्चा जल्दी ही ~~की~~ समझ जाता है कि वह एक चीज़ तो ठीक कर पाता है ~~हैं~~, पर दूसरी नहीं। जितनी अधिक हिस्सों की मरम्मत वह कर पाता है, उतना बेहतर मैकेनिक वह बनता है ~~हैं~~, पर उसे कोई ऐसी बाहरी मदद की ज़रूरत पड़ती है जो उसे यह बताए कि वह अब तक क्या-क्या नहीं कर सकता है ~~हैं~~।

यही प्रत्येक गतिविधि में होता है ~~हैं~~। कुम्हारी में रुचि रखने वाले छात्र ने पेशेवर आकृतियाँ देखी होती हैं, चित्रकार ने कलाकृतियाँ, लेखक ने किताबें पढ़ी होती हैं, संगीतकार ने रिकॉर्ड या संगीत सभाओं में संगीत सुन होता है। उनमें से हरेक के मन में श्रेष्ठता का एक पैमाना होता है ~~हैं~~, और प्रत्येक बिना भ्रम पाले अपने लिए लक्ष्य तय कर सकता है ~~हैं~~।

श्रेष्ठता के समक्ष स्व-मूल्यांकन की प्रक्रिया अक्सर, आत्मझल्लाहट की हद तक दुखद कुण्ठा से भरी होती है ~~हैं~~। इस बात का कोई फायदा नहीं होता कि कोई दूसरा कहे, पर तुम तो इसमें बहुत अच्छे हो, तब भी जब वास्तव में यही उसका आशय हो। “अपनी आयु और उपलब्धि स्तर के हिसाब से तुम बहुत बढ़िया हो,” से सन्तुष्टि नहीं मिलती। बच्चे प्रारम्भ करने से पहले यह तय कर चुके होते हैं कि वे किस तरह की श्रेष्ठता हासिल करना चाहते हैं। ऐसे में आपके शब्द खोखले और झूठे ही लगते हैं।

इस नृशंस स्व-मूल्यांकन से जन्मी कुण्ठा कई बार बच्चों को अपने उद्यम को त्यागने पर मजबूर करती है। ज़्यादातर बार बच्चे फिर से शुरुआत कर भयावह एकनिष्ठ दृढ़ता से बार-बार कोशिश दोहराते हैं, जब तक वे अन्ततः आपसे आकर यह न यह सकें, “यह अच्छा काम बन पड़ा है ~~हैं~~।”

कभी-कभार बच्चे अपने काम में महारत हासिल करने में सहायता पाने के लिए बाहरी आलोचना तलाशते हैं। वे एक आलोचक चाहते हैं, और ईमानदारी और कुशलता की माँग करते हैं। यही तो हरेक प्रशिक्षु कार्यक्रम में होता है: प्रशिक्षु प्रशिक्षण और सतत् समालोचना के लिए ही उस्ताद से आवेदन करता है ~~हैं~~।

यह सब छात्र और विषय पर निर्भर करता है ~~हैं~~। कई बच्चे मेरे पास आकर यह कहते हैं, क्या आप मेरा लेखन पढ़कर उसे सुधारने में मेरी मदद करें? जो बच्चे यह अनुरोध करते हैं वे लिखने वाले और तेज़ होते हैं, पर उन्हें यह समझ नहीं आता कि वे भूल कहाँ कर रहे हैं।

जब मुझसे कहा जाता है तो मैं बखुशी मदद करता हूँ। और मै तब ऐसा करना बन्द भी कर देता हूँ जब छात्र मुझे कहते हैं कि उन्हें अब मेरे साथ काम नहीं करना हैं, या उन्हें जो चाहिए था उसे वे पा चुके हैं। स्कूल के शिक्षक मण्डल का प्रत्येक सदस्य इसी प्रकार काम करता है ~~हैं~~। यह स्कूल में रचा बसा है ~~हैं~~।

सडबरी वैली के दृश्य में यह नीति है कि हम लोगों ~~को~~ का मूल्यांकन नहीं करते। हम एक-दूसरे से मानक से या हमारे द्वारा तय किए गए किसी मानक से उनकी तुलना नहीं करते। हमारे लिए ऐसा करना छात्र के निजता के, और आत्म-निर्धारण के अधिकार का उल्लंघन है ~~हैं~~।

स्कूल कोई न्यायाधीश नहीं है ~~हैं~~। अगर कोई छात्र उनकी ओर से किसी को कोई अनुमोदन पत्र लिखने को कहता है, तो यह सम्बन्धित पक्षों के बीच एक निजी मामला है। अगर वह व्यक्ति ऐसा पत्र लिखने को सहमत हो जाए तो वह अपनी व्यक्तिगत लेखन सामग्री का उपयोग करता है, स्कूल की नहीं। जहाँ तक सडबरी वैली का प्रश्न है, हरेक छात्र “ठीक” है ~~हैं~~।

यह नीति कई बार अजीबोगरीब समस्याएँ पैदा करती थी और अब भी यदा-कदा करती है ~~हैं~~। उच्चतर शिक्षण शालाओं और नौकरियों के मानक आवेदन प्रपत्र, हाई स्कूल की प्रतिलिपियाँ और अनुमोदन माँगते हैं। हम एक शिष्ट पत्र भेजते हैं जो यह स्पष्ट करता है ~~हैं~~ कि हम किस प्रकार संचालित होते हैं और हमारी नीति क्या है। हम यथासम्भव कोमलता से यह जानकारी देते हैं कि हम कोई अंक नहीं देते और किसी प्रकार का मूल्यांकन जारी नहीं करते। दस में से नौ बार हमारी नीति स्वीकार ली जाती है, और छात्रों को उन प्रवेश अधिकारियों या कार्मिक प्रबन्धकों के समक्ष जहाँ वे आवेदन करते हैं, खुद अपना मामला प्रस्तुत करने की अनुमति मिलती है, जो वैसे भी सही तरीका है ~~हैं~~।

पर दस में से जो एक बार होता है, वह जीवन को रोचक बनाता है। कुछ मौकों पर तो वे हमारे उत्तरों को अनदेखा

कर, क्योंकि वे उनके कम्प्यूटर में फिट नहीं बैठते, कम्प्यूटरीकृत अनुरोध पर अनुरोध भेजते जाते हैं। जब ऐसा होता है तो एकमात्र कुंजी धीरज ही है: हम कोशिश करते जाते हैं, जब तक हम आखिरकार उस इन्सान तक न पहुँच जाते जो निर्णय ले सकता है ~~हैं~~। कई बार हमारे पास किसी का फोन आता है, "क्या आप हमें कुछ भी नहीं दे सकते, जैसे फोन पर एक मौखिक मूल्यांकन ही, जिसे कोई दूसरा नहीं देखेगा?" हम धैर्यपूर्वक समझाते हैं कि यह सम्भव नहीं है ~~हैं~~।

जहाँ तक हम जानते हैं हमारी मूल्यांकन नीति ने हमारे किसी छात्र के स्कूल से बाहर निकलने के बाद के जीवन में नुकसान नहीं पहुँचाया है ~~हैं~~। यह नीति उनके लिए बेशक स्थितियों को कुछ कठिन ज़रूर बनाती हैं। पर ठीक ऐसी ही कठिनाइयों के बारे में ही यह स्कूल है: अपना रास्ता खुद बनाना सीखना, अपने मानक स्तर स्वयं तय करना, अपने लक्ष्य स्वयं हासिल करना सीखना। हमारी अंक न देने, मूल्यांकन न करने की नीति के बोनस के रूप में हमें जो मिलता है वह है वयस्कों का अनुमोदन पाने के लिए छात्रों के बीच संघर्ष-स्पर्धा से मुक्त वातावरण। सडबरी वैली में लोग हमेशा एक-दूसरे की मदद करते हैं। न करने का कोई कारण उनके पास नहीं है ~~हैं~~।

21.

विद्युत छड़

मार्क ट्वेन की एक अद्‌भुत कथा एक बिजली-बचाव छड़ विक्रेता के बारे में है जो एक ग्राहक को फुसलाकर आँधी तूफान से घर के हरेक कोने की रक्षा के लिए कई छड़ें बेच डालता है ~~हैं~~। इसके ~~बाज़ू~~ बाद जब पहला अन्धड़ आता है ग्राहक अपने गैट में कैद हो जाता है: बिजली छड़ें मीलों तक आकाश में बिखरी विद्युत को आकर्षित कर डालती हैं ~~है~~ और वह घर बिजली की ठोस दीवार से घिर जाता है ~~हैं~~।

यह क्रूर हास्य कथा हमारे लिए तब एक भयावह वास्तविकता में तब्दील हो गई जब हमारा स्कूल पहले-पहल खुला। पता यह चला कि सडबरी वैली 60 के दशक के अन्तिम वर्षों में शिक्षा के तूफानी आकाश के लिए एक विशाल विद्युत छड़ है ~~हैं~~।

यह समय अमरीकी समाज के लिए उथल-पुथल का था। प्रमुख राजनीतिक टकरावों ने देश को विभाजित, क्रोधी और ~~ओर~~ हिंसक बना डाला था। स्कूलों को भी बख्शा नहीं गया।

हरेक ओर नए स्कूल नज़र आने लगे थे। जिनकी स्थापना असन्तुष्ट शिक्षकों, सक्रिय पालकों, या राजनीतिक गुटों, या यदा-कदा विद्रोही बड़े छात्रों ने की थी। इनमें से कई पर "मुक्त शालाओं" का ठप्पा चस्पाँ था। कुछ समय बाद ये सब "वैकल्पिक स्कूलों" के शीर्षक के तहत आ गए, जिसका उपयोग आज ~~तब~~ तक भी मुख्यधारा के बाहर के किसी भी स्कूल के लिए किया जाता है ~~हैं~~।

सडबरी वैली ठीक उसी साँचे में नहीं ढाला गया था, जिनमें ये तमाम नए स्कूल थे। हमने अपना दर्शन इतिहास, सीखने के सिद्धान्त और अनन्य अमरीकी अनुभव की व्यापक पृष्ठभूमि के आधार पर गढ़ा था। यह भाग्य का खेल ही था कि हम 1968 के उथल-पुथल पूर्ण वर्ष में खुलने को तैयार थे। भाग्य के एक अन्य ~~खुल~~ खेल के चलते हम पूर्वी मैसाच्युसैटस् में एकमात्र वैकल्पिक स्कूल के रूप में थे जो किशोरों और स्कूल के मुठ्ठी भर छोटे बच्चों के लिए उपलब्ध था।

कई लोगों के लिए, बाल की खाल निकालने का समय नहीं था। हम ~~ही~~ ही वह वैकल्पिक बिजली बचाव छड़ थे। चारों ओर से लोग अपने बच्चों का दाखिला करवाने आ जुटे, अपने कार्यक्रम के बारे में हम जो बता रहे थे, उसे ठीक से सुन-समझे बिना ही। नतीजा एक विपदा ही हो सकती थी। पता यह चला कि अधिकांश किसी प्रकार के प्रगतिशील स्कूल की तलाश में थे। उन्हें ऐसी कोई जगह चाहिए थी जो उनके बच्चों के लिए सघन मार्गदर्शन, परामर्श और हस्तक्षेप उपलब्ध करवाए। यह इच्छा हम जो कर रहे थे, उससे कतई संगत न थी।

उन्होंने कुछ समय इन्तज़ार किया। ठीक वैसे जैसे छात्रों ने भी। उन्हें भरोसा था कि चयन की जो आज़ादी हम बच्चों को दे रहे थे, वह उन्हें लुभाने, उन्हें सहज महसूस करवाने, मुक्त महसूस करने का छलावा भर है ~~हैं~~। उन्हें विश्वास था

“ ”

कि कुछ सप्ताहों के अ-निर्देशन के बाद शिक्षक आखिरकार अपनी निष्क्रिय भूमिका से बाहर निकलेंगे और गरमाहट से भर अपनी बाहें बच्चों के कन्धों के गिर्द लपेटकर कोमलता से कहेंगे, “ठीक है, जॉनी, तुम्हें खेलने और जंगली जई बोने के लिए कई सप्ताह मिले; क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हें अब व्यवस्थित हो कुछ उत्पादक काम करना चाहिए? क्या तुम नहीं चाहोगे कि हम तुम्हारी मदद करें?”

पर वह दिन कभी आया ही नहीं। हम अपनी बात पर अड़े रहे, तब जाकर सबको यह समझ आया कि हमारा आशय वास्तव में वही है जो हमने बताया था। बच्चे सच में स्वयं चुनने को आज़ाद होंगे।

बड़ी बदमगज़ी हुई। आधे माता-पिता उसी कटुता से स्कूल के विरूद्ध खड़े हुए, जो राजनीति के अखाड़े में व्याप्त थी। एक माह की घनघोर लड़ाइयों के बाद स्कूल की हत्या कर दी गई। हम अपना काम करते रहे।

स्कूल को लेकर, उसके जन्म काल में हुए युद्ध ने सारी विद्युत छड़ें उतार दीं। अब लोग हमारे पास जो हम थे उसी के लिए आते। ज़्यादातर। वे हम जो नहीं हैं उसके भ्रम में नहीं आते थे।

एक दोस्त ने एक बार कहा था, “मुझे तुम्हारे और प्रगतिशील “मुक्त” स्कूलों में सही अन्तर मालूम है।

“तो वह है क्या भला?” मुझे सन्देह था कि बात किसी जुमले में रखी जा सकती है हैं।

“तुम्हारे स्कूल में, तुम्हें वही करना पड़ता है जो तुम्हें पसन्द हो, दूसरों में, तुम्हें वह पसन्द करना पड़ता है जो तुम कर रहे हो।”

यह बात की सुन्दर अभिव्यक्ति थी।

हमने अपना मिशन अपने छात्रों का मनोरंजन करना, उन्हें प्रेरित करना, उन्हें वह सब सीखने को फुसलना, जो उन्हें सीखना “चाहिए” कभी नहीं माना। हमने खुशमिजाज़ी और प्रसन्नता को अपनी प्राथमिकता सूची के शीर्ष पर कभी नहीं रखा। हमारे लिए सडबरी वैली में, वास्तविकता से परिचय अधिक महत्वपूर्ण है हैं। सीखने और बढ़ने के लिए रोज़मर्रा के संघर्ष, निराशाएँ, कुण्ठाएँ और असफलताएँ उतनी ही आवश्यक हैं - बल्कि और भी आवश्यक हैं - जितना प्रसन्नता और सन्तोष जिसको अन्य स्कूल तलाशते हैं।

ये मसले अब प्रश्न के घेरे में नहीं हैं, और सायों से नहीं रहे हैं। हम हर ओर औस बच्चों को स्वयं अपने जीवन की दिशा तलाशने देने की आज़ादी के लाभ देखते हैं।

हम अब एक फर्क किस्म के बिजली-बचाव छड़ हैं, या यह कहना बेहतर होगा कि हम प्रकाश की मशाल हैं जो उन लोगों को आकर्षित करते हैं जो अपने बच्चों को वह आज़ादी देने की इच्छा रखते हैं जो हम उपलब्ध करवाते हैं।

भाग 2

स्कूल का जीवन

22.

स्कूल बैठक/सभा

प्रत्येक गुरुवार दोपहर ठीक एक बजे स्कूल सभा के सभापति बैठक प्रारम्भ करते हैं। उसका एक सत्र प्रारम्भ होने वाला होता है हैं। यही सभा/ बैठक स्कूल का हृदय है। सडबरी वैली को यही संचालित करता है हैं। स्कूल के दैनिक जीवन की जो भी बयार है वह इसी प्रोत से बहती है हैं। छोटे और बड़े सभी मसले इसी में निपटाए जाते हैं। स्कूली जीवन के कुछ बेहद निर्णायक मुद्दों का समाधान यहीं किया गया था।

स्कूल की न्याय व्यवस्था 1968 में आयोजित छह घण्टों से भी अधिक अविराम चली बैठक, मैं में तैयार किया गया था।

ग्यारह वर्ष बाद लम्बे विवादों के चलते व्यवस्था को पुनर्गठित किया गया, और छह वर्ष बाद फिर एक बदलाव आया। इन मसलों पर घण्टों सोचा विचार किया गया और उन पर तर्क-वितर्क हुआ।

अपराधों की सभी कठोर सज़ाओं के फैसले वहीं लिए जाते हैं। सभी न्यायिक मामलों की समीक्षा होती है ~~हैं~~।

स्कूल के नियम स्कूल बैठक में प्रस्तावित होते हैं और उसी के द्वारा पारित किए जाते हैं। उन्हें स्कूल की कानून की किताब में संकलित किया जाता है ~~हैं~~।

संहिता में समय-समय पर कुछ विचित्र नियम भी घुस आते हैं। पहले-पहल लोग पूरे परिसर में कागज़ और कचरा बिखेरा करते थे, और उसे साफ रखने का कोई उपाय तलाशने की चेष्ठा में जूझा करते थे। बहस जारी रही और यह साफ हो गया कि इस समस्या से कुछ लोग शेष लोगों से कहीं अधिक परेशान थे। ऐसा कोई जाहिर-सा तरीका नहीं था कि कूड़ा बिखेरने वालों को सौन्दर्यबोध के प्रति सचेत लोगों की रुचि का सम्मान करने पर बाध्य किया जा सके। अन्ततः जैक ने एक समाधन सुझायाः "जो कचरा फेंकते हैं उन्हें फेंकने दो, और जो उसे उठाते हैं उन्हें उठाने दो।" यह स्वतंत्र कार्य-व्यापार की हद थी। एक थकी-उकताई बैठक ने यह सूक्ति अपना ली, और यह नियम किताबों में दो वर्ष तक रहा, जब तक आलसी बाज़ न आ गए।

स्कूल निगमों का गठन स्कूल बैठक में होता है ~~हैं~~। शिक्षकों के अनुबन्धों का समझौता भी इसी के द्वारा किया जाता हैं। विशेष व्यय इसी के द्वारा स्वीकृत किए जाते हैं। निजी छूटें बैठक के मंच पर से अनुदानित या वापस ली जाती हैं।

आपको यह पता नहीं होता है ~~हैं~~ कि कौन-सा मुद्दा अचानक अन्ततः बहस में तब्दील हो जाएगा। कई निर्णायक मुद्दे पन्द्रह मिनट में ही पारित हो जाते हैं। दूसरे जिन्हें आप गौंण मान कर चले हों, बैठक का ध्यान घण्टों तक उलझाए रखते हैं।

जब डेनिस यह छूट चाहता था कि वह सीसे की पेंसिलें प्रति पेंसिल एक ~~सिक्स~~ डाइम की कीमत पर बेचे (और स्कूल को लाभ का हमेशा की तरह 10 प्रतिशत दिया जाए), तो अचानक एक विवाद उठ खड़ा हुआ। स्कूल के पास एक पेंसिल वितरण मशीन थी, जो 25 सेंट प्रति पेंसिल उपलब्ध करवाती थी। और हमारे पास पाँच वर्षों की पेंसिलें पहले से मौजूद थी। स्कूल बैठक ऐसी छूट कैसे देती जो स्वयं उसी के साथ स्पर्धा करे?

बड़े सिद्धान्तों को याद किया गया। मुद्दे के समाधान के पूर्व मुक्त व्यापार, संरक्षण वाद, स्कूल की पेंसिल वितरण मशीन का पूरा इतिहास सब पर बारीकी से सोच-विचार किया गया। किसी को अन्दाज़ नहीं था कि इस मसले पर कोई चर्चा होगी भी!

बैठक में आयु सीमा के बिना, प्रत्येक छात्र का एक मत होता है। और यही बात शिक्षक मण्डल के सदस्यों पर भी लागू है ~~हैं~~। क्योंकि छात्रों की संख्या शिक्षकों की तुलना में सात या उससे भी अधिक होती है, स्कूल का प्रभावी नियंत्रण उन्हीं के हाथों में होता हैं।

जब हमने स्कूल पहले-पहल खोला था, स्कूल बैठक को कानून ढाँचे में रखने में हमें समस्या आई थी। मैसाच्युसैटस् के कानून के तहत नाबालिगों को वयस्कों के बराबर सत्ता नहीं दी जा सकती थी। मुझे अब तक अपने दो सहयोगी, वात्सलयमय, प्रतिष्ठित वकीलों की याद है, दोनों का ही जन सेवा का लम्बा रिकार्ड रहा था। वे बड़बड़ाते हुए आगे-पीछे चक्कर लगा रहे थे। "आपके पास चार साल के बच्चे, आठ साल के और बारह साल के बच्चे होंगे जो उन्हीं मुद्दों पर मतदान करेंगे जिन पर वयस्क करेंगे?" बात उनको बेतुकी लग रही थी। पर उनके रचनात्मक मस्तिष्कों ने ऐसा कर पाने का उपाय भी तलाश लिया।

प्रत्येक व्यक्ति मतदान करता है ~~हैं~~, बशर्ते वह बैठक में आए। उपस्थिति स्वैच्छिक है ~~हैं~~। ऐवजी मान्य नहीं है ~~हैं~~। सो स्कूल में जो कुछ होता है वह एक मुक्त लोकतंत्र में हर जगह होता हैः अगर मुद्दा किसी के दिल के करीब हो, तो वह उपस्थित होता है ~~हैं~~। अन्यथा सामान्यतः वे परवाह नहीं करते।

कुछ समय में आप उपस्थित लोगों को देखकर अनुमान लगा सकते हैं कि बैठक की कार्यसूची (अजेंडा) क्या होगी।

“ ”

जब कसरती किशोरों का झुण्ड अचानक सदल-बल हाज़िर हो जाता है तो शर्त बदी जा सकती है कि वे किसी खेल उपकरण को खरीदने के लिए विशेष व्यय की माँग रखेंगे। जब तीन बारह वर्षीय लड़के अचानक मौजूद होते हैं तो हवा में किसी छूट के आवेदन का संकेत तैरता है ~~हैं~~। बेशक कुछ नियमित उपस्थित होने वाले भी हैं, जो हर उम्र के होते हैं, जिनकी रुचि स्कूल संचालन में है ~~हैं~~, उसी तरह जैसे हरेक कस्बे-नगर में भी होते हैं।

वैसे कार्य सूची का अन्दाज़ा लगाने की ज़रूरत नहीं होती। वह प्रति सप्ताह पहले ही छाप दिया जाता है ~~हैं~~, यही स्कूल प्रारम्भ होने के बाद से ही स्कूल बैठक रिकॉर्ड की परिपाटी रही है ~~हैं~~। इससे सभी को पहले से ही आगाह कर दिया जाता है कि होने क्या वाला है ~~हैं~~।

स्कूल बैठक प्रक्रिया के औपचारिक नियमों के अनुसार संचालित होती है ~~हैं~~। सभा-अध्यक्ष इन नियमों को सीख एक नौसिखिए सांसद की तरह काम करता है और ज़रूरत पड़ने पर मदद करता है ~~हैं~~। लोग तब ही बोलते हैं जब अध्यक्ष अनुमति देता है, वे अध्यक्ष को सम्बोधित करते हैं, बैठक में पूरी चुप्पी और शिष्टाचार बरता जाता है (ऐसा न होने पर अध्यक्ष हस्तक्षेप करता है)। लगभग सभी निर्णय सामान्य बहुमत से होते हैं। प्रत्येक महत्वपूर्ण प्रस्ताव को एक के बाद एक होने वाली कम से कम दो बैठकों में प्रस्तुत किया तथा पढ़ा जाता है ~~हैं~~। ताकि लोगों को उस पर सोच-विचार करने का समय मिले।

पहले के दो वर्षों के बाद से अध्यक्ष हमेशा ही कोई छात्र रहा है, जिसे स्कूल वर्ष की प्रारम्भिक बैठकों में एक वर्ष की अवधि के लिए चुना जाता है ~~हैं~~। स्कूल बैठक सुचारू रूप से चलती है और थोड़े से समय के आश्यर्चजनक मात्रा के काम निपटाती है ~~हैं~~। बैठकें बिरले ही दो घण्टों से लम्बी खिंचती हैं, जो स्कूल चलाने के लिए प्रति सप्ताह लगाई गई अवधि के लिए अधिक नहीं है ~~हैं~~। जब स्कूल खुला ही था, बाहरी लोग अक्सर बैठकों की कठोर औपचारिकता के मसले पर हम पर हल्ला बोला करते थे। उनमें अधिक सौहार्द्र होना चाहिए, आपसी आदान-प्रदान, अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त कर पाने का अधिक मौका मिलना चाहिए। कुछ लोग बहुमत के नियम से नाराज़ होते थे, उन्हें लगता था कि भावनात्मक जुड़ाव के सत्र के बाद सब कुछ सहमति से होना चाहिए।

सडबरी वैली को उन लोकतांत्रिक प्रतिक्रियाएँ अपनाने के निर्णय पर अड़े रहने पर कभी अफसोस नहीं हुआ, जो प्राचीन ग्रीक काल से चली आई हैं। हमारे लिए, यहाँ जो व्यावहारिक लोकतंत्र लागू है वही सही है, और हमें इस पर गर्व है ~~हैं~~।

23.

जोखिम/खतरे

पहली बार जब एक बारह वर्षीय बच्चा सफेदे के पेड़ के शीर्ष तक चढ़ा हमारे दिल मानो थम गए। वहाँ वह, सत्तर फीट ऊपर से, पत्रों के बीच स्पष्ट दिखाई देता, सगर्व पुकार रहा था। और हम यहाँ नीचे धरती पर खड़े थे और हमारे मस्तिष्क के परदे पर हादसे की छवियाँ तैर रही थीं।

सफेदे के पेड़ ने परिसर पर, खतरों पर कई लम्बी चर्चाओं को प्रारम्भ किया। जितना हम इस विषय पर सोचते उतने अधिक जोखिम हमें पता चलते। जिन्हें पहचानने में हम चूकते, उन्हें बच्चे तलाश लेते।

हरेक बच्चा जहाँ चाहे, और जब चाहे, जा सकता है ~~हैं~~। हमारा परिसर खुला है ~~हैं~~। भाग्य में फिक्र करना बदा है ~~हैं~~।

शुरुआत में हम अनाड़ी और भोले थे। “हमारा परिसर खुला परिसर है,” हमने कहा, यह समझते हुए कि इसका मतलब है कि बच्चे जब चाहें, परिसर से बाहर निकल सकते हैं। हम जब छोटे थे तो स्कूल की कारागारनुमा बन्दिशों से हमें कितनी नफरत थी! सो जहाँ तक हमारा सरोकार था स्कूल और कैदीघर में कोई साम्य नहीं था। सडबरी वैली में हमने सारे दरवाज़े खोले और चाभियाँ फेंक दीं।

कुछ महीनों हम खुश रहे। तब एक रोज़ हमने दो आठ वर्षीय बच्चों को सड़क पर चलते तथा मील भर दूर नॉबस्कॉट कॉर्नर पर स्थित पित्ज़रिया की ओर जाते पाया। आठ वर्षीय बच्चे, चलती सड़क पर! हम भय से लकवाग्रस्त हो गए।

पुलिस को भी हमारी आदत डालने में कुछ साल लग गए। हमारे पास रोज़मर्रा पुलिस अधिकारियों के फोन आते कि उन्हें हमारे "भगोड़े" मिले हैं।

तब चट्टानों की बारी आई, परिसर का वह बेहद सुन्दर कोना जहाँ प्रकृति ने विशाल चट्टानें छितराई थीं। कितनी खूबसूरत लगती थीं वे - तब तक, जब तक पाँच और छह साल के नन्हों ने चट्टानों पर चढ़ना तय न कर लिया। अचानक वे भयावह लगने लगी!

इसके बाद नदी ने अपनी और हमारा ध्यान खींचा। चक्की वाले बाँध के निकल वह नन्हीं और उथली वह नदी हमारी भूमि से मुड़ती-बलखाती निकलती थी। उसे बेटिंग ब्रुक, (मछली फाँसने वाली नदी) कहा जाता, एक ठेठ ग्रामीण छोटी नदी, खूबसूरत और लुभावनी।

हमें इल्म ही नहीं था कि यह निर्दोष-सी नन्हीं नदी कितने-कितने रूपों में खतरनाक हो सकती है ~~हैं~~। जो छोटे-बड़े पत्थर उसके तल पर बिछे थे वे फिसलन भरे और अस्थिर थे। इधर-उधर छिपे नन्हे गड्ढे थे जिनमें से कुछ लगभग दो फीट गहरे थे, जहाँ कोई चार साल का बच्चा कण्ठ तक गीला हो सकता था।

सच तो यह है कि जल्दी ही हमें समझ आ गया कि सही दृष्टिकोण से देखें तो वातावरण में मौजूद कुछ भी खरतनाक हो सकता है ~~हैं~~। पेड़, चट्टानें, पोर्च, सड़कें, नदी-नहरें से। यहाँ तक कि हमारा भव्य मैदान में भी छिपे गड्ढे थे। जिनसे ध्यान से न चलने वालों के पैर रखने मुड़ सकते थे।

हमें पता था कि इन खतरों के बारे में हमें क्या महसूस होता था, पर हमें समय-समय पर खुद को याद दिलाना पड़ता। स्कूल का केन्द्रीय विचार यह था कि बच्चे समझदार फैसले कर लेना तब सीखते हैं जब उन्हें असली दुनिया की समस्याओं से जूझना-निपटना पड़ता है ~~हैं~~। हमें लगता है कि बच्चे ज़िम्मेदार व्यक्ति तब ही बन सकते हैं जब वे अपने कुशलक्षेम, अपनी शिक्षा-दीक्षा, अपनी नियति के लिए स्वयं ज़िम्मेदार हों।

हरेक उच्च सिद्धान्त की तरह इस विचार की भी जल्दी ही परीक्षा हुई। परिसर के खतरों के माध्यम से।

हमने इन मसलों पर घण्टों-घण्टों चर्चा की, हालाँकि हम जानते थे तकि हमें अपने सिद्धान्तों पर डटे रहना है तो अब स्कूल के बड़े दिलासा देने के लिए एक-दूसरे का हाथ पकड़े रहते हैं। अब होता यह है कि दैनिक खतरे बच्चों के लिए चुनौतियाँ हैं, जिनका सामना वे धैर्यभरी दृढ़ता, एकाग्रता और सबसे बड़ी बात, सावधानी के साथ करते हैं। लोग स्वभावतः अपने कुशलक्षेम की रक्षा करते हैं, ये आत्म-विनाशकारी नहीं होता। वास्तविक खतरा है लोगों के गिर्द पाबन्दियाँ अपने-आप में चुनौतियाँ बन जाती हैं, और उन्हें तोड़ना इतनी बड़ी प्राथमिकता बन जाती हैं कि तब व्यक्तिगत सुरक्षा की उपेक्षा हो सकती है ~~हैं~~।

तो हम चीज़ों को होने देते हैं। हमारे हिस्से के छोटे-मोटे घाव और चोट लगने की घटनाएँ घटी हैं। कुछ को धो-पोंछकर बैंड-एड चिपका दी जाती है ~~हैं~~, और बच्चे फौरन ही जहाँ वे थे वहाँ लौट फिर से कोशिश करने में जुट जाते हैं। पर ज़्यादातर तो देखी भी नहीं जाती। वे रोज़मर्रा की जिन्दगी के शारीरिक निशान होते हैं और बच्चे उन पर ध्यान देने के लिए बेहद व्यस्त होते हैं। सबसे गम्भीर दुर्घटना हमारी वह रही जब से फिसली और उसका कन्धा ज़ोर से टकरा गया।

हम एक लक्ष्मण रेखा खींचते हैं, गोकि वह अदृश्य रहती है ~~हैं~~ जो उन मामलों में है ~~हैं~~ जिनमें सामुदायिक और सार्वजनिक कानून भी रेखा खींचता हैः तालाब के किनारे, जल स्त्रोत सबके लिए जोखिम माने जाते हैं। उनके खतरे अमूमन गुप्त होते हैं ~~है~~, और अपनी गलती से सीखने का बिरले ही अवसर मिलता है ~~हैं~~। एक व्यावहारिक मसले के रूप में, न ही सामान्य बुद्धि, न हमारा बीमा करने वाले तालाब तक पहुँचने की खुली छूट को सहन करें।

अतः स्कूल ने एक कठोर नियम पारित किया कि कोई बिना नियंत्रित स्थितियों के तालाब में घुसना तो दूर पैर की उंगलियाँ तक नहीं डुबाएगा।

इस मसले को हवा लगाई गई, उस पर बहस हुई और सर्वसम्मति से स्वीकारा गया। तालाब पर लगी पाबन्दी को न तो स्कूल बैठक में न व्यवहार में ही, कभी चुनौती नहीं दी गई। इतने सालों में मुठ्ठी भर नन्हों को अपने पैर गीले करते

देखा गया है ~~हैं~~। पर बिना अनुमति कोई पानी में या बर्फ पर घुसा नहीं है ~~हैं~~।

तालाब के गिर्द कोई बाड़ा नहीं है ~~हैं~~।

सफेदे का पेड़ अब भी प्रति वर्ष छात्रों की एक नई पीढ़ी को आकर्षित करता है ~~हैं~~। हर साल उसके शिखर पर एक नया समूह विजय पाता है और सफलता के राज़ को आगामी आगन्तुओं को सौंपता है।

नॉबर-कॉट पित्ज़ा को पुलिस की तरह ही हमारे नन्हों के प्रकट होने की आदत पड़ चुकी है ~~हैं~~। पड़ोसी हर उम्र के बच्चों को आते-जाते देखने के आदी हो चुके हैं।

रोज़मर्रा के खतरों से निपटना, बच्चे यहाँ जो सीखते हैं, उसका हिस्सा है। सडबरी वैली में वे एक वास्तविक दुनिया में, बिना बन्द आहते के जीते हैं।

24.

निष्ठा आधारित प्रणाली/ सम्मान प्रणाली/ निष्ठा/ भरोसे की व्यवस्था

छात्र अपनी उपस्थिति का हिसाब टँगी हुई सूचियों में स्वयं दर्ज़ करते हैं।

इस निष्ठा पर टिकी इस व्यवस्था का अकेला तालाब ही हिस्सा नहीं है। समूचा स्कूल ही इसी पारस्परिक विश्वास पर संचालित होता है।

उदाहरण के लिए तालों को ही लें। सडबरी वैली में हमें तालों से चिढ़ है ~~हैं~~। यह परम्परा स्कूल के प्रारम्भिक दिनों से रही है कि हम स्कूल में कहीं भी ताले नहीं जड़ते।

हरेक की अपनी निजी दराज़ है जिसमें वे स्कूल में अपनी चीज़ें रखते हैं। दराज़ें व्यक्तिगत घोंसलों के समान है जिसमें कई प्रकार के खज़ाने छिपाए जाते हैं। दराज़ मालिकों के अलावा ये सबके लिए वर्जित हैं। उन पर ताले नहीं होते।

बिरले ही किसी दराज़ से कुछ गायब होता है। यदाकदा कोई किसी दूसरे की दराज़ में झाँकता पकड़ा जाता है और उसे न्याय समिति के समक्ष पेश किया जाता है।

व्यक्तिगत दराज़ों की निजता का सम्मान कई बार रोचक द्वन्द्व उपजाता है ~~हैं~~। एक नियम यह है कि दराज़ों में ताज़ा खाना कोई भी न रखे। पर कई बार ऐसा हुआ है कि हमारी नाकों ने हमें साफ बताया है कि इस नियम की उपेक्षा की जा रही है ~~हैं~~। एक बार ऐसा तब हुआ जब दराज़ मालिक बाहर गया हुआ था।

ऐसे में क्या किया जाए? भारी आत्म-मंथन हुआ। क्या हम दराज़ खोल खाना निकाल लें? दिनों-दिन तक बहस जारी रही जब तक कि हमारी नाकों और चूहों के डर ने मामला तय न कर दिया। दराज़ खोला गया और खाने का सामान हटाया गया।

भरोसा करने की यह व्यवस्था अब इस कदर आत्मसात हो चुकी है कि अब इस पर कोई सोचता तक नहीं है ~~हैं~~। पर्स, बटुए, कीमती चीज़ें नियमित रूप से खुली छोड़ी जाती हैं। बिरले ही कोई उन्हें छूता है ~~हैं~~।

जब भी कोई नियम को तोड़ता है, त्वरित प्रतिक्रिया होती है ~~हैं~~। उल्लंघन करने वाले को पता चल जाता है कि ऐसे आचरण की हर ओर निन्दा होगी।

विश्वास और सम्मान की यह भावना हमारी कल्पना से कहीं गहरी है ~~हैं~~ और हरेक इसे स्वीकारता है ~~हैं~~। कभी-कभार ऐसे बच्चे भी होते हैं जो चोरी के बाद परीक्षा-अवधि में हों, या किशोर जो दो-एक कानून तोड़ चुके हों, वे भी स्कूल के सम्मान की सख्ती से रक्षा करते हैं। एक बार हमारे यहाँ एक सत्रह वर्षीय लड़का था जो वाहन चोरी के जुर्म में सज़ा पा चुका था। पता यह चला कि स्कूल में उससे अधिक भरोसे योग्य कोई दूसरा था ही नहीं।

“ ”

परन्तु इस भरोसा करने की प्रणाली का ह्दय है प्रमाणन का विचार, जो सैकड़ों गतिविधियों के पीछे है हैं।

स्कूल ऐसे औज़ारों और उपकरणों से अटा पड़ा है हैं जिसके उपयोग के लिए विशेष प्रशिक्षण की दरकार पड़ती है हैं। डार्क रूम में, दफ्तर में, कम्प्यूटर कक्ष में, रसोई में, कार्यशाला में, कला तथा हस्तशिल्प कक्षा में, हर जगह। स्कूल बैठक का इस सबके लिए एक ही सरल सा नियम हैः कोई भी उपकरण का उपयोग कर सकता है, बशर्ते उसने उपयोग कैसे करना, यह सीख लिया हो। एक बार जब उन्हें सम्बन्धित उपकरण के लिए “प्रमाणित” कर दिया जाता है, तब वे उसका उपयोग जब जी में आए कर सकते हैं।

प्रमाणन का काम विशेषज्ञ करते हैं, और अन्य विशेषज्ञों को भी प्रमाणित करते हैं। प्रमाणित व्यक्तियों की सूची सबके देखने के लिए टाँग दी जाती है हैं। यही प्रणाली सबसे खतरनाक औज़ारों पर भी लागू होती है हैं। जितना अधिक जोखिम भरा वह उपकरण औज़ार होता है हैं उतनी ही कठोर प्रमाणन प्रक्रिया होती है। पर यह प्रक्रिया सबके लिए समान होती है हैं, फिर चाहे व्यक्ति की आयु कुछ भी क्यों न हो।

इसका मतलब यह होता है कि कुछ काफी छोटी उम्र के लोग कुछ बेहद परिष्कृत उपकरणों का उपयोग करते दिखते हैं। जैसे डार्क रूम में अकेले काम करता ग्यारह साल का बच्चा। या कार्यशाला में कोई बारह साल का बच्चा। रसोई में कोई नौ साल का बच्चा। इन छुटकों से अधिक सावधानी कोई दूसरा बरत ही नहीं सकता, जो यह सिद्ध करने को आमादा रहते हैं कि वे वयस्कों के खेलों में उनकी बराबरी कर सकते हैं। और क्योंकि सब कुछ प्रमाणन के लिए खुला है किसी को चोरी छुपे “वर्जित फल” चखने का लालच भी नहीं रहता।

पर कभी-कभार हम भारी दुविधा में फँस जाते हैं।

जब हमने हमारा कम्प्यूटर पाया, तो हमारी नज़रों में वह बेहद नाज़ुक स्थिति में था। कोई उसे बीच रात उठा ले जाए और हम बेबस से ताकते रह जाएँ, यह कल्पना ही असह्य थी। एकमात्र उपाय यह सूझ रहा था कि रात को उसे किसी अलमारी में बन्द रखा जाए। स्कूल में एक ताला!

जो चर्चा हुई वह किसी रहस्य-अध्ययनकर्ता के दिल को खुश कर देती। स्कूल को रात में बन्द किया ही जाता है, है ना? स्कूल के दरवाज़ों पर लगे ताले स्कूल के अन्दर ताले कहाँ हैं, वे तो बाहरी दुनिया के लिए जड़े जाते हैं, जिनका हमसे कोई वास्ता ही नहीं है हैं। कम्प्यूटर अलमारी का ताला भी दरअसल स्कूल में ताला नहीं है; वह तो बस ऐसा लगता भर है हैं। वह तो दरअसल...एक अन्दरूनी ताला है जो बाहरी लोगों के विरूद्ध है।

हमने ताला लगवाया। जो भी पास से गुज़रता बिलबिला जाता। स्कूल में प्रत्येक प्रमाणित व्यक्ति की उसकी चाबी तक पहुँच थी।

कुछ महीनों बाद सबको यह असहनीय लगने लगा। भारी बहुमत से स्कूल बैठक ने चंद कुछ सौ डॉलर एक सुरक्षा व्यवस्था के लिए आवंटित किए ताकि कम्प्यूटर को उसकी मेज़ पर सुरक्षित जड़ा जा सके।

अलमारी पर लगा ताला भारी खुशी के साथ हटाया गया।

विगत वर्षों में बहुत कम चोरियाँ, स्वाल्प तोड़फोड़ और आन्तरिक असम्मान घटा है हैं। सौ साल पुराना हमारा भवन जो दुरूपयोग से आसानी से नष्ट हो सकता था, आज उस वक्त से कहीं बेहतर लगता है जब स्कूल पहले-पहल खुला था।

एक सार्वजनिक सम्मान व्यवस्था विश्वास और व्यक्तिगत आत्मसम्मान के वातावरण को कायम रखने में मददगार है हैं, जो स्कूल में चहुँ ओर व्याप्त है।

25.

खेल परिदृश्य

“ ”

सितम्बर का धूप से रोशन दिन है। स्कूल भवन लगभग सुनसान पड़ा है।

मैं सिलाई कक्ष के विशाल द्वार की खिड़कियों से बाहर देखता हूँ। सभी लॉन में इकट्ठा हैं जहाँ पताका छीनने का बड़ा खेल चल रहा है ~~हैं~~। चीख-पुकार और खिलखिलाहट के साथ बच्चे मैदान में आगे-पीछे भाग-दौड़ रहे हैं।

एक घण्टे बाद खेल समाप्त होता है ~~हैं~~। एक, दो और तीन के झुण्डों में खिलाड़ी टहलते हुए भवन में लौटते हैं। वे प्यासे, भूखे, और ऊर्जा से भरे हैं।

खेल की प्रमुख घटनाओं को जीवन्त वार्तालाप में फिर जिया जाता है ~~हैं~~। लगता यह है कि कोई भी हारा नहीं है ~~हैं~~। यह ऐसा खेल लगता है जिसमें दोनों दल जीते हैं।

यह दृश्य वर्ष भर बार-बार खुद को दोहराता है ~~हैं~~। पतझड़ की शुरुआत से, सर्दियों, बसन्त और गर्मियों के प्रारम्भ तक फुटबॉल, सॉकर, स्लेजिंग, आइस हॉकी, बास्केटबॉल तथा बेसबॉल मैदान में अपनी-अपनी बारी लेते हैं। जिस भी खेल के उपकरण पूरे न हों, जैसे गोल पोस्ट, वहाँ कोई जुगाड़ बैठा काम चला लिया जाता है ~~हैं~~। खेल का नाम चाहे जो की हो, उसका बुनियादी नियम हमेशा समान रहता हैः जो कोई खेलना चाहे वह खेल में शामिल हो सकता है। आयु, दक्षता या संख्या आड़े नहीं आती।

बेसबॉल के दल में पाँच या फिर पन्द्रह खिलाड़ी भी हो सकते हैं। छह साल के बच्चे सोलह वर्षीय किशोर के साथ खेल सकते हैं। लड़के और लड़कियाँ दोनों को योग्य माना जाता है ~~हैं~~।

गौर से देखें और आपको कुछ विलक्षण दृश्य नज़र आएँगे।

एक अटपटा आठ वर्षीय बच्चा बल्लेबाज़ी के लिए आता है। बेस पर पुरुष हैं। उसकी टोली के सदस्य होम प्लेट के चारों ओर बिखरे हैं और उसका जोश बढ़ाने के लिए चीखते हैं। वह बल्ला घुमाता है। गेंद गेंदबाज़ और तीसरे बेस की दिशा में लुढ़कती है। वह दौड़ता है, उठाकर फेंकी गई गेंद से बचता हुआ सुरक्षित प्रथम बेस पर पहुँच जाता है। महा-आनन्द।

अगला बल्लेबाज़ टोली का सितारा है, भारी भरकम अठारह वर्षीय किशोर। वह गेंद को भीड़ भरे बाहरी मैदान की दिशा में उड़ा देता है ~~हैं~~। गेंद एक बारह वर्षीय लड़के की ओर जा रही है। वह उसे लपकने को तैयार हो इन्तज़ार करता है - और गेंद उसके हाथों से छूट जाती है ~~हैं~~। कोई एक शब्द तक नहीं कहता। दो रन बन चुके हैं।

खेल चलता रहता है, पारी दर पारी। बच्चे गेंद पीटते हैं, उसे ज़ोर से मारते हैं, गलतियाँ करते हैं, बहुत बढ़िया पैंतरें दिखते हैं। उनके हावभाव से आपको कोई फर्क समझ नहीं आ सकता। और स्कोर? केवल दो लोग ही उसका हिसाब रख रहे हैं। स्कोर 10-1 जैसा कुछ है ~~हैं~~।

डेढ़ घण्टे बाद सबकी आम सहमति से खेल खत्म होता है। कोई उदासी में डूबा नहीं लगता। कोई तकरार नहीं होती।

एक भारी सत्य अचानक उद्घाटित होता हैः लोग मस्ती कर रहे हैं। वे खेल का लुत्फ उठा रहे हैं।

और लुत्फ वे सब उठाते हैं, लड़के और लड़कियाँ, बड़े और छोटे, किशोर और नन्हे, अच्छे और बुरे।

हवा में भारी उत्तेजना, ज़ोरदार गतिविधि जीवन है ~~हैं~~। साथ ही हमेशा-हमेशा हँसी और खिलखिलाहट।

बेशक केवल बेसबॉल में नहीं। सभी स्पर्धात्मक खेलों में। लक्ष्य होते हैं, शारीरिक गतिविधि, बाहर खुले होना तथा मौज-मस्ती करना।

पतझड़ के एक दिन मिम्सी, स्कूल के संस्थापक शिक्षकों में एक, को अचानक होश आया कि पिछले पन्द्रह वर्षों से टैकल फुटबॉल (जिसमें खिलाड़ी एक-दूसरे से भिड़ते हैं) का खेल बिना रक्षात्मक उपकरणों के खेला जा रहा है ~~हैं~~। उसे भारी सदमा पहुँचा और वह बेहद परेशान हो गई। उसे महसूस हुआ कि यह भारी गैरज़िम्मेदाराना आचरण रहा है ~~हैं~~। हर साल अखबारों में हाई स्कूल फुटबॉल खेलों में बच्चों को आई भारी चोटों की खबरें छपती हैं। कुछ सार्वजानिक स्कूलों में तो

यह खेल ही वर्जित कर दिया गया है हैं।

मिम्सी ने स्कूल बैठक के समक्ष एक प्रस्ताव रख स्कूल में टैकल फुटबॉल वर्जित करने की माँग की।

स्कूल के इतिहास में इस बैठक की उपस्थिति सर्वश्रेष्ठ रही है। विवाद संजीदा, सावधानी से विचारा हुआ रहा। अधिकतर वे लोग ही बोले जो दरअसल फुटबॉल खेलते थे। क्रमशः खेल मैदान में जो कुछ घटता था उस पर हम सबका ध्यान केन्द्रित हुआ।

"सडबरी वैली में कॉन्टैक्ट स्पोर्टस् (जिसमें खिलाड़ी एक-दूसरे के शरीर को छूते या आपस में टकराते हैं) में मैं कोई कभी घायल नहीं हुआ है," एक भारी-भरकम किशोर ने कहा, "क्योंकि हम सावधानी बरतते हैं कि किसी दूसरे को चोट न लगे। यह खेल का हिस्सा है। हम हमेशा सजग रहते हैं। चोट पहुँचाने का काम किया ही नहीं जाता।"

"टैकल फुटबॉल का खेल," दूसरे ने कहा, "स्टेट पार्क की सड़क पर चलने से कम खतरनाक है।"

बिना अपवाद, सभी छोटे बच्चे भी सहमत थे। उनमें से एक की भी कभी रगड़ाई नहीं हुई थी।

प्रस्ताव को दो बार पढ़ा गया, दो बार उस पर चर्चा हुई, जैसा दूसरे महत्वपूर्ण प्रस्तावों में भी किया जाता है हैं। प्रस्ताव भारी बहुमत से हारा। मुझे तो इस बात पर भी पक्का भरोसा नहीं कि आखिरकार जब मतदान हुआ तो खुद मिम्सी तक ने उसके पक्ष में मत दिया था या नहीं।

अगले दिन मैंने बास्केटबॉल के खेल को ध्यान से देखा, जितना ध्यान पहले कभी दिया न होगा। छह फुटे और छुटके बौने कोर्ट में साथ-साथ खेल रहे थे। यह कोर्ट पहले पार्किंग स्थल था जो तारकोल से बास्केटबॉल के खेल स्थल में बदल दिया गया था। बास्केटबॉल भी शारीरिक खेल है हैं। यह खेल भी था, पर स्कूल के अपने ठेठ तरीके हैं।

बड़े बच्चे दूसरे बड़े बच्चों को छकिया रहे थे, पर छोटों को हाथ तक नहीं लगा रहे थे। और नन्हे एक-दूसरे के साथ धक्का-मुक्की कर रहे थे, और बड़ों के बीच से निकलने की कोशिश कर रहे थे, मानो हाथी पर मक्खियाँ। और कोई इन मक्खियों को मसल नहीं रहा था। कभी नहीं।

सडबरी वैली में खेलना ही महत्व रखता है हैं। और हरेक हमेशा जीतता है हैं।

26.

कैम्पिंग/शिविर

बाहर पसरा विशाल खुला स्थान हमेशा से कम से कम उतना महत्वपूर्ण तो रहा ही है जितना स्कूल का आन्तरिक स्थान। यों ही आ पहुँचा कोई मेहमान भी यह बात बच्चों के चेहरों, उनके शरीर, उनकी चालढाल और भौतिक आज़ादी में देख सकता है हैं।

कई वर्षों पहले एक पतझड़ के दिन हममें से कुछ ने सोचा "क्यों न अगला कदम उठाया जाए? न्यू हैम्पशर के श्वेत पर्वतों में एक शिविर यात्रा करें तो कैसा रहे, जहाँ हम पूरा समय बाहर बिता सकें?" हमने बुलेटिन बोर्ड पर एक सूचना लगा दी। रुचि रखने वालों से हस्ताक्षर कर शामिल होने को कहा गया।

जल्दी ही तीस बच्चों की सूची तैयार थी। हमने कुछ बड़े तम्बू उधार लिए, शिक्षकों की गाड़ियों का काफिला तैयार किया और यात्रा की व्यवस्था की। साथ ले जाने वाले सामान की सूचियाँ सबको बाँट दी गई। समूह के खर्च में से प्रति व्यक्ति आने वाले व्यय का अनुमान लगा लिया गया।

10 अक्तूबर को हम फ्रैंकोनिया पार्क के लिए निकल पड़े। सबके मन प्रफुल्लित थे। जब हम पहुँचे हमें शिविर स्थल खाली मिला। अक्तूबर में सप्ताह के मध्य में कैम्पिंग के लिए जाने की ***खब्त/ सनक*** खास लोकप्रिय जो नहीं है।

“ ”

हमने अपने तम्बू लगाए, और एक छोटी पहाड़ी के शिखर की ओर चढ़ने लगे। ऊपर से दृश्य अद्भुत था। नीचे उतर हमने आग जलाई, खाना पकाया, भूतहा कहानियाँ सुनाईं और आखिरकार थक कर प्रसन्न मन सो गए।

उस रात बर्फ गिरी। और बर्फ गिरी। और-और बर्फ गिरी। तूफान स्थानीय था, जो पहाड़ों के कुछ ही स्थानों को प्रभावित कर रहा था। हमारा शिविर स्थल भी उनमें से एक था।

सुबह तीन बजे, चारों ओर चार इंच बर्फ का कम्बल बिछ गया था। इस बीच एक तम्बू, शिविरार्थियों पर ही गिर गया। भारी गड़बड़ मची। सबको हटाकर दूसरे स्थान ले जाने और पुर्नव्यवस्थित करने में हमें घण्टा भर लग गया। हम सब ठण्ड में अकड़ चुके थे।

उस सुबह शिविर स्थल के मुख्य भवन में एक अस्तव्यस्त समूह अलाव के सामने गर्मा रहा था। नाश्ता ठण्डा था सब कुछ गीला और जमा हुआ था।

हमने जल्दी-जल्दी सामान समेटा और वापस घर का रुख किया। घटना के दस साल बाद ही हमने वापस पतझड़ के मौसम में शिविर यात्रा की योजना काफी डरते-डरते बनाई। इस बार हमने माउण्ट मोनाड्नॉक की योजना बनाई थी, जो अधिक पास था और जहाँ से लौटना आसान था, यात्रा सिर्फ एक रात की रही।

इस अशुभ शुरुआत से क्या स्कूल के बाहर रहना पसन्द करने वालों पर कोई असर पड़ा? कतई नहीं! पूरी बात मौसम की थी ना। उस बसन्त एक और शिविर यात्रा का आन्दोलन जल्दी शुरू हुआ इस बार चार दिन लम्बी यात्रा के लिए। लगा मानो फ्रैंकोनिया की सबकी स्मृतियों पर तब तक गुलाबी रंगत चढ़ गई थी। “वह भारी साहसिक यात्रा थी,” बच्चों ने शंकित शिक्षकों से कहा।

सो हमने एक और यात्रा की योजना बनाई - जून के आखिर में, दक्षिण की ओर केप कॉड की। हमारा लक्ष्य था निकरसन स्टेट पार्क। वहाँ जून में कोई बर्फ नहीं पड़ती, कभी भी।

यात्रा बेहद सफल रही। हम तालाब में तैरे, जंगलों में चले, समुद्र तट पर गए, रेत के **ढूहों/ टीलों** को देखा और प्रॉविन्सटाउन घूमे।

एक नई स्कूल परम्परा स्थापित हुई। प्रतिवर्ष जून में एक ~~सप्ताह~~ सप्ताह अब केप कॉड में गुज़रता है ~~हैं~~। जो भी आना चाहता है उसका स्वागत होता है, बशर्ते वह घर से दूर तम्बुओं में रहने को और खुद अपनी देखभाल करने को तैयार है। हम बरसात हो या चमचमाती धूप, ज़रूर जाते हैं, क्योंकि बरसात पड़े तो भी कोई बुरा नहीं लगता। हमारी तैरने की पोशाकें कुछ और जल्दी गीली हो जाती हैं, और धूप में जलने का खतरा भी नहीं रहता।

प्रारम्भ में ही कैम्पिंग और टूरिंग निगम की स्थापना कर दी गई थी ताकि शिविर व अन्य यात्राओं के बारे में सोचा जा सके। बहसबाज़ी तो बेशक होनी ही थी। खास कर शिविर यात्राओं के बारे में।

बहसबाज़ी केप कॉड की पहली यात्रा के बाद शुरू हुई। “आप इसे कैम्पिंग कहते हैं?” मार्ज ने झिझक कर पूछा। “यह तो किसी शानदार रिसॉर्ट होटल में रहने जैसा था। यह मायामी बीच भी हो सकता था। तैरना, घूमना-फिरना, गर्म पानी के फव्वारों में नहाना, गरमागरम विविध पकवान खाना, बैठे रहना। इस सबमें कैम्पिंग क्या है?”

हुआ यूँ कि ज़्यादातर लोगों का कैम्पिंग से मतलब वास्तव में “कैम्पिंग” से था ही नहीं। उनके दिमाग में एक बढ़िया सी खुले में बिताई गई छुट्टी का विचार था।

शुद्धतावादी बेहद नाराज़ और अपमानित महसूस करने लगे। पर अगले साल पुनर्विचार कर उन्होंने फिर भी साथ चलना ही चुना। यह सोच कि शायद इसमें भी मज़ा आए। इस बार भी वही सब कायम रहा जो पहले किया गया था।

पहले जो किया गया था वह तो कायम रहा ही और साथ ही द्विगुणित भी हुआ। जब हम फ्रैंकोनला से उबरे उसके बाद मॉन्डनॉक की यात्रा का संस्करण पतझड़ में आयोजित किया गया ताकी स्कूल वर्ष सही तरह प्रारम्भ हो। इसके कई वर्षों बाद शीतकाल में एक सप्ताह तक स्कीईंग करने के लिए, वरमॉन्ट स्थित किलिंगटन यात्रा अस्तित्व में आई। खुलेपन को

पसन्द करने वाले बलिष्ठ लोगों के लिए छोटी यात्राएँ भी जुड़ीं। बेशक ये अनियमित थीं। पर वे जहाँ उनकी मर्ज़ी होती जाने। तब, जब वे इतनी व्यवस्थाएँ कर लेते कि निकल सकें।

मार्ज को नियमित यात्राओं से समझौता करने में अधिक समय नहीं लगा। क्योंकि नियमित यात्राओं में सभी बाहर रहते थे, सो इसका कुछ मूल्य तो था ही। लोगों ~~को~~ का समय अच्छा बीतता था और वे अपनी बुनियादी ज़रूरतों की आपूर्ति स्वयं करना भी सीखते थे।

कुछ ही समय में वह भी इसके लय की आदी हो गई। "हम छोटे बच्चों को स्कूल परिसर में तम्बुओं में रात गुज़ारने का प्रस्ताव क्यों न रखें? उन्हें काफी बुरा लगता है ~~हैं~~ क्योंकि वे सप्ताह भर की यात्रा के लायक बड़े नहीं हुए हैं।" उसने प्रस्ताव रखा। यह विचार उत्प्रेरक था। सभी नन्हों ने सदल-बल प्रस्ताव स्वीकारा।

सो होने यह लगा कि प्रति वर्ष जून के प्रारम्भ में, स्कूल में इन बच्चों के लिए एक रात का कैम्प आउट आयोजित किया जाने लगा जो केप नहीं जा सकते थे। जल्दी ही नन्हों को सडबरी वैली शैली की कैम्पिंग की आदत हो गई। और कुछ ही समय बाद वे इतने बड़े भी हो जाते कि दूसरो के साथ बाहर जा सकें।

और मार्ज को अब बुरा भी नहीं लगता है ~~हैं~~। वह समझती है कि उसने उन नन्हों के पक्ष को मज़बूत किया है ~~हैं~~ ताकि शायद वे बाद के वर्षों में वास्तविक बाहर समय गुज़ारने वाले बन सकें।

27.

कमिटियाँ तथा क्लर्क

स्कूल के रोज़मर्रा के प्रशासन की बारीकियों को स्कूल बैठक उन लोगों को सौंपती है जो "क्लर्क" कहलाते हैं। और कभी-कभार किसी कमिटी को। इनका चुनाव साल भर के लिए पतझड़ में स्कूल खुलने पर किया जाता है ~~हैं~~।

जो हम कतई नहीं चाहते थे वह थी एक गहरे पैठी, लगातार बढ़ती नौकरीशाही थी जो अन्ततः सब कुछ पर छा जाती ~~हैं~~ है। सो हमने अपना काम-धन्धा ठेठ सडबरी वैली शैली में प्रारम्भ किया। जब भी कोई रूटीन काम उभरता जिसे करना ज़रूरी होता, स्कूल बैठक उन्हें परिभाषित करती, उस काम का वर्णन करती और तब उसे करने के लिए किसी को चुन लेती। कोई स्थाई व्यक्ति नहीं, बल्कि हममें से कोई भी - छात्र या शिक्षक - जो साल भर के लिए अपनी पारी पूरी करता।

क्या फोन पर दिए गए सन्देशों का प्रबोधन ज़रूरी है ~~हैं~~? क्या आने-जाने वाली डाक का निपटारा हो रहा है ~~हैं~~? दफ्तर में चीज़ों का प्रावधान है ~~हैं~~। फाइलें सही तरह रखी जा रही हैं? हमने इस काम के लिए एक कार्यालय क्लर्क का पद रचा। स्कूल की भौतिक स्थितियाँ कायम रखनी हैं? हमारे पास भवन रख-रखाव क्लर्क है जो भवनों की देखभाल करता है और एक ग्राउंडस क्लर्क है जो मैदानों, परिसर की देखभाल करता है।

बड़े कामों के लिए जहाँ ढेरों हाथों और मतों की ज़रूरत हो, कमिटियाँ हैं: एक जो स्कूल का लेखा-जोखा सम्हालती है, एक आन्तरिक डिज़ाइन के लिए और एक जन सम्पर्क के वास्ते। क्लर्कियाँ आती-जाती रहती हैं, जैसे-जैसे काम पुर्नपरिभाषित होते हैं, जब उनका महत्व कम हो जाता है या जब नए काम उभरते हैं। उस स्कूल बैठक में भागीदारी वास्तव में बेहद सन्तोषजनक होती है ~~हैं~~, जिसमें कोई क्लर्की हटाई जाती है। नौकरशाही के सामने घुटने न टकने के प्रति हमारी कटिबद्धता की यह वास्तविक पुष्टि है।

उदाहरण के लिए स्कूल खोलने तथा बन्द करने वाला क्लर्क हुआ करता था, ताकि यह सुनिश्चित हो कि सुबह स्कूल सही तरीके से खोला और हर शाम बन्द किया जाए। स्कूल की चाभियों की उपलब्धता भी इसी क्लर्क की ज़िम्मेदारी होती थी। कुछ साल गुज़रे। स्कूल खोलने व बन्द करने की चैकलिस्टें विकसित हुईं, साथ ही चाभियों की निगहबानी की एक सरल-सी प्रणाली भी विकसित हुई, बिलकुल सरल, मूलतः सिर्फ एक सूची कि किसके पास कौन-सी चाभी है। इसके

“ ”

बाद खास काम बचा ही नहीं। सो यह क्लर्की गायब हुई ~~थी~~ और उसके बचे छुटपुट काम किसी दूसरे के काम के वर्णन में जोड़ दिए गए।

एक मेहमानों का क्लर्क हुआ करता था, जो लगातार स्कूल देखने आने वालों से निपटता था। कई सालों तक यह एक बड़ा भारी काम था। हमें एक ऐसा तरीका तलाशना पड़ा कि हम आगन्तुकों के लिए यथा-सम्भव खुलापन तो बरतें, पर उनमें ही तल्लीन न हो जाएँ। जैसे-जैसे एक के बाद दूसरे क्लर्क इसकी व्यवस्था करते गए, काम आसान, बेहद आसान, बनता गया। इसके रूटीन कार्य जन-सम्पर्क कमिटी को सौंप दिए गए और क्लर्की खत्म कर दी गई।

समय के साथ कुछ नए काम भी उभरे। कुछ वर्षों बाद हमें एहसास हुआ कि हमारे कई पूर्व छात्र थे जो सम्पर्क में रहना चाहते थे। उनमें से कई मिलने आते और हमें बेहद खुशी होती। आखिर हमारी चेतना में यह बात उतरी कि हमें स्कूल और पूर्व छात्रों को आपसी सम्प्रेषण आसान बनाने के लिए कुछ करना चाहिए। स्कूल बैठक ने इस काम के एक एल्युमनी क्लर्क की नियुक्ति की।

दरअसल यह इस बात का एक अच्छा उदाहरण है कि किसी सिद्धान्त को उसकी अति तक कैसे पहुँचाया जा सकता है ~~हैं~~। हमें स्कूल बैठक की ओर से पूर्व छात्रों से निपटने के लिए एक औपचारिक अधिकारी नियुक्त करने में कम से कम पाँच वर्ष लग गए थे। इसके पहले हम इन मामलों से अनौपचारिक या अर्ध-औपचारिक तरीके से निपटते थे, जिसमें किसी भी व्यक्ति से बिना पद-शीर्षक के यह काम करने का अनुरोध किया जाता था। जब कई पूर्व छात्रों ने सडबरी वैली के मित्र नामक एक संगठन बना डाला ताकि उनकी ओर से सम्पर्क किया जा सके, हम शंकालु दृष्टि से कुछ साल यह देखते रहे कि वे इसे कैसे आगे बढ़ाते हैं। आखिरकार कई सालों की जाँच और इन्तज़ार के बाद जाकर कहीं हमने एक आधिकारिक सम्पर्क व्यक्ति के पद की रचना की। पार्किन्सन्स का नियम हम पर लागू नहीं हुआ!

कुछ विरल अवसर ऐसे भी आए जब हमें क्लर्की को दो में बाँटना पड़ा। ऐसा करना हमें नापसन्द है, पर यदा-कदा हमें क्लर्की को बाँटने या क्लर्क की चीर-फाड़ हो जाने के बीच चुनाव भी करना पड़ता है ~~हैं~~।

सबसे लम्बे ~~अर्से~~ अरसे तक हमारे पास एक नामांकन क्लर्क रहा है जो किसी छात्र के नामांकन सम्बन्धी सभी काम करता है ~~हैं~~। यह क्लर्क साक्षात्कार, कागज़ी कार्रवाई, और ट्यूशन फीस लेने के लिए ज़िम्मेदार होता है। हमारा सोचना था कि यह सब एक ही प्रक्रिया है ~~हैं~~।

पर वास्तव में ऐसा था नहीं। क्लर्क को जल्दी ही पता चला कि प्रवेश साक्षात्कार कर्त्ता के रूप में नए लोगों के लिए **स्कूल से प्रथम सम्पर्ककर्ता भी थीं। नए छात्र और उनके** अभिभावक तब उन्हें ही एक मित्र मान उनसे अपनी समस्याओं की अपनी चिन्ताओं की, और सारे सवालों की चर्चा करते जाते।

पर जब खेल के बीच पैसा आता है तो सब कुछ बदल जाता है ~~हैं~~।

किसी मित्रता को सबसे जल्दी और पूरी तरह खण्डित करने का काम उतनी अच्छी तरह कुछ भी नहीं करता, जितनी अच्छी तरह पैसों को लेकर कोई बहस कर सकती है ~~हैं~~। किसी एक दिन दो व्यक्ति जीवन में दो साथियों की तरह हाथ थामे चलते हैं। तब किसी बिल पर झगड़ा होता है, और अगले दिन वे जानी दुश्मन बन जाते हैं।

ट्यूशन फीस के भुगतान की ज़िम्मेदारी उठाने वाला नामांकन क्लर्क एक खुला लक्ष्य बन गया। कल दोस्ताना आचरण करने वाले छात्र और पालक, आज आसानी से जानी दुश्मन बन सकते थे। इसमें कुछ अधिक करने की ज़रूरत तक नहीं थी। अक्सर सिर्फ यह याद भर दिलाना पड़ता था कि पैसा चुकाया जाना है ~~हैं~~। “पैसे? आप पैसे के लिए मेरे पीछे पड़ी हैं। आप कितनी तुच्छ हैं! हमने सोचा था कि आप भली हैं, स्थितियाँ समझती हैं। अब समझ आया।”

अठारह साल और इस्पात से बनी स्नायुओं वाले क्लर्क को टूटने के बिन्दु तक पहुँचने में लगे, पर अन्ततः मुद्दे पर प्रकाश पड़ा। हमने नामांकन क्लर्क हटाया और एक प्रवेश क्लर्क तथा एक रजिस्ट्रार पद की रचना की। अब प्रवेश क्लर्क स्थाई रूप से भला व्यक्ति बना रह सकता है ~~हैं~~। और रजिस्ट्रार? वह एस्परिन की गोलियाँ और समय पूर्व सेवा-निवृत्ति के बीच चुनाव कर सकता है ~~हैं~~...

“ ”

फिर सफाई क्लर्क की एक गाथा भी थी। पर उसके लिए एक पूरा अध्याय ज़रूरी होगा।

28.

साफ-सफाई

गुज़रे वर्षों में किसी भी समस्या ने स्कूल के ध्यान को इतना केन्द्रित नहीं किया जितना सफाई ने।

प्रारम्भ से ही हमें यह उचित लगा था कि अपनी साफ-सफाई के लिए हम स्वयं ही ज़िम्मेदार हों। यह मसला सुरुचि का था। स्कूल हमारा “नीड़” था, और अगर हम उसे मैला-गन्दा करते हैं, तो उसे पुनः व्यवस्थित भी हमें ही करना चाहिए।

प्रारम्भ के महीनों में जो लोग स्कूल में थे वे थे शिक्षक जो स्कूल को तैयार कर रहे थे। इसका अर्थ था अन्य दायित्वों के साथ शिक्षक ही नियमित सफाई भी करें।

जब स्कूल पहले-पहल खुला तो हम छात्र-छात्राओं से यह उम्मीद नहीं रख सकते थे कि वे फौरन चीज़ों की लय-गति पकड़ लेंगे। सब लोग व्यवस्थित हों और सडबरी वैली के विचारों को समझें इसके लिए समय की ज़रूरत थी। इसका अर्थ यह था कि शिक्षक ही नियमित साफ-सफाई करते रहें।

मेरा मतलब वास्तव में “नियमित” है ~~हैं~~। हर शाम स्कूल बन्द होने के बाद हम अपने झाड़ू और कचरा पात्र, **पोंछे** और बाल्टियाँ उठाते और स्कूल की एक कोने से दूसरे कोने तक सफाई करते, और परिसर में बिखरा कूड़ा बीनते। यह निरीह सी नज़र आने वाली गतिविधि, जिस पर हमें गर्व भी था, हमें इस विषय पर पहले बड़े विवाद की ओर ले गई।

प्रारम्भिक “विद्युत छड़” दिनों के कई पालक क्षेत्र के प्रतिष्ठित कॉलेजों और विश्वविद्यालयों से जुड़े विद्वान थे। अपने पेशे पर उन्हें गर्व था। अध्यापन का कार्य उनकी दृष्टि में महान था।

पोंछा उठाने के लिए तो बेहद महान।

“आप स्वयं को अपने छात्रों की नज़रों में नीचा उतार रहे हैं। स्वयं सफाई कर आप बच्चों की नज़र में बौद्धिक गतिविधि का मूल्य घटा रहे हैं,” एक ने टिप्पणी की।

“आप बच्चों के लिए खराब आदर्श प्रस्तुत कर रहे हैं, दूसरे ने कहा। उन्हें आपके उदाहरण से प्रेरणा लेनी चाहिए। हम अपने बच्चों को बड़े होकर सफाईकर्मी थोड़े ही बनाना चाहते हैं।”

“क्या आश्चर्य कि आप लोग हमारे बच्चों को पढ़ाने पर इतना कम समय लगाते हैं,” उन अन्य लोगों ने कहा जो छात्र की पहल से सीखने के हमारे दर्शन से उकता रहे थे। “आप सफाई करने में बेहद ज़्यादा समय लगाते हैं।”

हम सोचते रहे कि सफाई ~~की~~ के बाबत उनका क्या सुझाव ~~हैं~~ है। ज़ाहिर था कि इस काम के लिए माता-पिता की सेवाएँ देने का प्रस्ताव तो रखने नहीं वाले थे... और वे यह बखूबी जानते थे कि मानदेय दे किसी सफाई करने वाले को रखने के लिए हमारे पास पैसे नहीं थे।

उनके दिमाग में जो था उसका पता चलने में अधिक समय नहीं लगा। हमारे कई अभिभावक 60 के दशक की राजनीति में सक्रिय थे। उनके महान मुद्दों में एक था वंचित अल्पसंख्यकों की स्थिति सुधारना। इस अभियान में उन्हें जो अनुभव हुए थे उसके आधार पर उन्होंने हमारी समस्या का समाधान प्रस्तावित किया।

उनके नेताओं में एक नेत्री, एक रोज़ स्कूल बैठक में उत्तेजित और संकल्पित-सी आई, “सफाई समस्याओं का समाधान मेरे पास है ~~हैं~~,” वे बोलीं। “ऐसा समाधान जो सबके लिए फायदेमन्द होगा, शिक्षक किराए के मज़दूर बनने से बचेंगे। हमारे यहाँ गरीब अल्पसंख्यक वर्ग के छात्र नहीं हैं,” वे बोलती गईं। “हम एक ही तीर से दो निशाने साध सकेंगे। आप बीच शहर में बसने वाले बच्चों को पूरी ट्यूशन की छात्रवृत्ति दें, और बदले में वे सफाई का काम करें।”

“ ”

बैठक में भारी हंगामा हुआ।

शिक्षक पहले से भी अधिक दृढ़ता के साथ सफाई का काम करते चले।

विरोध करने वाले अभिभावक जल्दी ही चिढ़कर स्कूल छोड़ गए।

यह हमारी बहसों में पहली बहस थी। कुछ महीनों बाद शिक्षकों को लगा कि इस काम में समूचे स्कूल को भागीदारी करनी चाहिए। शिक्षक द्वारा आदर्श प्रस्तुत करने के काल के बाद समुदाय की भागीदारी का युग आना चाहिए, जिसमें छात्र और शिक्षक समान रूप से जुड़ें।

हमने एक स्वैच्छिक प्रणाली स्थापित करने की चेष्टा की। गतिविधि का समन्वय करने और आवश्यक सामग्री की खरीददारी के लिए एक सफाई क्लर्क नियुक्त किया गया। हमारा भवन काफी बड़ा है हैं। और उसकी साज सम्भाल के लिए विविध प्रकार की सफाई गतिविधियों का समन्वय करना पड़ता है हैं।

कुछ वर्षों तक क्लर्क बड़े साहस के साथ जूझते रहे। कुछ लोगों ने आगे बढ़ स्वैच्छिक योगदान की पहल की, सौंपे गए कामों से जूझे और तब क्रमशः दूर छिटक गए। सफाई का काम दिन में एक बार से सप्ताह में एक बार किया जाने लगा।

जल्दी ही मुठ्ठी भर महारथी शिक्षकों व छात्रों ने पाया कि पूरा काम हर सप्ताह वे ही करते हैं। “जो कूड़ा-कचरा करते हैं उन्हें करने दो, और जो सफाई करते हैं उन्हें साफ करने दो।” जैक ने कहा था। उसके विचार मानो पूरे प्रतिशोध के भाव से हावी होते जा रहे थे।

अतः स्कूल बैठक में एक नई बहस प्रारम्भ हुई। जब सारे उपाय असफल रहे तो लोकतंत्र अत्यावश्यक सेवाओं की आपूर्ति के लिए क्या करते हैं? वे एक मसौदा पारित करते हैं। सडबरी वैली ने तर्क और बहस की और आखिरकार हताश हो हमने एक अनिवार्य सफाई प्रणाली स्थापित की। सभी को आयु के बन्धन के बिना, एक सत्र तक सफाई का काम करना ही होगा।

सफाई क्लर्क का काम अब दोहरा कठिनाई भरा बन गया। अव्वल तो उन्हें काम को व्यवस्थित करना पड़ताः दूसरे उन्हें अनिवार्य रूप से चयनित सेवकों से सन्तोषजनक काम निकलवाना पड़ता। ज़बरदस्ती बेगार करने वाले आखिर कामचोरी के लिए प्रसिद्ध भी तो हैं। हमारे सेवक भी अपवाद नहीं थे।

कुछ साल गुज़रे। कुछ क्लर्कों की ऊर्जा चुक गई। स्कूल गन्दा नज़र आने लगा।

सफाई की समस्या पुनः ड्रॉइंगबोर्ड पर थी। इस समय तक हैरी जो अपने शुरुआती सालों में भयंकर आदर्शवादी था, ने ज़बरदस्ती सफाई के नियम को हटाने की पैरवी शुरू कर दी।

“हम चाहते हैं कि काम ईमानदारी से हो,” उसने तर्क किया, “तो फिर हमें उसका ईमानदार मेहनताना भी देना चाहिए। हम स्कूल के ही सफाईकर्मियों को जुटाने का प्रबन्ध करें। कई छात्र होगें जिन्हें अतिरिक्त पैसों की दरकार होगी।”

कई लोगों को यह विचार सही नहीं लगा। एक समुदाय का भला उस काम के लिए धन क्यों खर्च करना चाहिए, जो वैसे भी सबको स्वेच्छा से करना ही चाहिए? परन्तु सारे उपाय असफल हो चुके थे। हैरी का विचार स्कूल बैठक ने स्वीकार लिया, और उसे सफाई क्लर्क चुना गया, ताकि उसे एक छोटे पर पर्याप्त बजट की मदद से अमल में लाया जा सके।

वह पूरे उत्साह से काम में जुटा। शीघ्र ही हैरी की सफाई सेवा के पास एक “दफ्तर” था (एक कमरे के कोने में एक मेज़) और विस्तृत लेखा-जोखा प्रणाली थी (वह प्रत्येक व्यक्ति को औपचारिक पर्चियाँ देता जिसके सोचा और पूरा किया गया काम, जिसमें अनुमोदन व पुष्टि दर्ज़ होती थी), कार्यों की पेचीदा समय सारणी थी और एक प्रशिक्षण सेवा थी।

प्रशिक्षण सेवा हैरी के लिए गर्व और आनन्द का स्रोत थी। वह स्वयं एकाधिक बार अपना खर्चा निकालने के लिए पेशेवर सफाई दलों के साथ काम कर चुका था और उसने धन्धे के तमाम गुर सीखे थे। उसके प्रत्येक नए “कर्मी” को झाड़ू पोंछे का काम पाने के पूर्व सावधान निरीक्षण के तहत विभिन्न सत्र पूरे करने पड़ते थे।

यह एक बढ़िया प्रयोग था। परेशानी एक ही थी कि वह कारगर नहीं हुआ।

केवल ज़बरदस्ती काम के लिए चुने जाने वाले ही कामचोरी नहीं करते। मेहनताना पाने वाले एकरस उबाऊ काम करने वाले भी अपना शत-प्रतिशत नहीं देते...

स्कूल क्रमशः पुनः गन्दा नज़र आने लगा। हम वापस ड्रॉइंग बोर्ड पर लौटे।

अन्ततः सभी को इस बात पर शर्मिन्दगी का एहसास हुआ कि स्थिति इस हद पर पहुँची थी। आखिर स्कूल तो सबका ही था, और हम सबको लगा कि उसे साफ रखने में सबको अपना योगदान करना ही चाहिए।

तमाम उतार-चढ़ाव आते रहे हैं, जिनके साथ स्कूल बैठकों में घण्टों लम्बी बहसें और आत्म-मन्थन भी होता रहा है। इसके बाद लोग नए उत्साह और संकल्प के साथ आत्म-सम्मान कायम रखने के निश्चय तक पहुँचे हैं। इस समय तक स्वैच्छिक व्यवस्था की परम्परा आत्मसात की जा चुकी है ~~हैं~~। बीच-बीच में भारी सफाई के लिए हम सप्ताह के अन्त में सफाई अभियान आयोजित करते हैं जिसमें अभिभावक भी आमंत्रित किए जाते हैं। उनमें से कई नियमित रूप से जुड़ते हैं। आजकल तो अकादमिक भी आते हैं। समय बदलता है ना।

क्लर्की भी बदलती है। स्कूल बैठक ने सफाई क्लर्क का पद हटा दिया है ~~हैं~~। वह भरे जाने के लिए खास लोकप्रिय पद था भी नहीं।

स्वैच्छिक सफाई करने वालों का प्रबन्ध करने का काम सौन्दर्य व स्कूल उपयोग कमिटी को दे दिया गया है ~~हैं~~। यह शीर्षक अधिक उचित व चारू लगता है!

29.

चमत्कारिक बजट

सफाई काम ही ऐसा अकेला काम नहीं था जिसके लिए हमारे पास धन नहीं था। खाली कोष प्रारम्भ से ही सडबरी वैली की खासियत रही है। ~~हैं~~

जब पहले-पहल 1996 में हमने अपने विचारों को अमली जामा पहनाया, हमने शिक्षा के क्षेत्र की जानकारी रखने वालों से पूछा था, "एक स्कूल प्रारम्भ करने के लिए हमें तकरीबन कितनी राशि की ज़रूरत होगी?" कम से कम 250,000 डॉलर की," एक जवाब मिला था। यही न्यूनतम राशि बताई गई थी। पर जहाँ तक हमारा सवाल था यह राशि 250,000,000 भी हो सकती थी।

स्कूल के संस्थापकों के पास अपनी व्यक्तिगत साख को पूरा खींचने के बाद भी, सब कुछ के लिए 40,000 डॉलर की महाराशि थी। और हम संकल्पित थे कि इसी राशि से काम चलाएँगे।

साल भर की तलाश के बाद हमें दस एकड़ के परिसर में शताब्दी भर पुराने भवनों के साथ नैथेनियल बाओडिच एस्टेट का पता चला, जिसकी कीमत 80,000 डॉलर थी, जिसके लिए 20,000 डॉलर तत्काल और शेष ऋण के रूप में चुकाए जाने थे। इससे हमारी सबसे बड़ी आवश्यकता और उपलब्ध आधी राशि निपटी। शेष राशि मुख्य भवन की मरम्मत कर उसे नियम के अनुरूप बनाने, मेज़-कुर्सियाँ खरीदने, अन्य सामग्रियों की खरीद और स्कूल के प्रचार-प्रसार में खर्च हुई। स्कूल खुलने तक हम सब पूरी तरह कड़के हो चुके थे।

आप यह सोच सकते हैं कि हमें अपना परिसर इतनी कम कीमत पर कैसे मिल गया। हमने भी खूब-खूब सोचा-विचारा था पर हमारी सारी जाँच-पड़ताल में कोई पेंच सामने नहीं आ सका।

कब्ज़ा लेने के कुछ महीनों बाद हमें कारण पता चला। हमें यह परिसर एक तालाब और मिट्टी से बने चक्की बाँध समेत मिला था। हाल ही में बाँध को इंजीनियर कोरने कंडम घोषित कर दिया था। अनुबन्ध विलेख के अनुसार मालिक होने के

“ ”

नाते हमें बाँध की मरम्मत करवानी थी। पूर्व मालिकों ने इसी से बचने के लिए सम्पत्ति बेच डाली थी।

मरम्मत का ~~ज़ो~~ सबसे अच्छा व्यय अनुमान जो हमें मिल पाया वह 50,000 डॉलर का था। हमारा उद्यम तब तक सर्वनाश के कगार पर रहा, जब तक कि हमारे मित्र मैल स्टॉकर, जो फार्मिंगहम के सबसे प्रतिष्ठित ठेकेदारों में से हैं, ने यह न कहा कि, “मैं अपने मज़दूर लेकर आऊँगा और हम यह काम चन्द हज़ार डॉलरों में कर डालेंगे।” मैल अपने वादे के पक्के निकले। चार हज़ार डॉलरों में काम बन गया। हम हमेशा उनके आभारी और ऋणी हैं।

कहने की आवश्यकता नहीं है कि ऐसी शुरुआत ने हमें कम खर्चने और बजट सीमा में रहने की आवश्यकता के प्रति और सचेत बनाया। कोई भी खर्च, चाहे वह कितना ही छोटा क्यों न हो हमारी सावधान समीक्षा से बचा न रहता था। हमने जल्दी ही सीख लिया कि दरअसल कितनी कम चीज़ों से काम चलाया जा सकता है। अच्छे सौदे कैसे खरीदे जा सकते हैं। इस्तेमाल किया गया उपकरण कैसे पाया जा सकता है। ~~हैं~~, कैसे मुफ्त में चीज़ें पाई जा सकती हैं। और इस सबसे भी अधिक हमने यह सीखा कि किसी चीज़ के बिना कैसे काम चलाया जा सकता है, उनकी एवज़ में कोई अन्य वस्तु कैसे इस्तेमाल की जा सकती है ~~हैं~~। सडबरी वैली में माता आवश्यकता अनेकानेक आविष्कारों की जननी रही है।

यह स्थिति हमारी विचारधारा से और भी जटिल हो गई। पहली बात तो यही थी कि हालाँकि या शायद इसलिए ही हममें से कई स्कूल प्रारम्भ करने के पहले सफल अनुदान व्यवस्था करने वाले रह चुके थे, हम अपने ही बलबूते स्कूल चलाने पर दृढ़ थे। हमने तय किया था कि हम किसी भी तरह का सरकारी या संगठनात्मक वित्तीय अनुदान नहीं लेंगे। हम स्वेच्छा से दिए गए उपहारों को स्वीकारेंगे, परन्तु हमारा लक्ष्य यह था कि ट्यूशन की राशि से ही काम चलाएँ।

सिर्फ इतना भर नहीं हम दुनिया को यह भी दिखाना चाहते थे कि हम एक महँगे, आर्थिक रूप से सम्पन्न वर्गों के लिए विशिष्ट बने बिना भी सफल हो सकते हैं। इसका अर्थ था कि सिद्धान्तः हम शुल्क यथासम्भव कम रखेंगे। वाज़िब शुल्क तय करने के लिए हमने सार्वजानिक स्कूलों के प्रति-छात्र व्यय को जाँचा और तय किया कि हम उतने ही या उससे कम स्तर पर रहेंगे इससे बच्चों को सडबरी वैली में भेजने का खर्च स्थाई सार्वजनिक स्कूलों में भेजने से अधिक नहीं आएगा। हमारा सोचना था कि अगर हम इसमें सफल होते हैं तो सार्वजनिक स्कूलों को भी नज़र आने लगेगा कि जो हम कर रहे हैं वह उनकी पहुँच के भी परे नहीं है।

सो हमने स्वाल्प पूँजी, अनुदान रहित व कृत्रिम रूप से कम आय के साथ प्रारम्भ किया।

प्रति वर्ष स्कूल बैठक वार्षिक बजट पर बसन्त के प्रारम्भ में ही काम शुरू कर देती। यह प्रक्रिया सरल और सम्पूर्ण थी। वित्तीय भाषा में इसे “शून्य आधारित बजट” कहते हैं। प्रत्येक क्लर्क, *कमिटी* तथा निगम सावधानीपूर्वक अपनी तमाम गतिविधियों को सिरे से देख यह तय करता कि आगामी वर्ष में वे क्या करना चाहते हैं। तब वे यह अनुमान लगाते कि व्यय कितना आएगा, और तब स्कूल बैठक में अपने प्रस्ताव प्रस्तुत करते।

तब कई बजट सत्रों में प्रस्तावों की समीक्षा की जाती। बिरले ही बैठक में बजट वृद्धि के अनुराध स्वीकारे जाते। चन्द वर्षों के अभ्यास के बाद, यह भी बिरले ही होते कि प्रस्वावित राशि घटाई गई हो।

इस समूची प्रक्रिया में तकरीबन छह सप्ताह लगते हैं, और पिछले कुछ समय से वह बिना अड़चनों के पूरी की जाती है ~~हैं~~। इसके नतीजे प्रभावशाली हैं।

उदाहरण के लिए 1969-1984 के पन्द्रह वर्षों के दौरान संयुक्त राज्य के जीवन व्यय सूचकांक में तिगुनी वृद्धि हुई है ~~हैं~~। देशभर के स्कूलों का औसत व्यय चौगुना बढ़ गया है।

इसी अवधि में सडबरी वैली में कार्यात्मक बजट दुगने से भी कम बढ़ा है, ना ही ट्यूशन शुल्क। जैसे-जैसे समय गुज़रता गया हमारी ट्यूशन दर सार्वजनिक स्कूलों के प्रति छात्र व्यय से भी कम होता गया है। और निजी स्कूलों की तुलना में तो यह औसत शुल्क एक तिहाई ही रह गया है ~~हैं~~।

स्कूल बैठक सभी व्यय अनुरोधों पर कड़ी नज़र गढ़ाए रहता है ~~हैं~~। एक उदाहरण यह स्पष्ट करेगा कि व्यावहारिक रूप में इसका क्या मतलब होता है।

सार्वजानिक सार्वजनिक

स्कूल भवन पत्थरों से बना विशाल भवन है जिसे तेज से गरमाए गए पानी प्रणाली से ~~मम~~ गरम रखा जाता है ~~हैं~~। सो भवन को गरम रखने के खर्च को कम करना हमेशा से उच्च प्राथमिकता रही है ~~हैं~~।

1969-1984 की अवधि बहुत कुछ स्पष्ट करती है। ओपेक, तेल पर विभिन्न रोकों, तथा ऊर्जा संकटों के कारण गर्माने वाले तेल की कीमत इस अवधि में छह गुना बढ़ी। हमारे लिए इसका अर्थ था कि भवन को गर्म रखने के व्यय को विविध उपायों से कम करना।

हमने थर्मोस्टेट को 70 डिग्री से 65 डिग्री पर किया, जैसा शेष सभी को भी करना था, तब उसे 63 किया गया। जब हमने पाया कि तापमान के इस स्तर पर सब आराम से रह सकते हैं। (आखिरकार हममें से ज़्यादातर मज़बूत न्यू इंग्लैण्डर जो हैं।)

हमने गर्मियों की छुट्टियाँ कम कीं और सर्दियों में क्रिसमस-नव वर्ष की छुट्टियाँ दो सप्ताह की तथा फरवरी में एक सप्ताह की कर दीं।

हमने स्वचालित थर्मोस्टैट खरीदे जो रात को तथा ~~सप्प~~ सप्ताहान्त में तापमान को स्वतः ही कम कर देते हैं।

हमने भवन को इन्सूलेट (तापमान रोधी) किया, और अधिक तापमान रोधी बनाया।

हमने सबसे श्रेष्ठ ऊर्जा-कुशल तेल बर्नर खरीदे। और समूची तापमान नियंत्रण व्यवस्था को कार्यकुशल बनाए रखा।

इन प्रयासों के फलस्वरूप चर्चित पन्द्रह वर्षों की अवधि में हमारा तेल पर आने वाला व्यय केवल दुगुना भर हुआ।

यही कथा व्यय के शेष क्षेत्रों में नियमित दोहराई जाती रही।

ऐसा नहीं है कि हम कभी खर्च करते ही नहीं हैं। ज़रूरत भर का खर्च हम हमेशा करते हैं और पैसे बचाने के लिए जितना खर्च करना पड़ता है ~~हैं~~ वह हम ज़रूर करते हैं।

जब हमने स्कूल शुरू किया था, लोगों ने हमसे कहा था, "सम्भव है आप अनुशासन व कार्यक्रम की दृष्टि से एक लोकतांत्रिक स्कूल चलाने में सफल हो सकें, पर वित्तीय अर्थों में कभी सफल नहीं हो सकते। अगर पैसों के मसलों पर भी सबको एक-एक वोट दे डाला तो कुछ ही समय में आपका दिवाला निकल जाएगा।"

वे किस कदर गलत सिद्ध हुए। बूढ़े और बच्चे, सभी स्कूल को सफल बनाने तथा वित्तीय रूप से स्थिर रखने के प्रति समान रूप से संकल्पित रहे हैं। मुझे कोई भी दूसरा मसला नहीं सूझता जिस पर स्कूल में इतनी सहमत हो।

प्रत्येक परम्परा में चमत्कार आख्यान अवश्य होता है ~~हैं~~। धर्म, प्राचीन इतिहास, बच्चों की परी कथाएँ, सभी कहती हैं कि अचानक जादू से दिए, गुफा, पत्थरों व तमाम असम्भव स्रोतों से किस प्रकार ज़रूरतों की पूर्ति हुई।

सडबरी वैली में, हमारी भी एक परम्परा है ~~हैं~~। प्रतिवर्ष एक चमत्कारिक बजट अवतरित होता है, जिसके मार्फत हमारी आवश्यकताएँ, उपलब्ध राशि से ही पूरी हो जाती हैं। परन्तु सबसे बड़ा चमत्कार रहा है शिक्षक मण्डल।

30.

कार्मिक मण्डल

स्कूल के पहले साल बारह लोगों ने पूर्ण कालिक रूप से अवैतानिक काम किया। एक दो नहीं, पूरे बारह लोगों ने।

हममें से अधिकांश उस वर्ष से पूर्व एक-दूसरे को नहीं जानते थे। हम किसी राजनीतिक आन्दोलन के साथी नहीं थे न किसी सामाजिक समुदाय के ही। स्कूल के शैक्षिक आदर्शों के प्रति हमारा समर्पण हमें साथ लाया था।

स्कूल के प्रारम्भिक संस्थापकों ने सडबरी वैली के विचार की घोषणा 1967 में की थी, और सौ से अधिक लोग जो जीवन के विभिन्न क्षेत्रों से थे, इस घोषणा से उद्वेलित हो स्कूल में काम करने को, इस विचार को तलाशने को प्रस्तुत हुए।

इनमें से दर्जन भर साल भर टिके रहे। हमारे मन में प्रारम्भ से ही कोई शंका नहीं थी कि वेतन के लिए कोई धन उपलब्ध नहीं होगा।

प्रथम वर्ष में शिक्षकों के लिए ऐसे प्रतिमान स्थापित हुए जो अब तक बने रहे हैं।

पहला था समूह का नाम "शिक्षक मण्डल" (स्टाफ)। इस पर हमने विस्तार से चर्चा की थी। स्कूलों में शिक्षक, प्रशासक, मरम्मतकर्मी, कार्मिक, सेवक, सचिव, सफाईकर्मी, आदि-इत्यादि होते हैं। शिक्षा की दुनिया में तमाम शीर्षक और ऊँचे-नीचे पद होते हैं।

हम मानक संगठनात्मक सूची को नकारने को लेकर पूर्णतः एकमत थे। जहाँ तक हमारा मानना था हमारे सभी कामों का वर्णन एक ही तरह से किया जा सकता थाः "आवश्यकता हैः ऐसे लोगों की जो सडबरी वैली स्कूल की अवधारणा के प्रति कटिबद्ध हों और इस अवधारणा को अमली जामा पहचाने के लिए जो भी करने की ज़रूरत हो वह करने को तैयार ~~है~~ हों।" बस यही सब कुछ कह डालता था। हम स्कूल के "कार्मिक" थे, हरेक। बुनियादी काम में हममें कोई अन्तर नहीं था।

कोई घड़ियाँ नहीं थीं, जिनके अनुसार हमारे आने-जाने का समय दर्ज किया जाता। हम जल्दी आते थे और स्कूल बन्द होने तक रहते और तब जो कुछ करना ज़रूरी होता उसे करते। प्रारम्भ में हर शाम कार्मिकों की बैठक होती जिसमें दिन की समस्याओं पर उन पर हमारी प्रतिक्रियाओं पर, चर्चा होती। बाद में हम सप्ताह में एक या दो बार मिलने लगे और तब माह में एक या दो बार।

हम अपने छात्रों के लिए आदर्श प्रस्तुत करने के लिए सफाई करते, जो बाद में आने वाले थे। हम ही विक्रय करने वाले, खाती, कार्यकारी सचिव, व्याख्याता, पढ़ाने वाले थे। हम कुछ भी और सब कुछ करते थे।

हमने छात्रों को बिना उनके माँगे, न "देना" सीखा। हमने पीछे रहना सीखा, प्रत्येक छात्र की आन्तरिक वृद्धि/विकास में हस्तक्षेप न करना सीखा। फिर चाहे उसके आयु या विकास का स्तर ~~कुछ~~ कुछ भी क्यों न हो। यही सबसे कठिन पाठ था, जिसमें सर्वाधिक आत्मानुशासन की ज़रूरत पड़ती थी, और अब भी नए कर्मिकों की पड़ती है ~~हैं~~। हान्ना ग्रीनबर्ग, जो संस्थापकों में एक थी इसे कुछ इस प्रकार रखती हैंः

कुछ न करने की कला

"आप कहाँ काम करती हैं?"

"सडबरी वैली स्कूल में।"

"आप क्या करती हैं?"

"कुछ नहीं।"

सडबरी वैली में कुछ नहीं करने के लिए काफी ऊर्जा और अनुशासन की आवश्यकता पड़ती है। मैं हर साल इसमें बेहतर होती जाती हूँ, और मुझे स्वयं को और दूसरों को उन अपरिहार्य रूप से उभरने वाले आन्तरिक द्वन्दों से जूझते देख मज़ा आता है ~~हैं~~। यह संघर्ष लोगों के लिए कुछ कर डालने की, अपने ज्ञान को बाँटने की, अनुभव से अपनी समझ को दे डालने की भावना, तथा इस एहसास के बीच होता है कि बच्चों को स्वयं अपने बूते, अपनी ही गति से सीखना पड़ता है। उनकी इच्छाएँ उनके द्वारा हमारे उपयोग को तय करती हैं, न कि हमारी इच्छाएँ। हमें उस वक्त उनके लिए उपलब्ध होना होता है जब वे हमसे कहते हैं, तब नहीं जब हम तय करें कि हमें लगे कि हमें उपलब्ध होना चाहिए।

पढ़ाना, प्रेरणा देना, सलाह देना, ये सभी संस्कृतियों व उन स्थानों के वयस्कों की नैसर्गिक गतिविधियाँ हैं जो बच्चों के इर्द-गिर्द की जाती हैं। इन गतिविधियों के बिना हरेक पीढ़ी को नए सिरे से सब कुछ ईजाद करना पड़ता, पहिए से लेकर दशादेश, धातुकर्म से खेतीबाड़ी तक। इंसान पीढ़ी ~~हर~~ दर पीढ़ी अपने युवाओं को अपना अर्जित ज्ञान सौंपता है ~~हैं~~, घर में, समुदाय में, कार्यस्थल में और तथाकथित रूप से स्कूलों में। दुर्भाग्य से जितना उपक्रम हम छात्र को यह ज्ञान देने

का करते हैं, उतना ही अधिक नुकसान हम बच्चों को पहुँचाते हैं। यह वक्तव्य स्पष्टीकरण की माँग करता है ~~हैं~~ क्योंकि यह हमने जो पूर्व में कहा उसके विरूद्ध है ~~हैं~~। हमने कहा था कि वयस्क हमेशा से यह सीखने में बच्चों की सहायता करते रहे हैं कि वे इस जगत में कैसे प्रवेश करें और उसमें उपयोगी बनें। जो बात मैंने वर्षों में बहुत धीमे-धीमे और काफी कष्ट झेलकर सीखी वह यह है कि बच्चे अपने अत्यावश्यक फैसले स्वयं ऐसे तरीकों से करते हैं जिनकी पूर्व तैयारी या कल्पना तक वयस्कों ने नहीं की होगी...

सो अब ~~में~~ मैं स्वयं को कुछ नहीं करना सिखा रही हूँ, और इसको जिस हद तक मैं कर पाती हूँ, उतना बेहतर मेरा काम होता जाता है ~~हैं~~। कृपया इससे यह निष्कर्ष न निकालें कि कार्मिक अनावश्यक हैं। आप यह कह सकते हैं कि बच्चे तो स्कूल को लगभग स्वयं ही चलाते हैं, सो इतने कर्मिकों की ज़रूरत ही क्या है ~~हैं~~। सच्चाई यह है कि स्कूल तथा छात्रों को हमारी दरकार है ~~हैं~~। हम यहाँ इसलिए हैं ताकि हम एक संस्था के रूप में स्कूल को पोषित कर सकें, और व्यक्तियों के रूप में छात्रों को।

स्व-निर्देशन की प्रक्रिया, या स्वयं अपना मार्ग प्रशस्त करना, बल्कि कहें कि महज़ समय काटने के बनिस्बत अपना जीवन जीना, हमारी संस्कृति के बढ़ते बच्चों के लिए स्वाभाविक तो है पर स्वतः स्पष्ट नहीं होता। उनका मस्तिष्क इस स्थिति में पहुँचे इसके लिए उन्हें एक ऐसे वातावरण की ज़रूरत पड़ती है जो परिवार के समान हो। एकल परिवार से अधिक विस्तृत परिवार के समान वातावरण, जो बड़े आकार के बाद सहयोगी तथा सुरक्षित हो। अनिर्देशात्मक तथा दबावहीन होने के साथ ध्यान देने और सरोकार रखने के कारण कार्मिक बच्चों को अपनी आन्तरिक आवाज़ सुन पाने का साहस व प्रेरणा देते हैं। बच्चे यह जानते हैं कि हम वयस्कों के रूप में उनका मार्गदर्शन करने की काबिलीयत रखते हैं, पर ऐसा करने से इंकार करना शिक्षाशास्त्रीय औज़ार है ~~हैं~~ जिसका सक्रिय उपयोग हम उन्हें उन दूसरों को नहीं बल्कि केवल स्वयं ही सुनना सीखने के लिए करते हैं। इसलिए क्योंकि श्रेष्ठतम परिस्थितियों में भी हम उनके विषय में केवल कुछ तथ्य भर जानते हैं।

छात्रों को क्या करना चाहिए यह बताने से स्वयं को रोकने को वे किसी प्रकार का अभाव, एक प्रकार का खालीपन नहीं मानते। बल्कि इसे वे स्वयं अपनी राह बनाने का प्रोत्साहन मानते हैं। यह मार्ग वे हमारे दिशादर्शन में नहीं बनाते बल्कि हमारे सहयोगी सरोकार के तहत बनाते हैं। क्योंकि जो कुछ वे अपने आप स्वयं के लिए करते हैं उसमें मेहनत और साहस की दरकार होती हैं। और यह एकान्त के शून्य में नहीं किया जा सकता बल्कि एक जीवन्त व पेचीदा समुदाय में ही सम्भव होता है, जिसे कार्मिक स्थिरता देते हैं, ~~है~~ जिसे कायम रखते हैं।

पहले साल के अन्त तक, गर्मियों और पतझड़ की मुठभेड़ों से निकल हम, अनुभवी बन चुके थे।

हम ~~ने~~ वर्ष "2" की चर्चा करने इस सन्तुष्टि के साथ बैठे कि हम सब तथा स्कूल, इस बातचीत के लिए अब तक मौजूद थे। पिछले वर्ष जितनी राशि उपलब्ध थी उससे अधिक इस वर्ष भी हमारे पास न थी।

"बिना वेतन, एक साल और काम करना असम्भव है," एक व्यक्ति ने कहा।

"ना," किसी ने संकेत किया, "पहले साल यह एक अद्‌भुत भाव था। परन्तु दूसरे वर्ष यह बासी पेय सा लगेगा।"

हमें पता था कि वह व्यक्ति सही कह रहा था। लोगों को मुफ्त सहायता का आदी बनाने में कोई गुण न था। हम सब श्रम के सम्मान और ~~ओर~~ इस सिद्धान्त में विश्वास करते थे कि जो लोगों ने कमाया है उसका भुगतान होना चाहिए।

इस उहापोह का समाधान सम्भव नहीं लगता था। यह सही था कि हम सबको उचित वेतन दिया जाना चाहिए था, पर हमें भुगतान करने की राशि थी ही नहीं।

समाधान प्रेरणा के एक क्षण में उभरा।

हम सब एक सम्मानजनक राशि के अनुबन्ध के तहत रखे जाएँगे। पर स्कूल भुगतान करने के बदले इस राशि का कर्ज़दार होगा। किसी सामान्य ऋण की तरह नहीं - क्योंकि इससे तो स्कूल की कर्ज साख ही बरबाद हो जाएगी बल्कि एक सशर्त कर्ज की तरह जो उस समय चुकाया जाएगा जब स्कूल के पास व्यय से अतिरिक्त राशि बची हो।

अहसास एहसास

यह हमारी "वेतन अनुदान योजना" थी। इसे कानूनी भाषा में वह प्रयास करना पड़ा जो किसी मध्ययुगीन दार्शनिक को प्रसन्नचित्त कर देता। परन्तु व्यवहार में यह विचार बेहद सरल कार्मिकों को वह दिया जाता है जो सभी ज़रूरतों को पूरा करने के बाद बच जाता है। अदा की गई राशि तथा अनुबन्धित वेतन के बीच का अन्तर वह कर्ज़ है जो अनिश्चित भविष्य में कर्मिकों को अदा किया जाएगा।

दूसरे वर्ष पूर्णकालिक कार्मिक वर्ष भर के काम के लिए कई सौ डॉलर का वेतन पा सके। पन्द्रहवें वर्ष तक हमारे स्वाल्प बजट ने यह सम्भव बनाया कि पूर्णकालिक कार्मिक 12,000 डॉलर पा सकें। यह राशि लगातार बढ़ती रही है। हैं

न्यू इंग्लैंड स्कूल व कॉलेज संघ की प्रत्यायन (मान्यता) कमिटी सडबरी वैली को देखने पहली बार 1975 में आई। उन्हें हम क्या कर रहे हैं यह समझने में काफी कठिनाई हुई। कमिटी के सभी सदस्य अन्य प्रख्यात निजी स्कूलों के शिक्षाविद थे। उनके अनुभव ने उन्हें जो उन्होंने पाया-देखा उसके लिए तैयार नहीं किया था। प्रारम्भ से ही हमारे लिए मान्यता पाना महत्वपूर्ण रहा था। हम केवल अपने बल-बूते ही सफल नहीं होना चाहते थे बल्कि शैक्षणिक जगत में एक "जायज" उद्यम के रूप में स्वीकृति भी चाहते थे।

संघ स्कूल देखने आए इसके लिए भी हमें कड़ा संघर्ष करना पड़ा था। पहले तो उन्होंने हमारे औपचारिक अनुरोधों की उपेक्षा की। चाहा कि हम भी शेष वैकल्पिक स्कूलों की तरह गायब हो जाएँ। पर हम भी पीछे पड़े रहे और आखिकार उन्हें झुकना पड़ा।

एक सुबह मैं कमिटी के अध्यक्ष के साथ मुख्य भवन की ओर चल रहा था। उन्होंने एक अनुभवी स्कूल प्रशासक की नज़र से हमारे सुन्दर भवन को देख पूछा, "आप इस पुराने भवन को सही हालत में भला कैसे रखते हैं? स्लेट से बनी छत की मरम्मत-हाल रखने में ही भारी व्यय आता होगा।"

"हमने दृढ़ संकल्प किया है," मैंने उत्तर दिया "कि हम स्कूल को चालू रखने के लिए हर सम्भव चेष्टा करेंगे।" "पर पैसा कहाँ से आता है?" "हमारे कर्मिकों के वेतन से," मैंने जवाब दिया। "स्कूल की ज़रूरतें ~~सें~~ पहली प्राथमिकता पर रहती हैं। जो बचता है वह कार्मिकों को मिलता है ~~हैं~~। इस विषय पर हम सब एकमत हैं।"

"ठीक यही तो हमारे बीच अन्तर है," उन्होंने कुछ कसक के साथ कहा। "हमारे स्कूल में कार्मियों की ज़रूरतें पहले आती हैं चाहे कुछ भी हो जाए। चाहे छत टूटे या भवन चरमरा जाए -वह समस्या मेरी है ~~हैं~~। सडबरी वैली के कार्मिकों के जैसा समर्पण भाव तो नितान्त अनूठा है ~~हैं~~।" कमिटी ने सर्वसम्मति से हमें पूर्ण मान्यता दे दी।

इतने कामों, वेतन को लेकर इतनी ढेर समस्याओं और अनिश्चितताओं के बावजूद हमारे कार्मिक आश्चर्यजनक रूप से स्थिर रहे हैं और साथ ही नए लोगों के आगमन से सन्तुष्ट भी हुए हैं।

"अनिश्चितताएँ?" आप पूछ सकते हैं, "कैसी अनिश्चितता?" सडबरी में कोई स्थाई पद तो होते ही नहीं हैं। कार्मिकों को स्कूल संचालन के अपने दायित्व की तरह स्कूल बैठक ही नियुक्त करती है। प्रतिवर्ष वसन्त में आगामी वर्ष के कार्मिकों का चयन होता है ~~हैं~~। जो भी अपनी सेवाएँ देना चाहता है अपने नाम नामांकित करवाता है।

स्कूल बैठक में स्कूल की कार्मिक आवश्यकताओं पर वाद-विवाद होता है, और प्रत्येक प्रत्याशी पर चर्चा की जाती है। चुनाव के दिन स्कूल में सभी को गुप्त मतदान से मत देने का अवसर मिलता है।

यह तथ्य हम सबको **सावचेत** रखता है।

यदा-कदा किसी को मतदान द्वारा निकाला भी जाता है। अक्सर नए आवेदन चुने जाते हैं। पुराने और नए खून का अच्छा सम्मिश्रण कार्मिकों में रहता हैं।

तकरीबन दो दशकों से हमारे छह मूल लोग कार्मिक दल में बने हुए हैं। एक सेवा-निवृत्त हुए हैं, दो को निकाल दिया गया है, और तीन दूसरी जगहों पर चले गए हैं।

हमारा सौभाग्य है कि हमारे कर्मिकों में विभिन्न हुनर और पृष्ठभूमियों से आए लोग हैं। हमारे कार्मिक हमसे पाँच गुने

बड़े स्कूल को भी गौरवान्वित करते। हमारे यहाँ पी.एच.डी. धारी हैं तो हाई स्कूल स्नातक भी, कलाकार और बुद्धिजीवी, पेशेवर व शिल्पकार हैं। बड़े-बुज़ुर्ग हैं तो नौजवान भी, स्त्रियाँ और पुरुष हैं। हमारे स्कूल के ही कई स्नातक बाद में स्कूल कार्मिकों के रूप में लौटे हैं।

आज भी हम किसी राजनीतिक, धार्मिक या सामाजिक दल के साथी नहीं हैं, जैसे हम 1960 में नहीं थे। हमारा साझा बन्धन वही है जो हमेशा से रहा हैः सडबरी वैली को फलते-फूलते देखने के प्रति कटिबद्धता।

31.
नन्हे मुन्ने

ऑफिस में फोन की घण्टी बजती है। आठ वर्षीय डेबी फोन उठा कहती है, "सडबरी वैली स्कूल; क्या मैं आपकी मदद कर सकती हूँ।" दूसरी ओर क्षणिक चुप्पी छाती है। तब फोन करने वाला स्कूल की जानकारी चाहता है। "कृपया एक मिनट इन्तज़ार करें," डेबी कहती है। "आपकी मदद के लिए मैं किसी को बुलाती हूँ।" क्षण भर में वह किसी कार्मिक को तलाश फोन पर बात करवाती है। फोन पर बातचीत पूरी होती है। परन्तु कार्मिक से एक शब्द का आदान-प्रदान हो उसके भी पहले, फोनकर्ता हमारे बारे में सबसे महत्वपूर्ण बात जान लेता हैः सडबरी वैली में सभी लोग समान रचे जाते हैं, छोटे भी।

चार छह वर्षीय बच्चे रसोई में मार्गरेट के साथ कुकीज़ बना रहे हैं। धीमी गति से, सायास ये बिस्कुट बनने की ओर बढ़ रहे हैं और रसोई अस्तव्यस्त बनने की ओर।

"चलो, अब जगह की सफाई कर लें," मार्गरेट दृढ़ आवाज़ में कहती है। उसका नौसेना का अनुभव बेकार नहीं जाता है।

सभी जुट जाते हैं। एलिस सिंक के पास कुर्सी लाकर रखती है, और सारे बरतन धोती है जो मॉली उसे लाकर देती जाती है। जेकब और एरिक टेबल पोंछने और फर्श की सफाई का काम करते हैं।

"उस कोने को भी साफ करना।" मार्गरेट की आवाज़ गूँजती है। वह बची सामग्रियाँ जगह पर रख रही है। एरिक गन्दे कोने की दिशा में जाता है, जेकब पीछे से कचरा उठाने का डस्टपैन लिए भागता है।

बीस मिनट बाद कुकीज़ बनाने और रसोई की सफाई दोनों काम पूरे हो जाते हैं। सबने इस उद्यम में अपने हिस्से का काम पूरा किया है। छोटे बच्चों की "नाज़ुकता" के नाम पर उन्हें कोई छूट नहीं दी गई है।

वयस्कों के साथ आठ वर्षीय बच्चे भी विद्युत टाइपराइटर काम में लेते हैं – बशर्ते उन्होंने उसे इस्तेमाल करना सीखा हो (यह बात वयस्कों पर भी लागू होती है) और उपयोग के लिए प्रमाणन मिल चुका हो। दस वर्षीय बच्चे भी बढ़ईगिरी के सारे उपकरण काम में लेते हैं। नौ साल के बच्चे चाक पर मिट्टी के भाँड बनाते हैं। हर आयु के बच्चे नॉबर-स्कॉट पित्ज़ा या स्टेट पार्क, या गोल्फ कोर्स में आयोजित पेशेवर शो तक पैदल चल कर जाते हैं।

वर्षों से व्याप्त शैक्षणिक बकवास के प्रभाव से हम इस प्रश्न से जूझते रहे हैं, "क्या नन्हें बच्चों को विशेष बरतन की आवश्यकता नहीं है?" वे स्कूल बैठक के सदस्य थे, उनको मताधिकार था, और उन पर वे सारे नियम लागू थे जैसे दूसरों पर। पर फिर भी क्या वे कुछ खास नहीं थे क्या उन्हें अतिरिक्त देखभाल की ज़रूरत नहीं थी?

स्कूल बैठक ने इस पर कई घण्टे बिताए, इसे कई सालों छोड़ा, और तब उस पर वापस लौटे। सवाल को वहीं रहने दिया, फिर उस पर चर्चा की। पर हमारे तमाम प्रयासों के बावजूद हमें कोई ऐसा तरीका नहीं सूझा जिसमें हम किसी एक उम्र से दूसरों से फर्क तरह से निपटे। हमारे सिद्धान्त इसकी अनुमति ही देते थे और स्कूली जीवन की वास्तविकताएँ इसका समर्थन नहीं करती थीं।

नन्हों को फुर्सत ही नहीं होती। वे बोलने, खाने, स्थिर बैठने तक के लिए बेहद व्यस्त रहते हैं। वे कभी चलते नहीं, वे दौड़ते हैं। वे थकते नहीं। जब तक घर न चले जाएँ।

वे सीधे वयस्कों की आँखों में देखते हैं, खुलकर बोलते हैं, कभी भी डरते या झिझकते नहीं। वे आदर से बोलते हैं, आत्मविश्वासी व मुखर हैं। जो वयस्क पहली बार स्कूल आते हैं ~~है~~ उन्हें अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं होता।

"आपने इन छात्रों के मामले में दूध से मलाई निकाल ली है," वे कहते हैं। "ये सब इतने तेजस्वी और जीवन्त हैं।" हम साफ करते हैं कि हमारी प्रवेश नीति खुली है। कोई भी आ सकता है। कोई भी आता है। आम तौर पर लोग सोचते हैं कि हम शायद झूठ बोल रहे हैं। जो बच्चे ऐसा आचरण करते हैं वे "कोई भी" कैसे हो सकते हैं।

इन नन्हों की सबसे अच्छी बात वह लगती है जो वे दूसरों के लिए करते हैं।

पाँस द लिओ ने अपना समस्त जीवन यौवन के सोते को तलाशने में लगा दिया। उसे यह ज़हमत उठाने की ज़रूरत ही नहीं थी। वह अपना कुछ समय बच्चों के साथ गुज़ारता तो इतना ही काफी होता।

छोटे बच्चे सबसे खड़ूस वयस्कों तक को पुनरुज्जीवित कर सकते हैं, या तुनक मिजाज़ किशोरों के चेहरों पर मुस्कान ला सकते हैं।

स्कूल में वे किशोरों को बाध्य करते हैं ~~है~~ कि वे उनकी ऊर्जा और जीवन्तता पर गौर करें। ऐसा वे उन्हें परेशान कर नहीं करते, यह तो उनके अस्तित्व से ही हासिल हो जाता है। कुछ समय बाद आप नए किशोरों को नन्हों को पढ़कर सुनाते, उनके साथ काम करते या खेलते पाते हैं। पुराने बच्चे तो इस तरह की अन्तर्क्रिया को आम बात मानते ही हैं।

एक सर्वाधिक लोकप्रिय बाल पुस्तक जो लिखी गई है वह है, विनि-द-पू। अपनी आत्मकथा में लेखक ए.ए. मिल्ने ने बताया कि उन्होंने इसके पहले या बाद में कभी कोई बाल पुस्तक नहीं लिखी, और यह भी यों ही मज़ाक में इसलिए लिखी, कि शायद कुछ अतिरिक्त पैसे कमा सकें। क्योंकि उन्हें बच्चों के लिए खास तरह से लिखने का अनुभव नहीं था उन्होंने यह किताब भी ऐसे लिखी मानो वे अपने उन वयस्क पाठकों को सम्बोधित कर रहे हों जो अपना मनोरंजन करना चाहते हों।

पुस्तक तत्काल सफल हुई और हमेशा के लिए बेस्ट सैलर बन गई। मैं स्वयं इसे कुछ-कुछ सालों में तब से दोबारा पढ़ता रहा हूँ जब मैं आठ साल का था। यह मेरे अन्तस में बसे बालक को ठीक उसी तरह लुभाती है, जैसे बालकों में बसे वयस्क को।

लगता है सडबरी वैली, स्कूलों का विनी-द-पू है, जहाँ हम नन्हें बच्चों से वयस्कों समान आचरण करते हैं। स्कूल का वातावरण हम ढ़लान पर उत्तर रहे वयस्को में छिपे बालक को प्रतिदिन ऊर्जावान बनाता हैं।

32.

अच्छे बच्चे और शैतान बच्चे

बड़े बच्चों की कहानी बिलकुल फर्क है। वे हमारे पास विभिन्न तरीकों से आते हैं और तमाम चुनौतियाँ रखते हैं।

कुछ तो अपना समूचा जीवन स्कूल में ही रहे हैं। अन्य, शायद अधिकांश, दूसरे स्कूलों से तबादला लेकर आते हैं। अमूमन ये दो समूहों में बाँटे जा सकते हैंः वे जो अन्य स्कूलों में सफल थे ("ए" छात्र) पर प्रसन्न नहीं, और वे जो अपने पुराने स्कूलों के साथ लड़ाई छेड़ चुके थे (परेशान करने वाले या शैतान बच्चे)। कभी-कभार ऐसा भी छात्र होता है जो दोनों हो।

आप इनमें से किस तरह के छात्र को पसन्द करेंगे? अनुभव ने हमें कुछ पाठ पढ़ाए हैं।

सैम सडबरी वैली में सोलह वर्ष की आयु में आया, दुनिया से उसका कोई तालमेल न था। साल भर एक वह धुएँ और निष्क्रियता की धुन्ध में घिरा बैठा रहा। जो लोग उसे जानते थे वे यह सोचा करते थे कि किस तरह का स्कूल उसे दाखिला दंगा।

कुछ समय बाद वह आन्तरिक रूप से स्थिर हुआ और अपने जीवन का लेखा-जोखा लगाने लगा। अपने दूसरे वर्ष के

अन्त तक वह स्कूल स्नातक बन कॉलेज चला गया। कई साहसिक कारनामों के बाद, जिसमें वह कुछ समय दुर्लभ रत्नों का आयातक भी रहा, उसने कॉलेज पूरा किया और चिरोप्रैक्टिक (अस्थि) चिकित्सा स्कूल में प्रवेश लिया। अब वह सफल अस्थि चिकित्सक है जिसकी खासी निजी प्रैक्टिस चलती है।

सडबरी वैली के पूर्व सैम जितने भी स्कूलों में गया वह बुरी खबर ही था। हमारे साथ, अपने पहले वर्ष तक में वह हमेशा खुशमिजाज़ था। उसकी आँखों की चमक लौट आई और उसने स्कूली जीवन को बेहतर बनाने और अन्य छात्रों को तालमेल बैठा पाने में मदद के कई तरीके तलाशे।

चौदह वर्ष की आयु में रॉबर्ट एक ठेठ पस्त व खस्ताहाल इन्सान था। शराबी, हमेशा अधिकारियों के साथ परेशानियों में उलझा। जो कोई उसे जानता था भविष्यवाणी करता था कि उसका जीवन दुखद होगा और वह जल्दी ही मरेगा।

उसने हमारे साथ चार वर्ष क्रमशः अपने जीवन को फिर से गढ़ते गुज़ारे। वर्ष गुज़ारने के साथ उसने बोलना, स्वयं को अभिव्यक्त करना सीखा, और कई बार तो काफी विस्तार से। वह पढ़ने लगा, खेलने लगा और अपनी सम्भावनाओं से ~~के~~ अधिक आश्वस्त हुआ। धीमे-धीमे उसने अपने शरीर के साथ अत्याचार कम किया और अन्ततः अपने स्वास्थ्य की साज-सम्हाल करने लगा।

स्कूल छोड़ने तक रॉबर्ट सेवा कार्य को चुन चुका था, विशेष कर अर्ध-चिकित्सा के क्षेत्र को। काफी प्रशिक्षण लेने के बाद वह अर्ध-चिकित्सकीय बचाव दल का मुखिया बना। बाद में उसने नर्सिंग कॉलेज में प्रवेश लिया और पंजीकृत नर्स बना।

स्कूल में रॉबर्ट हमेशा सौम्य, हमेशा खुला व्यक्ति रहा। शून्य में ताकने और स्वयं में सिमटा-सा रॉबर्ट सालों गुज़रने के बाद क्रमशः सामाजिक और दोस्ताना बना। उसने हमारे लिए कभी कोई परेशानी नहीं पैदा की।

साल-दर-साल, वे आते रहे, समाज के आवारा और **प्रक्षिप्त** बच्चे, बच्चे जिनसे लगभग सभी हाथ धो चुके हों, सब नाउम्मीद हो चुके हों। गाड़ी चोर, गड़बड़ी करने वाले, नशेड़ी, शराबी, स्कूल से घृणा करने वाले, हर किस्म के समाज कंटक। उन्हें या तो उनके पूर्व स्कूल निकाल फेंकने या फिर वे हिंसक रूप से किसी भी स्कूल में जाने के विरूद्ध होते। इन सभी के साथ सडबरी वैली में एक सा व्यवहार किया जाता। उन्हें अपनी आज़ादी वापस मिलती है, और अपनी नियति को नियंत्रित करने की भारी ज़िम्मेदारी भी। उन्हें रोकने को कोई नहीं होता है।

यह सन्देश जल्दी ही अन्दर बैठता है। आज़ादी, खुला वातावरण, सार्विक मित्रता का भाव, विभिन्न आयु के लोगों का मिश्रण ये सभी उनके लिए वास्तविकता में लौटना ~~सा~~ आसान बना देते हैं। जब स्कूल प्रारम्भ हुआ ही था तब इस प्रक्रिया में लम्बा समय लगता था, अक्सर साल या दो साल गुज़र जाते। पर समय गुज़रने के साथ बड़े किशोरों की पीढ़ी-दर-पीढ़ी ने यह बात फैलाने में मदद की, और वे नए छात्रों के समावेशन के उपकरण बने। अब खुद को खोजने की प्रक्रिया जल्दी ही प्रारम्भ हो जाती है और तेज़ी से बढ़ती है।

सबसे चरम उदाहरण सम्भवतः स्टैला का रहा है, जो चौदह वर्ष तक अपने स्कूल में एक ऐसी चुड़ैल बन चुकी थी कि उसके कस्बे की स्कूल **कमेटी** ने सडबरी वैली में ~~मैं~~ पढ़ने का उसका व्यय देना तय किया, हालाँकि यह राज्य के नियमों के विरूद्ध था। वे जल्द से जल्द उससे छुटकारा चाहते थे। हर साल एक शिष्ट मण्डल उसके कस्बे से यह देखने आता कि हमारा अस्तित्व कायम रह सका है या नहीं, और वह भी स्कूल में उपस्थित होती है या नहीं।

इस काम में समय ज़रूर लगा पर जल्दी ही स्टैला ने स्वयं का सामना किया। जिस समय वह स्कूल छोड़ने को तैयार हुई, वह कॉलेज की भावी हॉनर्स छात्रा और मनोविज्ञान में स्नातकोत्तर अध्ययन करने, व प्रचुर कथा साहित्य लेखिका बनने के पथ पर अग्रसर हो चुकी थी।

हमारे लिए सभी स्टैलाएँ, रॉबर्ट व सैम एक नमूने का हिस्सा हैं। मुझे स्कूल के शुरुआती दिन याद आते हैं, जब स्कूल बैठक के दौरान "ए" टाइप छात्रों के एक गुट ने बाकी छात्रों की खूब शिकायत की। कहा कि वे ऐसे खराब नागरिक हैं जिन्हें स्कूल में होना ही नहीं चाहिए। "हम स्कूल आते हैं, हर तरह से मदद करते हैं, आपको हमारे जैसे छात्रों की ज़रूरत

है। वे दूसरे बदतमीज़ी करते हैं, पूरा दिन ठाले बैठे रहते हैं, नागरिक दायित्वों से बचते हैं।" याद आता है कि मैंने गहरी साँस खींच उन्हें शिद्दत के साथ कहा किः "वे बुरे लोग स्कूल के बारे में तुम लोगों से ज़्यादा जानते हैं। वे अपनी ज़िन्दगियों से जूझ रहे हैं, और फिलहाल उनके पास पर्याप्त काम है। तुम सब दूसरों को खुश करने में इतने व्यस्त हो कि तुमने स्वयं को जानना तक शुरू नहीं किया है।"

सच्चाई यह है कि "परेशानी पैदा करने वालों" ने सडबरी वैली में हमेशा अच्छा प्रदर्शन किया है, लगभग बिना किसी अपवाद के और हमेशा ही, बशर्ते उनके अभिभावकों का सहयोग उन्हें मिल रहा है। इसका कारण काफी सरल-सा हैः गड़बड़ी फैलाने वाला होना इस बात का संकेत होता है कि उन्होंने संघर्ष करना छोड़ा नहीं है। लोगों ने इन बच्चों को तोड़ने की, उन्हें सुधारने की, सामान्य साँचों में ढालने की कितनी ही चेष्टा क्यों न की हो, उन्होंने अपना संघर्ष जारी रखा, हथियार नहीं डाले। उनमें साहस और-जोश होता है। सच है कि उनकी ऊर्जा अक्सर आत्म-विनाश की ओर ले जाने वाली गतिविधियों पर केन्द्रित होती है। पर जैसे ही वे दमनकारी जगत से लड़ने से मुक्त होते हैं, ठीक ये ऊर्जाएँ ही उनके आन्तरिक जगत के निर्माण में, एक बेहतर समाज के निर्माण में लगा दी जाती हैं। इन छात्रों ने एक के बाद एक स्कूली जीवन की गुणवत्ता सुधारने में बहुत योगदान दिया है।

पर दुर्भाग्य से, "ए" छात्रों को कठिनाइयाँ हुई हैं। वे अपने शिक्षकों को प्रसन्न रखने के इतने आदी हो चुकते हैं कि पहले पहल यहाँ पहुँचने पर उन्हें कुछ सूझता ही नहीं है। "यहाँ कौन है जिसे खुश किया जाए?" वे सोचते हैं। अक्सर वे कार्मिकों की आजमाइश करते हैं जो उनके पूर्व स्कूलों के शिक्षकों जैसे होते हैं। पर पाँसा-चलता नहीं है। यहाँ के कार्मिक कोई सुनहरे सितारे नहीं बाँटते। तो फिर किस ओर बढ़ा जाए?

यह तालमेल बिठाना कष्टदायक होता है। और इस बात को जानने से भी कोई मदद नहीं मिलती कि स्कूल में शेष सब भी उतने ही चतुर, चौकन्ने और **प्रत्युत्पन्नमति** हैं। सडबरी में "कक्षा के शीर्ष" पर होने का संघर्ष कोई मायना ही नहीं रखता, इसका कोई ढाँचा ही नहीं है।

ये बच्चे, शैतानी करने वाले नहीं, दरअसल समाज के वास्तविक पीड़ित हैं। वर्षों तक बाह्य सत्ता की अनुपालना करने के कारण वे स्वयं से ही कट चुके होते हैं। उनकी आँखों से चमक गायब हो जाती है हैं उनकी आत्माओं से हँसी। अगर वे विनाश नहीं करते, तो वे निर्माण करना भी नहीं जानते। उनके लिए आज़ादी भयावह होती है। वे क्या करें यह बताने वाला कोई होता ही नहीं।

"उपचार" कठिन है और समय लेता है। हमेशा कारगर भी नहीं होता। अक्सर सबसे अच्छी दवा होती है ऊब की बड़ी-भारी खुराक। उनकी गतिविधियों को व्यवस्थित करने वाले कार्यक्रम निदेशक के अभाव में ये छात्र अक्सर गहन निष्क्रियता की अवस्था में डूब जाते हैं। हम उन्हें हमेशा कहते हैं कि जब ऊब असहनीय बन जाएगी, वे हताशा के चलते, खुद को जागृत करेंगे, स्वयं अपना ढाँचा रचेंगे। देर-सबेर ठीक यही होता है। पर बेचारे "अच्छे बच्चों" को अपनी पूर्व की अनुपालना की क्या कीमत चुकाना पड़ती है।

जो किशोर अपने स्कूली जीवन के प्रारम्भ से ही सडबरी वैली में रहे हैं, वे इन दोनों में से किसी श्रेणी में नहीं आते। वे ही भाग्यवान हैं, और यह आप उनके चेहरों पर तत्काल देख सकते हैं। वे स्वयं के साथ और अपने परिवेश के साथ सम में होते हैं। वे अपने लक्ष्यों को नज़रअन्दाज़ किए बिना जीवन के उतार-चढ़ाव से निपट पाते हैं।

कह सकते हैं कि एक तरीके से हम कभी जीत ही नहीं सकते। एक ओर तो लोग हमारे छात्रों को काम करते देख कहते हैं कि "आप तो मलाई उतार लेते हैं, ज़ाहिर है कि आज़ादी ऐसे बच्चों के लिए कारगर होती ही है। पर औसत बच्चों के लिए यह बेकार रहेगी।" दूसरी ओर लोग हमारी खुली प्रवेश नीति और स्कूल में दाखिल कुछ बच्चों को देखते हैं, और कहते हैं "यह स्कूल तो "नाकारों" का है, सामान्य बच्चों के लिए कतई उपयुक्त नहीं है।" मलाई, तलछँट, सामान्य...

हम जीत नहीं सकते, पर अमूमन जीतते हैं। ऐसा इसलिए हो पाता है कि हम सबसे एक-सा आचरण करते हैं, ज़िम्मेदार व्यक्तियों से जो स्वयं अपना बोझ ढो रहे हों, जैसा व्यवहार किया जाता है, वैसा आचरण। हमारा कोई खुफिया फार्मूला नहीं है, कोई उपचारात्मक युक्ति और कोई जादुई तकनीक नहीं है। जीवन का सामना करने के लिए आवश्यक संसाधन

हम सब में ही निहित होते हैं। सडबरी वैली में उन्हें तलाशने, उनका उपयोग करने की छूट बच्चों को मिलती है।

33.

माता-पिता

अधिकांश स्कूलों के लिए माता-पिता एक सिरदर्द ही होते हैं। वे शिकायत करते हैं, आलोचना करते हैं, समय लेते हैं, और सबसे खराब यह है कि वे बच्चों की शिक्षा में हस्तक्षेप करते हैं।

सडबरी वैली में प्रारम्भ से ही माता-पिता छवि का अन्तरंग हिस्सा रहे हैं। हमें लगा कि अगर हमें सफल होना है तो हमें अपने छात्र के परिवारों का पूर्ण सहयोग पाना ही होगा। वैसे भी शिक्षा का प्राथमिक दायित्व माता-पिता का ही होता है। वे बच्चों को इस दुनिया में लाते हैं, और उनको स्वावलम्बी बनाने तक उनका पालन पोषण करना माता-पिता का पवित्र कर्तव्य है। स्कूलों का अस्तित्व इसलिए है ताकि इस दायित्व को निभाने में उनकी मदद की जाए, न कि उन्हें इस प्रक्रिया से बाहर कर दिया जाए। कम से कम इस देश में तो यही होना चाहिए जहाँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा की जाती है।

साथ ही बच्चे केवल तब ही सम्पूर्ण व्यक्ति हो पाते हैं, जब उनका पारिवारिक जीवन और परवरिश उनके आन्तरिक स्व से सामंजस्य में हो। बेशक पीढ़ियों के बीच संघर्ष व्यापक स्तर पर फैला हुआ है, पर यही कैंसर और हृदय रोग के बारे में भी लागू होती है, कोई भी इन्हें वाँछनीय कह उनका सुझाव तो नहीं देता।

तमाम अन्य विचारणीय पक्ष भी हैं। माता-पिता ही स्कूल की फीस भरते हैं, और हमारी एक कहावत भी है जो 1776 की क्रान्ति से पुष्ट होती हैः बिना प्रतिनिधित्व कोई कर लागू न हो (नो टैक्सेशन विदाउट रेप्रेसेन्टेशन) । वे प्रतिदिन अपने बच्चों को स्कूल छोड़ते और ले जाते हैं हमारा स्कूल सामुदायिक दिवस स्कूल है, कोई आवासी छात्र नहीं है - अतः हम उनसे स्कूल के लिए दैनिक रूप से एक बड़ा भारी प्रयास करने को कहते हैं।

आप चाहे जिस भी कोण से देखें, माता-पिता हमारे साथ खड़े मिलेंगे, हमारे सहयोगियों व मददगारों के रूप में। हमने स्थिति को ऐसे ही देखा था और स्कूल को ठीक इसी रूप में बनाया था।

माता-पिता सडबरी वैली इनकॉर्पोरेटेड के मतदाता सदस्य हैं (ठीक छात्रों और कार्मिकों की ही तरह) । मैं "सदस्य" इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि स्कूल अलाभकारी निगम है, अतः इसके पणधारी (शेयरहोल्डर्स) नहीं हैं; इसका संचालन निगम सदस्य ही करते हैं।

सदस्यों को "सभा" कहा जाता है। इसकी बैठक वर्ष में एक बार मुख्य नीतियाँ बनाने के लिए आयोजित की जाती है। इन नीतियों में ट्यूशन दर तथा स्कूल बैठक द्वारा प्रस्तावित बजट का अन्तिम अनुमोदन शामिल है। जब मुख्य नीतियाँ बन जाती हैं तब स्कूल बैठक वर्ष भर स्कूल का रोज़मर्रा संचालन करती है।

स्कूल में माता-पिता के अधिकार कानूनी अधिकारों ~~से~~ से कहीं अधिक हैं। अब उनकी इच्छा हो, आने पर उनका स्वागत गर्मजोशी से होता है। वे पढ़ाने में मदद कर सकते हैं, काम में हाथ बँटा सकते हैं। वर्ष में कई बार विशाल सामाजिक आयोजन होते हैं – भोज, पिकनिक, नीलामी, नृत्य आदि, जिनमें माता-पिता भी अन्य लोगों के साथ हिस्सा लेते हैं।

माता-पिता के साथ जिस घनिष्ठ सम्बन्ध की स्कूल कामना करता है, वह प्रवेश साक्षात्कार के साथ ही प्रारम्भ हो जाता है। जो छात्र अठारह वर्ष से कम आयु के हैं, उनके लिए हमारा आग्रह यह रहता है कि वे माता-पिता के साथ ही साक्षात्कार के लिए आएँ- सम्भव हो तो दोनों के साथ। प्रारम्भ से ही उन्हें उनके बच्चे को शिक्षित करने के काम में अत्यावश्यक साझेदारों के रूप में जोड़ा जाता है।

साक्षात्कार के मुख्य लक्ष्यों में एक है माता-पिता की समझ को हासिल करना। हमारा साक्षात्कार – छँटनी या चयन का उपकरण नहीं है। बल्कि हम यह समय – अक्सर कई-कई घण्टे – उन्हें अपना दर्शन और तौर-तरीके समझाने में, उनके प्रश्नों के उत्तर देने में और एक सतत सम्बन्ध बनाने की तैयारी करने में लगाते हैं।

हमारे मूल बारह कार्मिकों में से छह स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता थे। बिरले ही ऐसे कार्मिक रहे हैं जिनके बच्चे अन्य स्कूलों में जाते हों।

विगत वर्षों में कई माता-पिता सडबरी वैली से इस कदर जुड़े कि अन्ततः उन्होंने भी कार्मिक बनने के लिए चुनाव लड़ा।

स्कूल में माता-पिता को शामिल करने के कारण स्कूल में एक समुदाय होने का भाव पुष्ट हुआ है। समय के साथ पूर्वी मैसाच्युसेट्स के चार कोनों से आए अजनबी एक-दूसरे से परिचित होते हैं, साझी रुचियाँ पहचान पाते हैं, और एक-दूसरे की मौजूदगी का मज़ा उठा पाते हैं।

सडबरी वैली में हर दिन परिवार का दिन होता है। ~~हैं~~ कोई फर्क स्थिति हम चाहते भी नहीं।

मेहमान

हर दिन मेहमानों के आने का भी होता है। कम से कम कई बार तो ठीक यही लगता है।

जब मैं छठे दशक के प्रारम्भ में स्कूलों की स्थिति का जायज़ा लेने लगा, तो मैं इस बात से हैरान हो गया कि कितने ~~हैं~~ ही स्कूल सत्र के दौरान स्कूल में लोगों का आना ही असम्भव बना देते थे। बेशक मुझे यह सदमा अपने भोलेपन के कारण पहुँचा था। मैं सोचता था कि शिक्षाविद बाहरी लोगों की रुचि अपने काम में बढ़ाना चाहते होंगे। पर स्थिति यह थी कि तथाकथित "मुक्त स्कूल" भी अपने द्वार बाहरी लोगों के लिए बन्द रखते थे।

हम निश्चय कर चुके थे कि हम सडबरी वैली को व्यापक समुदाय के लिए यथासम्भव खुला रखेंगे। हम चाहते थे कि हम जो कर रहे हैं उसे लोग देखें, हमसे बात करें और सम्भवतः अन्ततः हमसे सहमत हों। हमारी रुचि अनोखा बनने या बने रहने में न थी। हमारे कार्यक्रम की जितनी अधिक प्रतिकृतियाँ या विभिन्न स्वरूप अस्तित्व में आते, उतनी ही अधिक प्रसन्नता हमें होती।

हमारे लिए, मेहमानों का आना जन सम्पर्क का सबसे अच्छा स्वरूप था। कहावत है कि "देखने पर ही विश्वास होता हैं।" हम चाहते थे कि विश्वास करने वाले बनें।

इस बात पर कोई गफलत न होः सडबरी वैली देखने आना मेहमानों के लिए कोई आसान अनुभव नहीं होता।

वे इसलिए आना तय करते हैं क्योंकि उन्होंने एक "भिन्न" प्रकार के स्कूल के बारे में कुछ सुना होता है। और यही देखने की उम्मीद वे रखते हैं।

मुश्किल यह है कि शब्द सबके लिए समान अर्थ नहीं रखते। हमारे लिए "स्कूल" का मतलब है सडबरी वैली। परन्तु अधिकांश लोगों को यह शब्द एक सम्पूर्ण छवि सम्प्रेषित करता है - कक्षाएँ, मेज़-कुर्सियाँ, बच्चे और शिक्षक जो कक्षा में बैठे हों, भोजन कक्ष, घण्टियाँ आदि-इत्यादि। सो जो मेहमान सडबरी वैली के पार्किंग स्थल पर पहुँचते हैं, तो उन्हें पहली बात जो नज़र आती है वह हैं, हर ओर बच्चे, दौड़ते-भागते, खेलने में व्यस्त बच्चे।

"हम मध्यावकाश में आ गए हैं," वे कहते हैं।

वे भवन की ओर चलते हैं और कार्यालय कहाँ हैं पूछते हैं। दस में से नौ बार उन्हें कोई नन्हे आकार का छात्र दफ्तर तक पहुँचा देता है।

"आश्चर्यजनक नन्हा बच्चा," वे कहते हैं। "बाल-प्रौढ़। ज़रूर यहाँ का कोई असामान्य बच्चा होगा।"

कार्यालय में कोई वयस्क हो सकता है, नहीं भी हो सकता है। लोगों का आने-जाने का ताँता लगा है। तीन दस वर्षीय बच्चे एक टाइपराइटर के गिर्द घिरे, अपनी महा-रचना तैयार करते नज़र आते हैं।

“प्रभारी भला कौन है?” वे सोचते हैं।

आखिरकार उनका सम्पर्क उस व्यक्ति से होता है जो उस दिन मेहमानों के लिए ज़िम्मदार है। यह वयस्कों की मान्यता है। वे कुछ आश्वस्त होते हैं।

सच तो यह है कि अल्प समय के लिए आकर सडबरी वैली को समझना कुछ कठिन है। हममें से ज़्यादातर लोग ठीक वही देखते हैं जो हम देखना चाहते हैं, फिर चाहे हमारे सामने कुछ भी क्यों न हो। जब हम अजनबी परिस्थिति में हो तो हम सब कुछ अपने सन्दर्भ ढाँचे के अनुरूप रूपान्तरित करते जाते हैं, और निशाने से और चूकते हैं। ऐसा होना अपरिहार्य ही है।

“अभिमुखीकरण”, जैसा भी वह है, के बाद मेहमानों को स्कूल में घूमने, खुद देखने समझने के लिए मुक्त छोड़ दिया जाता है। यह मान लिया जाता है कि सामान्य बुद्धि और शिष्टाचार लोगों के साथ उनके सम्पर्क-संवाद का मार्गदर्शन कर देंगे।

अधिकतर मेहमानों का आगमन आनन्ददायक होता है, फिर चाहे वे कितने ही उलझन भरे क्यों न लगें। पर यदा-कदा कोई बदतमीज़ भी हाज़िर होता है।

तुम कौन-सी कक्षा में हो? जनाब बदतमीज़ एक नौ वर्षीय बच्चे से पूछते हैं।

“किसी कक्षा में नहीं।”

“तो पढ़ क्या रहे हो?”

“कुछ भी नहीं।”

“अच्छा क्या तुम पढ़ना जानते हो?”

“जी हाँ।”

“क्या तुम्हें नहीं लगता कि तुम्हें सामाजिक अध्ययन सीखना चाहिए?”

नाराज़गी भरा मौन छा जाता है। यह भला मानस कौन है?

“अगर पढ़ोगे नहीं तो कॉलेज में कैसे जाओगे?”

नौ वर्षीय बच्चे के पास कोई तैयार जवाब नहीं है। जनाब बदतमीज़ भाषण देना शुरू करते हैं। बच्चा सम्पर्क तोड़ अपनी गतिविधि फिर से शुरू कर देता है, यह सोचते हुए कि ना जाने किसने इस घटिया इन्सान को स्कूल में आने दिया है।

मैंने दर्जनों बार इस वार्तालाप के विविध संस्करण सुने हैं। पहले हम ऐसा होने पर बेहद चिढ़ जाते थे। पर अब नहीं। क्रोध की जगह अब जुगुप्सा या कन्धे उचकाने ने ले ली है।

कुछ मेहमान स्कूल में ताज़ी हवा का झोंका लाते हैं। वे बात तेज़ी से पकड़ लेते हैं, गाँठें खोल पाते हैं है और दरअसल इस अनुभव का लुत्फ लेते हैं।

कभी-कभार प्रवेश साक्षात्कार के समय कोई ऐसा इन्सान टकराता है जिसके साथ निम्नोक्त वार्तालाप होता हैः

“आपने स्कूल के बारे में पहले-पहल कब सुना?” हम पूछते हैं।

“ओह सालों पहले मैं एक मेहमान के रूप में आया था, शिक्षा की एक कक्षा के साथ जो स्कूल देखने आई थी।”

“आपको इतने समय बाद भी हम याद रहे?”

“ओह उस यात्रा के दौरान मैंने बहुत अच्छा समय गुज़ारा था। यह जगह मुझ पर हावी रही। जब मेरे बच्चे स्कूल जाने की उम्र के हुए, तो यहाँ लौटने पर मैं विवश हुआ।”

कई बार लोग स्वेच्छा से अपनी सेवाएँ देने भी आते हैं, या कार्मिक बनने की इच्छा से।

गम्भीर कार्मिक उम्मीदवारों को अधिक समय गुज़ारने के लिए आमंत्रित किया जाता है, अगरचे उन्होंने स्वयं ही यह सुझाव न रखा हो। इसके लिए एक लम्बा दौरा करना पड़ता है जो कुछ सप्ताहों या उससे भी अधिक का हो सकता है।

एक दिन से अधिक लम्बे दौरों का निर्णय स्कूल बैठक लेती है, जो उन्हें स्वीकृत करती है। सामान्यतः यह स्वीकृति रूटीन मामला होता है। जो मेहमान एक अर्से तक रहते हैं उनसे अधिकांश मामलों में स्कूल समुदाय के सदस्यों-सा बरताव किया जाता है। वे पूरी आज़ादी से सबसे सम्पर्क-संवाद करते हैं, खेलते हैं, पढ़ाते हैं, मदद करते हैं। उन्हें हमें जानने में या हमें उन्हें जान लेने में अधिक समय नहीं लगता।

कार्मिक दल का हरेक नया सदस्य इस प्रक्रिया से गुज़रता है। ज़्यादातर लोग स्कूल को इस सघनता के साथ अनुभव किए बिना ऐसी प्रतिबद्धता के बारे में सपने तक में कल्पना नहीं कर सकते।

पर ऐसा भी होता है कि कभी-कभार लम्बे समय तक रुकने के बावजूद प्रभावहीन सिद्ध हो। ऐसे में मुझे उन ब्रिटिश उपनिवेशवादियों की याद आती है जो अपने भड़कीली पोशाकों में सजे अफ्रीका के मैदानी भागों के बीच चाय पीते बैठे रहते थे। इस बात से अनभिज्ञ कि वे दरअसल कौन हैं।

"मैं अच्छा शिक्षक हूँ" ऐसे ही एक चरित्र ने मुझसे कहा। "मैं बच्चों में बेहद लोकप्रिय सिद्ध होऊँगा, जैसे हमेशा होता हूँ।" उसने बच्चों के मनोरंजन की एक विस्तृत ृंखला प्रारम्भ की, उसकी सूचना सूचनापट्ट पर नत्थी की। वह ऐसे उत्साह और उत्तेजना से भरा था जो उत्पादित की जाती है, सोचा यह जाता है कि बच्चों को यह आकर्षित करेगी। सालों से हमारे बच्चों ने ऐसे किसी बन्दे को देखा न था। कुछ के लिए तो यह पूरी तरह नया अनुभव था। परिसर में एक नई प्रजाति का अवतरण हुआ था।

पहले सत्र के लिए कुछ बच्चे आए। "मैं तुम सबको एक मज़ेदार नया खेल दिखाऊँगा।" बाल शिक्षाशास्त्री जी ने खुशमिजाज़ी से घोषणा की। बेशक यह खेल ऐसा था जिसके "शैक्षणिक" लाभ होने वाले थे, इस दृष्टान्त में गणित सम्बन्धी। हममें से कुछ कार्मिकों ने भयग्रस्त हो यह देखा कि जल्दी ही यह इन्सान हमारा साथी बनने वाला है। "ज़रूर बच्चे इस सबसे फँस जाएँगे," हमें फ्रिक हुई। "इससे कैसे निपटा जाए वह उन्हें सूझेगा ही नहीं।"

सप्ताह भर बाद वे चिढ़कर स्कूल छोड़ गए। उनको लगा कि उनके मूल्य को कोई आँक ही नहीं पा रहा है। बच्चों को यह बूझने में समय नहीं लगा कि उन्हें बेवकूफ बनाया जा रहा है। इस घटना ने बहुत पहले हमारे सबसे बड़े बच्चे के साथ हुए अनुभव की याद दिला दी। वह तब तीन साल का था। मैंने सोचा कि मैं उसे गाजर खाने को लुभा सकता हूँ। मैंने एक गाजर उठाई, "वाह," मैंने कहा, "यह तो बड़ी स्वादिष्ट है।" "मुझे गाजर पसन्द नहीं है," ~~हैं~~ उसने जवाब दिया। और बात खत्म कर दी।

हम जितना सोचते हैं उससे कहीं अधिक चतुर होते हैं बच्चे। कई मायनों में, ज़्यादातर वयस्कों से कहीं अधिक चतुर।

सडबरी वैली में स्व की भावना को विकसित करने का अवसर उन्हें मिलता है। हमारे अधिकांश छात्र नाज़ुक नहीं हैं, न तो भावनात्मक रूप से ना ही शारीरिक रूप से।

सो आगन्तुकों का स्वागत अब भी होता है, और अब हम यह चिन्ता भी नहीं करते कि हमारे रोज़मर्रा के जीवन पर उनका क्या असर होगा। कभी-कभार आए अशिष्ट मेहमानों को लौटने को कहा जाता है। जो अच्छे होते हैं, उनमें से कुछ हमेशा के लिए भी टिक जाते हैं।

35.

सबके लिए आज़ादी और न्याय के साथ

किसी भी समाज में न्याय पाना कठिन है। स्कूलों में तो यह अक्सर असम्भव ही है।

इंसान

मैं वह समय कभी नहीं भूल सकता जब मैं ग्यारह साल का था और बीजगणित की कक्षा में ऊब से उनीन्दा हो रहा था। खुद को जगाने के लिए मैंने अपने बाँहें सिर के ऊपर तानी। दुर्भाग्य से, मेरी चेतना के परे हमारे शिक्षक - जो कर्कश इन्सान थे - कक्षा पर गरज-बरस रहे थे और ठीक उसी क्षण चिल्लाकर पूछ चुके थे, “तो तुममें से चतुर सुजान भला कौन है?” मेरी ऊपर तनी बाजुओं ने मुझे स्वीकार करने वाला बना डाला। मुझे तीन दिनों तक स्कूल के बाद रुकने की सज़ा (डिटेन्शन) मिली। हममें से ज़्यादातर लोगों को कुछ ऐसे ही अनुभव हुए होंगे ~~होमे~~। मैं स्कूल में बारह वर्षों तक शिक्षकों तथा प्रशासकों की निरंकुश सत्ता से भयभीत रहा था, जिनके विरूद्ध बिरले ही अपील की जा सकती थी। हम सब ने तय किया था कि सडबरी वैली में स्थितियाँ भिन्न होंगी।

ऐसा है भी।

जब स्कूल शुरू हुआ था, किसी को पता न था कि ऐसी प्रणाली कैसे बनाई जाए जिसमें न्याय के साथ व्यवस्था कायम रखी जा सके। एकमात्र स्कूल जिसके बारे में हम यह जानते थे कि उसने इस समस्या में कुछ सफलता पाई है, वह था ए.एस. नील का समरहिल। समरहिल में वे इन विवादों को सामुदायिक बैठकों में सुलझाते थे।

सो हमने भी स्कूल बैठक में उन्हें सुलझाने की कोशिश की। घोषणाओं के बाद, हमारी कार्यसूची पर दूसरे स्थान पर था “शिकायत सत्र” जिसमें समस्याएँ निपटाई जाती थीं।

ज़ाहिर था कि सप्ताह गुज़रने के साथ शिकायत सत्र लम्बे से लम्बे होने लगे। जल्दी ही वे शेष सभी कामों पर हावी हो गए। हमने पाया ~~पाए~~ कि हम तीन और ~~ओर~~ चार घण्टों लम्बी बैठकें ~~के~~ कर रहे हैं, तब सप्ताह में दो या उससे भी अधिक बार मिल रहे हैं। ज़्यादातर समय हमें इस छात्र ने क्या किया, या उन बच्चों ने क्या किया होगा या उस व्यक्ति ने क्या करने को कहा था कि अनन्त शिकायतें सुनने में बिताना पड़ता था।

समय की बरबादी से अधिक बुरा था कुण्ठा का एहसास। हम कोशिश करते थे कि हम न्यायपूर्ण हों, पर क्या हम इसमें सफल हो भी रहे थे? शिकायत सत्रों में आरोप व प्रत्यारोप होते, अक्सर आवेगपूर्ण और हमेशा वर्णनात्मक। हमें बिरले ही यह महसूस होता कि हम मसले की जड़ तक पहुँच रहे हैं। जब तक कि हम उस पर भारी समय न जाया करते। स्थिति अपने चरम पर तब पहुँची जब प्रथम वर्ष की पतझड़ में स्कूल अग्निपरीक्षा से गुज़रा। तीन दिन तक चले शिकायत सत्र से समस्या सुलट सकी।

कुछ करना ज़रूरी था। हम कुछ समय से आगे बढ़ने का कोई सुराग तलाश रहे थे। पर कोई भी सन्तोषप्रद आदर्श हमारे सामने नहीं था।

अन्ततः हमें समझ आया कि हमारी समस्या ठीक वैसी है जैसी किसी भी समुदाय की होती है। और समुदाय ने समाधान तलाशने में हज़ारों साल और अकूत समय और शक्ति खर्च की है। सदियों से विभिन्न संस्कृतियों ने ऐसी न्याय व्यवस्थाएँ विकसित की हैं जिससे शिकायतों का न्यायपूर्ण निपटारा किया जा सके।

हमने अपनी राष्ट्रीय परम्परा को करीब से देखा और उसकी प्रमुख विशेषताओं का अध्ययन किया। कुछ ही समय में हमने स्कूल की न्याय प्रणाली के तत्व एकत्रित कर लिए।

संक्षेप में इसके तत्व काफी सरल ~~है~~ हैः सभी आरोपों की पूरी और निष्पक्ष जाँच होगी, जिसमें प्रत्येक में यह तय किया जाएगा कि कौन-सा नियम तथाकथित रूप से तोड़ा गया ~~हैं~~ है, समस्तरीय लोगों की ज्यूरी के समक्ष न्यायपूर्ण सुनवाई होगी, जिसमें अभियुक्त के अधिकारों की रक्षा सुनिश्चित की जाएगी और प्रमाणों के नियमों का ध्यान रखा जाएगा, साथ ही न्यायपूर्ण दण्ड व्यवस्था होगी। इस सब में, हमारे देश में प्रत्येक वयस्क नागरिक को दिए गए व्यक्तिगत अधिकारों की रक्षा भी सुनिश्चित की जाएगी, हालाँकि सर्वोच्च न्यायालय ने यह कहा है कि संयुक्त राज्य अमरीका के संविधान के ये अधिकार नाबालिगों पर लागू नहीं होते।

यह न्याय व्यवस्था हमारे पहले वर्ष की सर्दियों के प्रारम्भ में बनाई गई थी। यह पूरी तरह स्कूल बैठक के निरीक्षण में है। समय के साथ इसमें बदलाव व समायोजन किया गया है पर इसकी बुनियादी रूपरेखा स्थिर रही है।

सडबरी वैली की न्याय व्यवस्था हमारे लिए गर्व और आनन्द का विषय है। यह सुचारू रूप से चलती है और साल में सौ से अधिक शिकायतों का निपटारा करती है कभी-कभार तो सप्ताह में दस या बीस का। बिना किसी व्यवधान के साल-दर-साल। इसके न्यायपूर्ण होने को लेकर स्कूल समुदाय के किसी भी सदस्य ने आलोचना नहीं की है। ~~हैं।~~

इस व्यवस्था का हृदय है वह समूह जो जाँच करता है। इसे न्याय समिति (ज्युडिशियल कमिटी) या संक्षेप में जे.सी. कहा जाता है। इसमें सभी आयु के बच्चे जुड़े होते हैं, जिनके नाम लॉटरी से निकाले जाते ~~है~~ हैं और प्रत्येक बैठक ~~के~~ में किसी एक कार्मिक को भी चुना जाता है। ~~हैं।~~ समिति की अध्यक्षता न्याय क्लर्क करता है जिसे स्कूल बैठक द्वारा वर्ष में चार बार चुना जाता है।

जे.सी. की बैठक सप्ताह में कई बार होती है। इसका काम उस शिकायत पर प्रारम्भ होता ~~हैं~~ है जो किसी के द्वारा लिखी जाती है कि किसी ने कोई नियम तोड़ा है।

हर सम्भव तरीके से जे.सी. शिकायत को जाँचती है। वह गवाहों को तलब करती है, विरोधाभासी बयानों को सम्भालती ~~हैं,~~ है, जब तक उसे क्या घटा था उसका सबसे सही रूप न मिल जाए।

क्योंकि सभी इस प्रक्रिया का हिस्सा होते हैं, सडबरी वैली में न्याय सबका होता है। इसके व्यावहारिक नतीजे होते हैं जिन्हें ~~म्स~~ हर दिन देखा जा सकता है। लोग जे.सी. के समक्ष जानबूझकर बिरले ही झूठ बोलते हैं, हालाँकि जो घटा उसका वे भिन्न-भिन्न रूप रखते हैं। ज़्यादातर सभी सहयोग देते हैं।

सबसे रोचक बात यह है कि बच्चों ने समाज की आवश्यकताओं और व्यक्तिगत मामलों में अन्तर करना सीखा है। सभी यह जानते हैं कि संस्था के रूप में काम करने के लिए स्कूल, स्कूल बैठक द्वारा पारित नियमों की अनुपालना पर निर्भर हैं। यह उसका कामकाजी पक्ष है। इसका मतलब है कि प्रत्येक व्यक्ति को कानून करने में मदद करनी होगी, न्यायपूर्ण ~~फेसला~~ फैसला करना होगा, ईमानदार बयान देने होंगे, उस मामले तक में जिसमें कोई दोस्त लिप्त हो। जब आधिकारिक न्याय प्रक्रिया समाप्त हो जाती है, तब व्यक्तिगत पक्ष हावी हो जाता है। दोस्तियाँ पूर्ववत बनी रहती हैं, बिना व्यवधान के।

मैंने अनेकानेक बार घनिष्ठ दोस्तों को किसी ~~जैसी~~ जे.सी. मामले में कटुता से भिड़ते देखा है, पर सत्र से निकल साथ-साथ खेलते या काम करते देखा है, मानो कुछ भी घटा ही न हो। नए छात्रों के लिए, खास कर जो अन्य स्कूलों से तबादले के बाद आए हों सडबरी वैली के इस पक्ष को स्वीकारना सबसे कठिन होता है। उन्हें "हम बनाम वे" की वृत्ति की आदत पड़ चुकी होती है, जहाँ जो भी साथी छात्र के विरूद्ध गवाही देता है उसे "विश्वासघाती" माना जाता है। नए बच्चों को इस स्थिति से समझौता करने में समय लगता है, पर अन्त में लगभग सभी यह कर पाते हैं। दूसरा कुछ हो भी नहीं सकता।

~~जैसी~~ जे.सी. के लिए शिकायत लिखने को स्कूली बोली में "किसको ऊपर लाना" कहा जाता है। हममें से किसी को याद नहीं कि यह जुमला कैसे पैदा हुआ, हालाँकि इस बारे में कई सिद्धान्त हैं। कुछ लोग सोचते हैं कि यह उन दिनों में गढ़ा गया होगा जब जे.सी. की बैठक दूसरी मंजिल में हुआ करती थी, और उसके सामने पेश होने के लिए लोगों को ऊपर ले जाया जाता था।

कुछ समय पहले एक पाँच वर्षीय बच्चे ने दूसरे से जो स्कूल में नया आया था कहा, "अगर यह करना बन्द नहीं करोगे तो मुझे तुम्हें ऊपर ले जाना होगा।" "तो मैं फौरन नीचे चला आऊँगा," उसने जवाब दिया।

जो लिख नहीं पाते उन्हें अपनी शिकायत लिखवाने के लिए एक अक्षरनवीस को जुगाड़ना पड़ता है जो सुनकर लिख सके, यह प्रथा दुनिया में समाप्त नहीं हुई है। अमूमन बड़े छात्र मदद करते हैं, पर इस सेवा के लिए हमेशा ही कार्मिक भी उपलब्ध होते हैं।

कभी-कभार ~~च~~ कोई न्याय उपकरण का दुरूपयोग व्यक्तिगत मकसद से करने की कोशिश भी करता है। ऐसा वे किसी के विरूद्ध कई शिकायतें दर्ज करवा कर करते हैं - इसे उत्पीड़न कहा जाता है। जे.सी. को यह भाँपने में ज़्यादा वक्त नहीं लगता। कोई छात्र अगर बार-बार ऊपर लाया जाए तो इसके दो ही कारण हो सकते हैं। या तो वह छात्र भारी शैतान है या उसे परेशान किया जा रहा हैं। जे.सी. अपने साथियों को परेशान करने वालों से दृढ़ता से निपटती है।

कई बार बच्चे भावना की गर्मी में तब शिकायत दर्ज कर देते हैं जब कोई बहस हो जाए या कोई तनाव पूर्ण खेल के बाद। पर जब तक जाँच शुरू होती है सबके मिजाज़ ठण्डे हो जाते हैं। तब जे.सी. मामले में मध्यस्थता करती है हैं या उसे खारिज भी कर देती है। अक्सर लोग शिकायत लिखना पूरा होने के पहले ही ठण्डा जाते हैं। मैंने हाल में ऐसे ही एक सत्र को दर्ज किया था जो कतई असाधारण नहीं हैः

“जब तुम छोटे थे...”

एक सच्ची कहानी

“क्या आप एक शिकायत लिखने में हमारी मदद करेंगे?” मैं दफ्तर के बाहर काउच पर बैठे, अपने दिवास्वप्न से चौंक कर जागा। मेरे सामने मुझे कुछ झिझक से घूरते एवरी (आयु 8) व शैरान (7) खड़े थे। “शायद हमें मार्ज को ढूँढ लेना चाहिए।”

मैंने पल भर उन्हें देखा। “किस लिए?” मैंने पूछा। “स्किप (13) और माइकल (8) शान्त कक्ष में हमारी गतिविधि में खलल डाल रहे हैं,” जवाब मिला। यह सोचते कि शायद मुझे उनके विरूद्ध शिकायत दर्ज करनी चाहिए कि वे शान्त कक्ष में गतिविधियाँ कर रहे हैं, मैंने जवाब दिया। “बेशक,” और हम खाली दफ्तर में चले आए।

दोपहर के डेढ़ बजे थे। लगभग सभी कार्मिक नव सज्जित स्टीरियो कक्ष में बन्द थे जहाँ वे ग्यारह बजे से छात्रों के साथ कक्ष के भावी उपयोग पर निर्णय कर रहे थे। उनकी तुलना में मेरा काम अदना सा था। फिर भी मैं कार्यालय की मेज़ पर, कलम थामकर बैठा और मैंने यथासम्भव अधिकारिक लगने की कोशिश की। एवरी मेरी दाहिनी ओर पास ही खड़ा था और शैरॉन बाँई ओर से मेज़ पर झुकी थी। दोनों मेरी हरेक हरकत ~~को,~~ को, मेरे द्वारा लिखे प्रत्येक शब्द को, ध्यान से देख रहे थे। यह गम्भीर मामला था।

सामने शिकायत प्रपत्र रख मैं एवरी की ओर मुड़ा और बोला, “शुरू से बताओ। बिलकुल शुरू से।”

“शायद मुझे उन्हें गालियाँ नहीं देनी चाहिए थी,” एवरी ने कुछ चिन्तित हो कहा। “शायद वह गलती थी।”

“शुरू से बताओ। हुआ क्या?”

“जिम (8) और ~~में~~ मैं ओसारे में अकेले खेल रहे थे। स्किप और माइकल आए और डेनिस (12) को छेड़ने लगे।”

“डेनिस भी वहाँ था?” मैंने जानना चाहा।

“वह अन्दर आया। तब वे आए। मैंने डेनिस को बचाने के लिए उन्हें गालियाँ दीं। मैंने उसकी मदद करने के लिए ऐसा किया।”

यह सोचते हुए कि भला डेनिस को एवरी के बचाव की ज़रूरत क्यों हुई, मैंने उससे कहानी जारी रखने को कहा।

“तब उन्होंने हमारा पीछा किया। स्किप ने मोटी टोपी ले ली और हम औसरे से बाहर भागे। डेनियल (7), जिम और में ~~बच~~ बच ~~लि~~ निकले।”

“डेनियल भी वहाँ था?” मैंने कहानी को एक बार फिर से लिखते हुए पूछा। “डेनिस। माइकल और स्किप ने हमारा पीछा किया। मैं बच निकला और मेरी टोपी छीन ली, तब स्किप ने मुझे उठा लिया और मुझे घसीट लिया, पर हम सब बच निकले।”

“एक मिनट,” मैंने टोका, क्योंकि जो कुछ हुआ उसकी समझ फिसलती लगी। “डेनिस भी तुम्हारा पीछा क्यों कर रहा था? अगर तुम उसका बचाव कर रहे थे, तो?

“मुझे पता नहीं,” एवरी ने मुस्कुराते हुए जवाब दिया। अब उत्तेजक वर्णन के कारण शब्द` झरे जा रहे थे। “उसकी आँखें

चमक रही थीं। उसे रोका नहीं जा सकता था।"

"तब हमने मुख्य भवन की ओर भागने की कोशिश की और उन्होंने जिम को खेल अलमारी में बन्द कर दिया और डेनियल दौड़ा और उसने मुझे बताया और मैंने जिम को बचाया। मैंने यो ढोंग किया मानो मैं उसे बन्द करने में उनकी मदद कर रहा हूँ, पर मैंने असल में ऐसा नहीं किया और वह भाग निकला और मैं अन्दर हो गया पर मैं निकल गया।

इस पल एक प्रसन्न और शान्त जिम दफ्तर में घुसा और शेरॉन के पास खड़ा हो गया। मुझे वह कतई ऐसा व्यक्ति नहीं लगा जो कष्टदायक अनुभव से गुज़रा हो।

पर एवरी अपनी रौ में था। मैं उसकी ओर मुड़ा और पूछा "क्या तुम्हें मज़ा आया?" वह खिलखिला कर हँसा। "हाँ," उसने कहा। "और तुम्हें?" मैंने जिम से पूछा। "हाँ। मैं कोई शिकायत नहीं लिखना चाहता।"

"पर उन्होंने हमारी गतिविधि में रूकावट डाली थी," एवरी ने विरोध किया।

"कौन-सी गतिविधि?" मैंने पूछा।

"मैजिक शो।"

मैंने उस दिन किसी जादू के खेल की बात सुनी ही नहीं थी। यह जानते हुए कि मैं खुद को फँसा रहा हूँ, मैंने भोलेपन से पूछा "कौन-सा जादू का खेल?"

"शैरॉन और सिंडी (7) का," एवरी ने जवाब दिया।

इस बीच एक प्रसन्नचित्त डेनियल भी आ चुका था। शैरॉन जो पूरे समय चुप पर चौकन्नी थी, उसका नाम सुन चटक हो गई। "हमने उन्हें लतिया कर कमरे से निकालने की कोशिश की, पर वे जाते ही नहीं थे," उसने उत्तेजना से भर कहा। "तब हमने उन्हें धक्का दिया।" "और मैंने उन्हें भगाने की कोशिश की" एवरी ने सुर मिलाया। डेनियल मुस्कुरा रहा था। जिम संजीदा था।

"क्या मैं शिकायत फाड़ सकता हूँ?" जिम ने पूछा। शैरॉन ने खींसे निपोरी। डेनियल मुस्कुराया। मैंने एवरी से पूछा, "शिकायत बनी रहे तो क्या होगा?"

"वे ऐसा करना बन्द कर देंगे," उसने स्कूल की न्याय व्यवस्था के प्रभावकारी होने पर आस्था जताते कहा।

"क्या तुम चाहते हो कि कर दें?" मैंने पूछा।

"नहीं," उसने हँसते हुए कहा।

जिम ने शिकायत फाड़ी। सब सन्तुष्ट थे। तब बाहर निकलने की तैयारी करते हुए एवरी मेरी ओर चौड़ी मुस्कान के साथ **मुड़ा और उसने** मुझसे पूछा, "जब आप छोटे थे, तो क्या आपने भी ऐसे कारनामें किए थे?"

जब से न्याय व्यवस्था स्थापित हुई है, केवल एक ही छात्र को खराब आचरण के लिए स्कूल बैठक द्वारा स्कूल से निकाला गया है। व्यवस्था की सफलता के विषय में कोई दूसरा आँकड़ा इतनी प्रभावी गवाही नहीं देता। सच यह है कि सडबरी वैली में सबको न्याय मिलता है। कोई सत्ता से डरता नहीं, किसी को वयस्कों से या शिक्षकों का या किसी दूसरे का भय नहीं होता। लोग स्कूल समुदाय के समस्तरीय सदस्य की तरह एक-दूसरे की आँखों में झाँक सकते हैं। सबको यह विश्वास है कि यहाँ आज़ादी ऐसी न्याय व्यवस्था द्वारा सुरक्षित है जो आयु, लिंग या पद के प्रति अन्धी है। कोई भी दूसरी चीज़ ~~मुझे~~ स्कूल से सम्बन्धित होने पर मुझे इतना गर्वित नहीं करती।

36

मसले का मर्म

जब सब कहा और कर दिया जाए, जब सारे शब्द पढ़ लिए जाएँ और चित्रों का अध्ययन कर लिया जाए, एक सवाल तब भी बना रहता हैः सडबरी वैली दरअसल कैसा है? वह लगता कैसा है? वहाँ होता क्या है?

पहली नज़र में यों ही देखने वाले तक को कई बातें नज़र आती हैं। हर ओर यहाँ बच्चे हैं। यही उस "सतत मध्यावकाश की छवि बनाता है, जिसके बारे में हम अक्सर सुना करते हैं। बच्चे मुक्त, सक्रिय शोरगुल करने वाले और जीवन्त हैं।

यहाँ की स्थितियाँ इन छवियों को और पुष्ट करती हैं। स्कूल एक पुरानी सम्पत्ति के परिसर में स्थित है जो गृहयुद्ध के समय में बनाया गया था। यहाँ के अधिकतर निर्माण मूल अवस्था में हैं। दीवारें ग्रैनाइट की हैं, जो सेलम एंड रोड पर स्थित स्थानीय फ्रेमिन्थम खान से निकाले गए थे। यह खान कब की बन्द हो चुकी है। इस इलाके में ग्रैनाइट के भवन बिरले हैं, और यह असाधारण मज़बूती की छाप छोड़ती है - यह छाप स्कूल की आत्मा में अन्दर तक समाई लगती है। पसरे मैदान, पेड़, झाड़ियाँ, जंगली फूल, तालाब, बाँध, और चक्की भवन, ओसारा और अस्तबल - सभी ग्राम्य सौन्दर्य में अपना योगदान देते हैं। आखिर फार्मिन्घम, एक व्यस्त कस्बा है, जहाँ भारी उद्योग, व्यापार और विशाल शॉपिंग मॉल, आवासीय परियोजनाएँ, राज्य मार्ग, चुंगी नाके हैं - शहरी और अर्धशहरी जीवन के सभी लक्षण। यह वास्तविकता स्कूल पर छाई रहती है, उसे घेरती है; पर स्वयं स्कूल कस्बे के उस कोने में बसा है जिसे प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द लेने के लिए सावधानी से सुरक्षित रखा गया है। स्कूल परिसर से सटा एक राजकीय पार्क है और स्थाई न्यास द्वारा संरक्षित विशाल भूखण्ड भी, ये स्कूल के निदित प्राकृतिक सौन्दर्य में योगदान देते हैं।

पर हम इंग्लैंड के किसी महल या न्यूपोर्ट के विशाल भवन में नहीं हैं। हमारा माहौल प्रदर्शित भारी धन-सम्पत्ति का नहीं है। जिसे ऊपरी तबके की भव्यता को बनाए रखने के लिए सावधानी से संरक्षित किया गया हो। नैथेनियल बाउडिच, मैसाच्यूसैट्स का प्रसिद्ध नाविक, जिसकी मेज़ें और मार्गदर्शिकाएँ आज तक नाविक कथाओं का हिस्सा हैं, रोज़मर्रा की दुनिया का व्यक्ति था। उससे यह भू-सम्पत्ति एक खेत थी, किसी कुलीन का आश्रय स्थल नहीं। यह जगह अच्छे से बुढ़ाई है, पर एक साधारण मज़दूर की तरह न कि किसी राजकुमार की तरह। टूट-फूट के अपरिहार्य लक्षण यहाँ नज़र आते हैंः दीवारों और छत पर दरारें, टाइलें घिस चुकी हैं - ये ऐसी चीज़ें हैं जो अच्छे रख-रखाव से बचाई नहीं जा सकतीं, जैसे बूढ़ी चमड़ी की झुर्रियाँ क्रीमों और लेपों से बच नहीं पाते। भवन ससम्मान बूढ़ा हुआ है, फिर भी बुढ़ाया तो है ही, और उसका ~~को~~ वातावरण उपयोग का, वास्तविक दुनिया में रहने वाले वास्तविक लोगों के रहने का हैं।

इस प्रभाव को बढ़ाती है इसकी साज-सज्जा, जो बिलकुल बुनियादी और घरेलू-सी हैः मेज़ें, कुर्सियाँ, काउचें, हत्थेदार कुर्सियाँ, जिनकी उम्मीद किसी घर से रखी जाती है। और सब कुछ ऐसा है जो इस्तेमाल में लाया गया नज़र आता है, इसलिए भी क्योंकि उसे या तो इस्तेमाल के बाद खरीदा गया है या किसी के द्वारा हमें दिया गया है, अतः यह भी इन्सानी उपयोग के संकेत देता है। इसके फलस्वरूप, यहाँ की भौतिक स्थितियाँ हममें से उन लोगों में दो भिन्न पर परस्पर पूरक भावनाएँ जगाती हैं, जो यहाँ समय गुज़ार चुके हैंः सहजता, क्योंकि हम हमारे परिवेश के उपयोग को लेकर पूर्णतः सहज हैं। क्योंकि उनका उपयोग रोज़मर्रा की चीज़ों की तरह होता है जो वे हैं भी, और सावधानी, क्योंकि हम समझते हैं कि इन चीज़ों का मज़ा हम तब ही ले सकता हैं जब उनका उपयोग सावधानी से करें।

सहजता और सावधानी, सडबरी वैली के मानक हैं। यहाँ लोग सहज हैं, नाराज़, तनावग्रस्त या चिन्तित नहीं। उनकी भृकुटियाँ तनी नहीं, सपाट होती हैं आँखें धूमिल नहीं, साफ चमकती हैं। बिरले ही लोग आँखे चुराते हैं। और सबकी दूसरों की परवाह होती है - अपने दोस्तों की, सहपाठियों की, कार्मिकों की, माता-पिता की, मेहमानों की। ज़िम्मेदारी किसी की भी क्यों न हो, जरूरत पड़ने पर सब मदद को आगे आते हैं। उन्हें स्कूल की परवाह है, उसे जीवित और कार्यरत रखने की, उसकी आवश्यकताएँ पूरी करने में वे सहायता करना चाहते हैं।

जो भी स्कूल के सम्पर्क में आता है इन भावनाओं से अनभिज्ञ नहीं रहता। वे हर ओर व्याप्त हैं और फौरन नज़र आती हैं।

सब कुछ पर निलम्बित समय का भाव मँडराता है। लोग व्यस्तता से आते-जाते दिखते हैं पर कोई ताबड़तोड़ जल्दी में नहीं होता। घड़ियाँ कम हैं, गुज़रते घण्टों का एहसास करवाने वाला कुछ नहीं है।

लोग मर्ज़ी के हिसाब से आते-जाते हैं, जल्दी या देर से। अगर स्कूल में आने के समय वहाँ कोई न होता हो तो उन्हें स्कूल की चाभी मिल जाती हैं, उस खज़ाने की चाभी, जो यह स्थान उनके लिए बन चुका है। कोई भी यह सोचने को रुकता नहीं कि प्रत्येक चाभी किस प्रकार के भरोसे का प्रतीक है।

विश्वास/भरोसा भी चारों ओर है और हर जगह नज़र आता है। सबकी चीज़ें बिना चौकीदारी रहती हैं, दरवाज़ों पर ताले नहीं लगते, सभी उपकरण असंरक्षित व सबके लिए उपलब्ध होते हैं। कैसी पागल जगह है हमारी सडबरी वैली। खुले प्रवेश – कोई भी दाखिल हो सकता है। और दहलीज पार करते ही उस ऊष्मा और विश्वास का तत्काल हिस्सा बन सकता है, जो स्कूल है।

स्कूल कई मायनों में एक समुदाय है बावजूद इस तथ्य के कि यह आवासीय स्कूल नहीं है, न ही किसी घनिष्ठ समूह का उत्पाद। दूर-दराज़ से आए सदस्य अजनबी की तरह आते हैं। वे मित्रों की तरह ठहरते हैं। क्रमशः अपनी गति से बिना हमारे या माता-पिता द्वारा उकसाए या प्रोत्साहित किए एक-दूसरे से परिचित होते हैं और दोस्तियाँ बनती हैं। बच्चे स्कूल के परे भी एक-दूसरे का साथ तलाशते हैं, ऐसे रिश्ते गढ़ते हैं जो कई के लिए जीवन भर कायम रहेंगे।

स्कूल काफी कुछ गाँव की तरह है - पूर्व का और भावी गाँव। यहाँ सम्बन्ध स्वतंत्रता से बनाए जाते हैं, सभी गतिवान हैं, पर जड़ें गहरी हैं, जो तब तक पोसती हैं, जब तक हम जिन्दा रहें। हमारे स्नातक, पाँच, दस, पन्द्रह साल बाद लौटते हैं हमेशा सहजता से, हमेशा गरमागरम स्वागत के बीच। वे हमारा हिस्सा बने रहने की उम्मीद रखते हैं, और वे ऐसा सोचेंगे यही उम्मीद हमारी होती है। इसमें कुछ भी अटपटा या विचित्र नहीं होता।

स्कूल के आवासियों की सामूहिक चेतना में भूत, वर्तमान और भविष्य साथ-साथ पिघलकर धुलमिल जाता है। बच्चे पूर्व छात्रों के कारनामों के किस्से सुनते हैं और एक दिन वह नायक मिलने आता है और सीधे उनके दिलों में घुस जाता है। "आप फलाँ-फलाँ दो ना, जिसके बारे में मार्ज ने हमें इतनी कहानियाँ सुनाई हैं?" वे साथ बैठ पुरानी स्मृतियों के बदले वर्तमान के किस्से सुनते हैं और तब लौट जाते हैं, नैसर्गिक धारा में मुक्त रूप से बहते हुए। इसके बावजूद स्कूल का हिस्सा बनने के लिए किसी व्यक्ति में कोई बुनियादी बदलाव की दरकार नहीं पड़ती। स्कूल किसी प्रकार की स्वामिभक्ति की माँग नहीं करता। उनसे किसी प्रकार की अनुपालना नहीं चाही जाती, सार्वजनिक आवश्यकताओं के नाम पर किसी निजी सपने का समर्पण नहीं चाहा जाता। सडबरी वैली इस बात का ज़िन्दा प्रमाण है कि मुक्त लोग, जब स्वेच्छा से मिलें और उन्हें अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को हासिल करने का मौका दिया जाए, अपने सहकर्मियों का सहयोग और सम्मान मिले तो वे ऐसे रिश्ते, ऐसी प्रतिबद्धताएँ और मित्रताएँ बनाएँगे जो बेहद मज़बूत हों। नुस्खा बड़ा आसान है, एक भाग आज़ादी, एक भाग सम्मान, एक भाग ज़िम्मेदारी, एक भाग सहयोग, सबको मिलाकर रखो और तैयार होने तक पड़ा रहने दो। कोई भी रसोइया इसी सफलता से इसकी नकल कर सकता है।

क्या आपको स्कूल का बेहतर एहसास अब हो सका है?

उपसंहार

खीर का प्रमाण

सबके लिए आखिकार वह समय आता है जब वे सडबरी वैली छोड़ अपने बलबूते दुनिया में निकलते हैं। उनके जीवन में बाद में जो कुछ घटता है क्या उससे उनके स्कूली शिक्षण की असरकारिता का कुछ संकेत भी मिलता है?

कई छात्र चाहते हैं कि जब वे अन्ततः जाएँ तब उनके हाथ में हाई स्कूल का प्रमाणपत्र हो। स्कूल खुलने के बाद हमें साल भर से अधिक यह तय करने में लगा कि यह डिप्लोमा दिया कैसे जाए।

हम साधारण मानदण्डों पर डिप्लोमा को आधारित नहीं कर सकते थे ग्रेड, पाठ्यक्रम, अंकों तथा सफल स्कूली काम

में बिताए वर्ष। इस प्रकार की उपलब्धियों की यहाँ माँग ही नहीं की जाती। न स्कूल, ना ही इसके छात्र इनके किसी खास समूह को मूल्यवान समझते थे।

डिप्लोमा की अवधारणा ही हमें अपने आदर्शों के विरूद्ध लगती थी। डिप्लोमा दरअसल स्कूल द्वारा दिया गया आधिकारिक प्रमाणन ही तो हैः तो फिर क्या यह एक तरह का मूल्यांकन नहीं है, जिससे हम बचना चाहते हैं?

आखिरकार हमें एक सन्तोषजनक समाधान मिल ही गया। इसका केन्द्रीय विचार सीधा-सादा थाः हमारा मुख्य लक्ष्य था बाहर दुनिया में ऐसे छात्र भेजना जो एक मुक्त समाज में जीवन की चुनौतियों से पूरी ज़िम्मेदारी से निपट सकें। डिप्लोमा प्रदान करने के लिए हमने इसी लक्ष्य को संस्थागत रूप दिया।

स्नातक होने का औपचारिक प्रमाणपत्र चाहने वाले छात्रों को स्कूल समुदाय के सामने खड़े होकर अपने इस वाद-आधार (थीसिस) का बचाव करना पड़ता है कि व्यापक समुदाय में ज़िम्मेदार नागरिक बनने के लिए तैयार हैं। उन्हें ऐसी प्रस्तुति करनी पड़ती है जो सूझबूझ भर हो और उनकी पीढ़ी के लोगों और सहकर्मियों को वाज़िब लगे। यह वे कैसे करें यह उन पर छोड़ा जाता है; अपने विचारों को स्पष्ट करने के लिए वे जैसी मदद चाहें माँग सकते हैं।

स्कूल को अपने अनुमोदन का मत देना पड़ता है। क्या यह भी किसी प्रकार का मूल्यांकन है? बेशक है। पर ऐसा मूल्यांकन है जिसकी छात्र ने स्वयं साफ-साफ माँग की है, तथा उस क्षेत्र से सम्बन्धित है जिससे निपटने की इच्छा हम रखते हैं।

डिप्लोमा कठिन है। पहली कुछ प्रक्रियाओं से गुज़रने के बाद कई कार्मिकों ने एक-दूसरे से कहा, "मुझे खुशी है कि मुझे इससे गुज़रने की ज़रूरत नहीं है।" कुछ छात्रों ने इस चुनौती को अपने लिए तब चुना जब वे महज सोलह साल के थे, पर अधिकतर सत्रह या अठारह वर्ष के छात्र ही इसकी चेष्टा करते हैं। इतने सालों में केवल एक ही व्यक्ति ने सबको छका डिप्लोमा पाने की कोशिश की थी। पर स्कूल उसके छल को भाँप सका और उसे बिना डिप्लोमा ही निकलना पड़ा। घटना के दस वर्ष बाद उसने हमें धन्यवाद दिया कि हमने उसे स्वयं को छलने में सफल नहीं होने दिया था।

कई छात्र बिना डिप्लोमा के ही दुनिया में निकल पड़ते हैं। हमें इससे कोई फर्क नहीं पड़ता। जो महत्वपूर्ण है वह यह कि स्कूल में बिताए समय ने उनके आन्तरिक संसाधनों को इतना सम्पन्न बना दिया है कि सार्थक जीवन जी पाने की उनकी तैयारी पूर्ण हो गई है।

खैर, अब तक अपने पूर्व छात्रों के कारण स्कूल का खासा रिकॉर्ड भी है।

इनमें से कई कॉलेजों में और उच्चतर प्रशिक्षण के लिए जा चुके हैं। एक भी ऐसा छात्र नहीं है जो किसी कॉलेज में दाखिला चाहता हो पर पाने में सफल रहा हो। अधिकांश को अपनी प्राथमिकता सूची के पहले स्थान वाले कॉलेज में ही प्रवेश मिला है। जैसा हमने सोचा था, ठीक उसी के अनुरूप, उनकी अपरम्परागत शिक्षा दीक्षा कॉलेज प्रवेश अधिकारियों की दृष्टि में उनके लिए ज़िम्मेदारी नहीं बल्कि एक पूँजी सिद्ध हुई है। यह बात छात्र के पास डिप्लोमा हो या न ही, दोनों ही स्थितियों में लागू रही है।

अन्य छात्र स्कूल से निकल सीधे किसी धन्धे में घुसे हैं। वे विविध प्रकार के काम कर रहे हैंः वे प्रशासक, मैकेनिक, संगीतकार, शिल्पकार, विक्रेता, तकनीकविद, डिज़ाइनर आदि हैं। जिन लोगों ने अध्ययन जारी रखा वे भी कई तरह के पेशों में घुसे हैं। हमें कुछ भी आश्चर्यचकित नहीं करता।

उस समय बड़ा सन्तोष होता है जब अपने किसी स्नातक को जिसकी विशेषता भू-परिदृश्य हो, बुला हमारे घरों या स्कूल के लिए काम करने को आमंत्रित किया जाए। या जो स्नातक वेध-चिकित्सक हो उससे उपचार का समय लिया जाए। शायद जल्दी ही हममें से किसी एक को मृतक संस्कार विशेषज्ञ की ज़रूरत भी पड़े।

स्कूल की विरासत की एक खासियत है पूर्व छात्रों में अपने जीवन में बढ़ने के बावजूद अहंकार की नामौजूदगी। स्कूल ने हमेशा सायास किसी भी काम को ऊँचा या नीचा होने का आभास नहीं दिया है। यहाँ कोई "पथ" नहीं है, कोई नहीं है जो कहे कि कॉलेज अध्ययन की तैयारी सर्वश्रेष्ठ है, कि किसी धन्धे का प्रशिक्षण उससे एक पायदान नीचे है, या

व्यावसायिक प्रशिक्षण केवल बुद्धुओं के लिए है। स्कूल में सब कुछ हमारे इस विश्वास का एहसास करवाता है कि कोई भी मानवीय रुचि सार्थक प्रयास, फिर चाहे इसलिए ही क्यों नहीं कि उसे स्वतंत्रता से चुना गया है। और सच्ची आन्तरिक इच्छा से उसे अपनाया गया है। हम जो अन्तर करते हैं वह सतही रुचि और गहन रुचियों में है, "सार्थक" और "निरर्थक" के बीच नहीं।

इसके परिणाम स्वरूप स्कूल में सभी सामंजस्यपूर्ण वातावरण में साथ जीते हैं, फिर चाहे वे कुछ भी क्यों न करते हों। और यह नज़रिया हमारे छात्रों के साथ आजीवन रहता है, उन्हें दूसरों के साथ सहज बनाता है, फिर चाहे उन्होंने अपने लिए कोई भी पथ क्यों न चुना हो।

हमारे पूर्व छात्रों पर कई अध्ययन किए गए हैं, और समय गुज़रने पर और भी किए जाएँगे। ये अध्ययन बताते हैं कि हमारे पूर्व छात्र, मोटे तौर पर स्वतंत्र, समेकित व्यक्ति हैं जिनमें स्व का एहसास हो जो उन्हें जीवन में लक्ष्य प्रदान करता है।

पर जो साझा सूत्र उन सबको जोड़ता है वह यह एहसास है कि उनके विकास के वर्ष उनसे छीने नहीं गए थे। सडबरी वैली में वे अपने बचपन को उतनी देर तक बरकरार रख सके थे जितनी देर तक उन्होंने उसे रखना चाहा था, उन्होंने अपने बचपन को उन अद्‌भुत नमूनों में बुना, जो केवल बच्चे ही रच सकते हैं। हमने उन्हें जो सबसे बड़ी सौगात दी, वह थी कि हमने उन्हें अकेले छोड़ा। जो सच में उनका था उसे न चुराने के कारण हमने प्रत्येक के लिए उससे कहीं अधिक किया, जो "मददगार" लोगों की पूरी फौज भी नहीं कर सकती थी।

जिन बड़ों ने अपना यौवन हमारे साथ बिताया उनके लिए यही हमारी विरासत है।

टिप्पणी

सम्बन्धित लोगों की निजता सुरक्षित रखने के लिए, सडबरी वैली के सभी छात्रों के जो नाम पुस्तक में उल्लिखित हैं, उन्हें बदल दिया गया है।